

A vibrant, painterly illustration of a rural scene. In the foreground, a white cow with large black spots is grazing. To its left, a white horse with a dark mane is also grazing. The background is filled with lush green trees and bushes, some with bright red and yellow flowers. The sky is a clear, bright blue with a few white clouds. The overall style is expressive and colorful.

Biharee Baabu

Lock Summer

Biharee Baabu

Lock Sohodeb (Sashi)

Copy rights reserved by Lock Deo Sohodeb (Sashi)

Email address: lockdeo@hotmail.co.uk (2012)

All rights reserved. No part of the publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or in any form or by any means, without the prior permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than in which it is

published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

Disclaimer

All the names and characters in this book are fictitious and have no resemblance to any person dead or alive. While some of the names, places and sceneries of the countries are real they have only been used for the purpose of setting up scenarios to enhance the story.

‘इस कहानी के सभी पात्र कल्पनिक बा और किसी भी व्यक्ति पर आधारित न बा...’

‘Is kahani ke sabhi pathr kalpnik ba aur kisibhi vyakthi par aDHarith na ba...’

This book is **sponsored** by the Ministry of Arts and Culture – Government of Mauritius

Printed by

Masters Continuous Stationery Ltd.

St. Vincent de Paul Ave. Les Pailles, Republic of Mauritius

Tel : (230) 212 8932

ISBN 99903-

Lock Sohodeb, jo Sashi naam se bhi duniya me prasidh havan, unakar janam Mauritius me hoyil rahal. Uchi siksha ke liye England gailan jahan parhayi samapt karane ke baad apan career ek economics (arthasatra) siksak se aramb karalan uske bad vo British sarkari nokari me aaj thak nyojith havan. Vo sanvavadata bhi achchi tarah se sampadhith karlan. Vo England me chahe kithane varson se basal havan par aaj thak apan sanskruti aur mati se judal ba. Sashi ke Bhojpuri ganein, geethakavya aur kavita gavahith ba ki aaj unke prayash se na sirf England me balki Europe me Bhojpuri ki pahachan aage baral ba. Trinidad, Guyana aur Fuji ke log aaj isi bhasha ke madhyam se hum se aur judal havan ja. Aisan lagath jaise ki ek atut bandhan.

Dedication

To my beloved wife **Premila**, my children: **Roma**,
Yash, Sean, Milana and to all my fans and readers
around the world.

"What is wonderful about this book is that it's for everybody and it is an important contributor in maintaining the bhojpuri cultural heritage both in Mauritius and internationally. It is beautifully written that I am likely to read it again and again. It is so compelling that everybody should read this book. "

Mr R. Bushan Dipchand (LLB Hons)

Lambeth Solicitors, Brixton , London



Message

I am delighted with the initiative taken by Mr. Lock Sohodeb, also known as Sashi, in writing an interesting story in Bhojpuri in appreciation of the richness and beauty of the Mauritian Bhojpuri language. This book is unique in its presentation. It is intended to enable a wider reading public and rising generation who have a keen interest in the Bhojpuri language across the globe. The attractive features of this book are that it brings back memories and is available in Devanagri and Roman scripts.

I wish Mr. Sohodeb good luck for his continuous efforts in appraising our ancestral cultural values and Heritage.



Gynch Shaw Maurice & Co.

***Chartered Certified Accountants and the Chairman of the
Mauritius Hindu Association (UK)***



I am extremely thrilled with the innovative script of Biharee Baabu which is set to provide an appraisal of ancestral cultural values and heritage. It purports an interesting story with great morals. The book makes an interesting reading and attracts a wide range of readers as they are spoilt with a choice of script between Devanagri and Roman scripts consequently paving the way to a wider spectrum of readers. It also sets a milestone for new writers in Bhojpuri. Its unique characteristics lead me to conclude that the book must be read by all.



I wish to congratulate Mr. Sohodeb on his achievement in the completion of this book. I also wish him every success in his future projects in the continuity of the maintenance of Bhojpurism globally.



Hemunjit Ramparsad B.A . (Hons) R.M.N.

Acknowledgements

I would be remiss if I did not mention the encouraging words from Mr. Anand Tirbhowan and his wife, Mrs Amitah Tirbhowan, Mr. G.S. Mungur, Mr. Bushan Dipchand, Mr. H. Rampersad, Mr. Manen Gunpath, Mr. L. Audit, Mr. Girjanand Bissesur, Mr. Raj Santoo, Mr. Jiten Tirbhowan, Mr. Suresh and Mr. Anand Chuttoo, Mr. Dan Bucktowar and Mr. Ved Bucktowar (France).

A special thanks to the Ministry of Arts and Culture of Mauritius in particular to Mr. Islam Bhugan for his valuable advice, Mr. Mahen Matikola for his supports with the publication of the book, Dr. Sariita Boodhoo, Dr. Suchita Ramdin, Mr. Jugdish Goburdhun, Mr. Radhamohun Nunkoo and Mr. Mahen Uchana of Gopio International..

A 'Big Thank You' to Mrs. Aruna Chowdhoo and Mr. Rakesh Seerkissoon for their intensive editorial supports and guidance.

ई पुस्तकवा की कहानी एक आम व्यक्ति के जीवन पर आधारित बा जो कि छोटा से बड़ा तक अपन संस्कृति निभावत बा और माता पिता की सेवा में कोई कमी न छोड़त बा। पिता की नज़र में बेटा श्रवण कुमार के रूप धारण कर के उनके घर में जनम लेले बा। 'श्रवण तो अपन पास ही हवन जो हम लोगन की सेवा करियन। 'क्या ये सम्भव होई? क्या अपनों से दूर होके अपन संस्कृति की रक्षा करियन? क्या अपन दिये हुवे वचन निभा पईयन?

लॉक सोहोदेब जो शशि नाम से भी दुनिया में प्रसिध हवन उनकर जनम मॉरिशस में होईल रहल। उची शिक्षा के लिये इंग्लैंड गईलन जहाँ पढाई समाप्त करने के बाद अपन कैरियर एक शिक्षक से आरम्भ करलन उस के बाद वो ब्रिटिश सरकारी नौकरी में आज तक नियोजित हवन। वो संवावदाता भी अच्छी तरह से सम्पादित करलन। वो इंग्लैंड में चाहे कितने वर्षों से बसल बा पर आज तक अपन संस्कृति और माटी से जुड़ल बा। शशि के भोजपुरी गाने, गीतकाव्य और कविता गवाहित बा आज उन के प्रयास से न सिर्फ इंग्लैंड में बल्कि यूरोप में भोजपुरी की पहचान आगे बढ़ल बा। त्रिनिदाद, गयाना फीजी के लोग आज इसी भाषा के माध्यम से हम से और जुड़ल हवन जा। ऐसन लगत जैसे कि एक अटूट बन्धन।

शशि विस्व में अन्ग्रेज़ी लेखकों में से कम ना हवन।

Contents

	<i>Pages</i>
Introduction- प्रस्तावना- Prastavta	12; 189
Chapter 1 वासुदेव की परवरिश -Vasudev ki parvarish	21; 195
Chapter 2 हल्दी -Haldi	57; 223
Chapter 3 पाँच साल बाद -Panch saal Baad	67; 231
Chapter 4 बीस साल बाद -Bis saal baad	79; 241
Chapter 5 दूसरे दिन -Doosare din- Embassy	101; 247
Chapter 6 जहाज - Jahaz (Sea journey)	117; 259
Chapter 7 साहेब के घर-Morgan ke ghar/ मृत्यु -Mrityu	121; 275
Chapter 8 दस साल बाद -Dus sal baad	159; 305
Chapter 9 वासुदेव -Vasudev	165; 309
Chapter 10 हत्या -Murder	173; 315
Chapter 11 इंग्लैंड/ England	183; 323

प्रस्तावना - Introduction

हर रोज नौकरी की परेशानी, परिवार की चिन्ता से हम लोगन के बाप दादा कुछ ज्यादा परेशान रहलन। बस अपन पूरे परिवार की खुशी और भविष्य के लिये अपन जीवन त्यागने में कोई सन्कोच ना करलन। बिहार से जब अपन घर द्वार छोड़ के, अपन बोरिया बिस्तर गाठ के कोल्कता पहुँचलन त काम की तलाश में किसी छोटी मोटी नौकरी से खुश हो जईतन इतना कि वो विदेश जाने के लिए भी तैयार रहलन। बस मौका मिलते ही कुछ दिनों बाद वो लोगन जहाज में सवारी करने लगलन जा। उन लोगन को पता ही ना रहल कि आगे चल के कैसन जीवन बितईयन। जब तक वो बंदरगाह में रहलन तब तक मंगन में रहलन ई सोच के 'चलो भाई अब हम लोगन के जीवन में रोशनी आईल। खूब पैसा कमावब जा और अपन अपन परिवार की सेवा मजे से करब जा। जैसे जहाज पानी में छुतल तैसे सब के सब होईलन इतना उदास कि कहा न जाई। उ लोगन इतना चिन्तित रहलन ई विचार के कि 'अब फिर से अपन मिट्टी से कभी जुड़ियन जा कि ना?' अपन अपन हाथ जोड़ के येहि बिनती करलन 'हे प्रभु हम लोगन को जलदी वापस घर लईय'। पर जब थोड़ी और सोच विचार करलन त उन लोगन के दिल में एक खुशी जागल 'चलो परिवार न सही मिट्टी से जोड़ल हम लोगन की मात्री भाषा, भोजपुरी, ई लोगन के साथ बा'। ये सोच के उन लोगन के मन में इतनी शक्ति

पैदा होईल के कठिन से कठिन समय के सामना करे के तैयार रहलन ।

सब लोगन अपन सफ़र ऐसन कतलन पता ही ना चलल कि जहाज कब कोल्कता से आके मॉरिशस के पोर्ट लुइस बंदरगाह में रुकल। कुली घाट, जेके अब आप्रवासी घाट नाम दियाल बा, वहाँ जब उन लोगन को रखा गईल तब उन लोगन की भाषा को मोटिया बोलल जात रहल या कल्कतिया काहे कि कोलकता (कोल्कोट्टा) से आईल रहलन जा। अन्दर एक डर सा पैदा होईल 'अब जब साहेबवा हम लोगन के साथ अपन देशी जबान में प्रश्न करियन त हम लोगन उनकरा कैसे जवाब देवब जा। अब तो कोई चारा ना दिखाई देवत बा अब हम लोगन को साहेबवा की जबानी सीखे ही के चाही। भैया ई त गजब हो गईल हो। ऐसन लागत बा जैसे हम लोगन की जबान के दिवाला निकली, और बहुत दिन तक मैया साथ ना देईयन।

जैसे जैसे धीरे धीरे अपन बस्ती बनईलन तैसे तैसे अपन भाषा का विस्तार करलन। इतना कि का बोलबह चीनी से लेके साहेबवा भी भोजपुरी बोले लगलन।

आज मॉरिशस में भोजपुरी की चर्चा कुछ ज्यादा ही फैलल बा। देखा जाई त इन सब के पीछे अनेक सन्सथाओ और पुरुषों की सहायता बा, जैसे कि, मॉरिशस की सरकार, गोपिओ इंन्तेर्नतिओनल, महात्मा गाँधी इंस्टिट्यूट, मॉरिशस के रेडियो

टेलीविजन, मॉरिशस और विदेश के भोजपुरी गायकों और लेखकों का भी बड़ा योगदान बा। पर सवाल ई उठत बा कि भोजपुरी जब पहले ही से मॉरिशस की भाषाओ में शामिल बा जो कि हिन्दु और मुस्लिम दोनों जाती ई भाषा को खूब बोलते अईयल बा त अब भोजपुरी को काहे एगो दुल्हन की जैसन फिर से सजावट जात बा? बात का बा?

वजह त दूध की तरह बिलकुल साफ़ बा। भोजपुरी भाषा जो पुरनियन की जान और हम लोगन की शान रहल बा वो समय के साथ बिना वजह थोड़े समय के लिये धीरे धीरे पीछे रह गईल रहलन। संक्षिप्त रूप से देखा जाई त इस में किसी की गलती ही ना बा क्यों कि जब से पुरनियन मॉरिशस में आके अपन झंडा गड़लन जा तब से सिर्फ भोजपुरी भाषा में ही बोल चाल करलन, वो इतना हिन्दु और मुसलमानो में प्रचलित रहल कि न कभी लिखाई या पढ़ाई के जरूरी समझा गईल। या त उन लोगन की लापरवाही या बद्किस्मती रहल दूसरी भाषा सीखने के चक्कर में अपनी मात्री भाषा को थोड़ा पीछे छोड़ देलनजा। इतना कि दूसरी भाषा को मेहमान के रूप में भगवान का दरजा दे के अपन खूद की बोली गिला करलन जा, या त, हालत से मजबूर कोई सुविधा ही ना मिलल भोजपुरी आगे बढ़ाई के। पर जहाँ तक सकलन वहाँ तक अपन भाषा को सम्भालने की पूरी कोशिस करलन जा। जब किसी विषय पर विस्तार करलनजा चाहे रामायण हो या गीता, महाभारत या उपनिषद, हनुमान

चालिसा या कुरान सब के सब अपने पूरे लागाव के साथ कड़ी से कड़ी शब्द चाहे हिन्दी, संस्कृत या उर्दू में हो वो तोड़ फोड़ के अपन समझ के अनुसार भोजपुरी में अपन सुनने वालन को समझा के दिल बेहलैलन।

ये शायद उन लोगन को अपन राष्ट्रीय भाषा से लगाव रहल और आज उन लोगन कि मेहनत से बहुत लोगन को हिन्दी, उर्दू और संस्कृत का ज्ञान प्राप्त होने का मौका मिलल जिन के जरिये सौभाग्य से हम आज तक अपन पूर्यों की मिट्टी से जुड़ल हई जा। आज गर्व से केह सकत हईजा कि मॉरिशस का नाम आज भारत देश में प्रचलित बा और 'एक छोटा भारत' केहलाया जात बा।

वाकि ही हम लोगन की पेहचान आज भारत देश में खास तौर पे बिहार में कुछ ज्यादा बढ़ गईल बा पर हम लोगन की थोड़ी लापर्वाही से भोजपुरी वैसे के वैसे ही रह गईलबा। हिन्दी और दूसरी भाषा पर ज्यादा ध्यान देने के कारण भोजपुरी भाषा पर इतना दबाव पर गईल बा जैसे लगत बा कि ई भाषा मॉरिशस में कभी बोलल या सुनल ही ना गईल बा खास तौर पर इंग्लैंड और यूरोप के कुछ देशों में, जब कि सब लोगन को इस एतिहासिक बात से परिचित बा कि हम लोगन के बाप दादा वर्षों से अपन भाषा से जुड़ल रहलन और उ लोगन इसी के बल

से अपन रोटी कमैईलनजा और साथ में देश की प्रगति के लिये दिन दुगुनी रात चौगुनि करलन जा।

शायद इसी एक खास वजह रहल बा मॉरिशस में भोजपुरी पुस्तकों की बहुत कमि बा खास तौर पे उपन्यास, कहानी और कविता। बहुत से लेखक अपने अपने तरीके से भोजपुरी को आगे बढ़ाई की कोशिस में लगल हवन जा पर प्रश्न ये उथल बा कि जब कि सब लोगन का ध्यान दूसरी भाषा के प्रती बढ़ल बा त का कोई भोजपुरी लेख सहरियन जा? लिखाई जाई त किस तरीके से? जब कि हिन्दी और उर्दू पढ़ने और बोलने वालों की संख्या भोजपुरियन प्रेमी से ज्यादा बा?

अब जब कि मॉरिशस की सरकार ठेका लेले हवन भोजपुरी माँ को अब एक औपचारिक भाषा के रूप में हर सरकारी स्कूल में लिखाया और पढ़ाई जाई पर जब तक इन सब की तैयारी बड़ी तेज रफ्तार से चलत बा, और वो भी भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन की तरफ से, हम लोगन उसे बड़े मजे से बोलत और सुनत हईजा और पूरवज की भाषा का लाभ उठावट हईजा।

तब तक हम अपन तरफ से भोजपुरी प्रेमी के लिये इस पुस्तक भेंट करत हई जो कि हमरे पुरनियन के बोलल और सुनल भाषा में लिखल गईल बा जो कि हम लोग छोटे से बोलते आईल जा।

साथ साथ अपन तहे दिल से ई पूस्तकवा एक श्रदांजलि के रूप में अपन पुरनियन को भी समर्पन करत जिन के बिना हमर लेख अधूरा रह जाई।

ऐतिहासिक तौर पे मॉरिशस में पुरानियन की भोजपुरी की गहराहि में झांक के देखा जाई त ई बात स्पष्ट बा कि हम लोगन की भोजपुरी किसी दूसरी सुध भाषा से कम ना बा। कैसे? शब्दो का उपयोग बड़ी आसानी से हर एक व्याख्यान पूरे सोच समझ के बोलल जात बा। जैसे कि भूत और वर्तमान बड़ी सावधानी से प्रगोय किया जा ला। ई बात मॉरिशस के भोजपुरी कविता संग्रह जो २०१२ में छापा गयल बा महात्मा गाँधी इंस्टिट्यूट गवाही बा।

इस पुस्तक के यही लक्ष्य बा कि इस छोटी सी कहानी के आधार से हम अपन प्रस्ताव प्रस्तुत करत हई ताकि पढने वालो को अपनी भाषा की पहचान बढ़ी। अगर हम लोगन भोजपुरी में कुछ लिखना या पढ़ना चाहब जा तो बिन सन्कोच के साथ कर सकबजा। इस में आनंद ही आनंद बा।

जहाँ तक हमर विचार बा चाहे कोई भी भाषा होई अगर हम उनकर प्रगति देखे चाहब जा त कुछ न कुछ करे के चाहि। वैसे हम चाहे कितने सालों से इंग्लैंड में आके बसल हई फिर भी हमर दिल भोजपुरी से ऐसन जुड़ल बा कि जैसे हमरा खुद ऐसा

लगत बा कि हम एगो बिहारी बाबु से कम ना हई। छोटे से बड़ा तक हम लोग घर पे भोजपुरी बोलते आईल जा। हमारो पिता जी, श्री बल्मित्रम सोहोदेब जी, जो कि 'मणिलाल सान्तेर' से मॉरिशस में मशहूर रहल और हमारी माँ, केसरी, हम सब भाई बहिन एक साथ घर या बाहर में येहि भाषा बोलनी जा। मानो हम लोगन के पर्वरिश इसी भाषा के बल से होईल। यहाँ तक कि विदेश में भी हम इस भाषा का उपयोग करत हईजा। इतना ही नहीं बल्कि हमारी पत्नी, प्रेमिल, इस भाषा में हम से बात करे में कभी ना हिचकलन। और उनकर प्रभाव हम लोगन की संतान, रोमा और बंसी यश, जिन कर पैदाइश लन्दन में होईल बा हम लोगन की बात चीत सुन सुन के थोड़ी भोजपुरी सीख गईलन हवनजा। और जब जब वो लोग अपन छुट्टियाँ मनाने मॉरिशस जात बा त बहुत आसानी से अपनी टुटी फुटी भोजपुरी भाषा की सहायता से अपन दादा दादी, नाना नानी, मौसा, मौसी, फूफा, फूफी, चचेरे भाई और बहिन के साथ बड़े आराम से बात चीत कर लेवत बा।

जब सोचीला त हमर दिलवा बड़ा दुखेला कि आज तक हम लोगन की पूरनियन की भोजपुरी भाषा में न कोई उपन्यास या कहानी पढने का मौका प्राप्त होईल बा। अगर लिखल गईलबा त शायद इंग्लैंड तक पहुँचल ही ना बा। इस पूस्तक के माध्यम से हम ई कोशिश में लगल हई के फिर से हम लोगन के दिल में एक ऐसन जोश पैदा होई मानो पुरनिया की जबान फिर से जीवित हो गईल बा। इसीलिए ई पूस्तकवा को हम रोमन और

हिन्दी लिपि [देवनागरी] में प्रस्तुत करले हई ताकि पुस्तक प्रेमी अपन मरजी अनुसार किसी भी लिपि में आसानी से पढ़ के लाभ उठा सकियन।

इस पूस्तक की कहानी किसी आम आदमी पर आधारितबा जो अपन परिवार की खुशी के लिये हर मोड़ से लडेलन। शादी के बाद जब उन लोगन के घर में एगो सुपुत्र पैदा होवेला तब उनकर प्रेरणा और बढ़ जाला कि बेटा बड़ा होके उन लोगन की सेवा करियन वो भी एक आदर्श पुरुष, श्रवण कुमार के जैसन। क्या ये सम्भव होई? क्या एक बिहारी बाबु दूसरा बिहारी बाबु जैसन निकलियन? ये तोह कहानी का अंत में पढने ही से पता चली।

Chapter - अध्याय -1 - वासुदेव की परवरिश

वासुदेव जब दस साल के रहल तब उनकर माँ बाप एगो हादसे में गुज़र गईलन। तब उनकर दादा, हरिश, और दादी, केसेरी, बड़े प्यार से उनकर देख भाल और पालन पोशन करलन। वासुदेव अपन दादा और दादा जी को अपन भगवान मानत रहल। हर रोज सवेरे सवेरे उठ के भगवान से येही प्रार्थना करत रहल कि दोनों हज़ारो साल जीयन और बड़ा हो के उन लोगन के देख भाल करियन। वासुदेव, अपन दादा से बिहार के बारे में बहुत अच्छी अच्छी बतियन सुनने का मौका प्राप्त करलन। उनकरा सुन कर बहुत आश्चर्य लगल कि कैसे दादा जी अपन देश छोड़ कर सात समुन्दर पार मॉरिशस अईलन एगो नई ज़िन्दगी शुरू करे के लिये जिस से अपन परिवार की भलाई हो। वासुदेव अपन दादा से बहुत चीजें सीखलन। हर शाम अपन गोबर से लिपल झोपड़िया के अंगना में इमली के पेड़ के निचे बैठ कर हर्मोनियम धोलक बजा के खूब रामायण चालिसा और बिर्हा भी सीखलन। बदकिस्मती से दादा और दादी जी की बीमारी के कारण वासुदेव को बचपन ही से कहाँ मौका मिलल कुछ पढ़ाई या लिखाई करे के। जब वासुदेव तेरह साल के होईल तब उनकर दादी अचानक से बीमार हो गईलन और उनकर देहांत हो गईल। दादा जी बहुत दुखी पड़ गैलन जैसे कि आसमान टूट गईल रहल। थोड़े दिन न कुछ खईलन पीलन। हर शाम अपन अंगना में बैठ के प्रभु से येहि प्रार्थना करत कि उनकर आत्मा

के शांति मिले। घर में दादी की कमी बहुत लगत रहल। दादा जी बहुत फ़िक्र रहल कि अगर उनकरा भी कुछ हो जाई त वासुदेव की देख भाल कौन करियन। दादा जी के दिमाग में कुछ दिनों तक ई बात अटकल रहल और ईकर हल कैसे निकलियन।

छेह महीने बीत गईल रहल जब एक दिन दादा जी अपन होश सम्भालन कि अब उनकर पत्नी लौट के कभी ना अईयन। दादा जी काफी बुढ़ा हो गईल रहल और उनकर तबियत उतना ठीक ना रहल। एक सवेरे जब वो अपन चौखट से बाहर निकलल अपन बैल को थोड़ा पानी पिलाई के तब उसी समय अचानक से उनकर सर पे एगो चक्कर आईल और झट से ज़मीन पर गिर गईलन।

वासुदेव! वासुदेव! वासुदेव! कर के जब चिल्लैलन 'बेटा जलदी से आवह' तब वासुदेव को बात समझ में आईल शायद दादा जी को कुछ होईल बा। फ़ता फ़त अपन धोती सरिया के पगड़ी छोड़ के जब बाहर ज़मीन पर पैर रखलन तब उनकरा ऐसन ठेस पहुँचल कि का बोलबह दादा जी ज़मीन पर बेसहारा पड़ल देख कर आँख से आँसू नदी की तरह बहे लगल 'दादा जी आप की तबियत ठीक नहीं बा का हो?'

‘सब ठीक हो जाई बेटा प्रभु जी की कृपा से, तू काहे घबड़ाट हवह ज़रा हमरा उठा के बिस्तर तक सहायता करह हो’

‘ज़रूर दादा जी’

वासुदेव दादा जी को खटिया पर लेटा के उनकर हाथ पकड़ के बोलत बा ‘दादा जी परेशान होने की कोनो बात ना बा अभी हम वैध जी को लेके आईला आप को जलदी से अच्छा कर देई। दादा जी मुस्करा के बोलत: ‘अब इस उमर में ईलाज से कौन फ़ायदा बा। तू अपन वक़्त बरबाद ना कर हमरा अपन हालत पे छोड़ दह। बेटा तू अपन काम करह देखह अगर आज गन्ना कारखना तक ना पहुँची त साहेबवा बहुत नाराज़ हो जईयन ... और हाँ ... थोड़ा बैलवन को पानी पिला दियह... सुनह। और हाँ ईख के पत्ते भी खिला दियह...बेचारा बहुत भूखा प्यासा होईल।

‘हाँ दादा जी हम अभी घास पानी दे कर आवत हई’।

‘तू अपन काम पर जाह’

‘ई सब त ठीक बा परन्तु साहेबवा जब सुनियन कि आप बीमार हवह त ज़रूर समझईयन कि इसी कारण आज हम लोगन से कोई सवारी ना होईल। सच मनबह त वो बहुत गुस्सा ना करियन।

‘वासुदेव तू ई भ्रम में ना रहियह। साहेबवा सिर्फ अपन देखेलन उनकरा हम लोगन से कोई मतलब ना बा। अगर आज काम ना होई त वो हम लोगन को कभी माफ़ ना करियन। एक बार हमरे ही जैसन करीम बेचारा बीमार हो गईल रहलन परन्तू साहेबवा के पैर पकड़ कर माफ़ मांगने पर भी वो उनकरा माफ़ ना करलन बल्कि बदले में उनकरा और दण्ड देलन। साहेबवा ना जाने कैसन पत्थर दिल इन्सान हवन। ’

‘कैसन दण्ड?’

‘करीम को अपन खेत से धक्का मार के निकाल देले रहल और बदले में किसी दूसरे किसान को दे देलन।’

‘करीम चाचा अपन जीवन कैसे कटलन वो उपर वाला ही जानत? गली गली थोड़ा दिन ईधर उधर भटकलन और फिर अपन दम तोड़ देलन।’

‘दादा जी, करीम चाचा के परिवार के जीवन का कैसे गूज़ारा होईल?’

‘प्रभु का लाख लाख शुक्रिया रहल कि उनकर आगे पीछे कोई ना रहल। बड़े दुख से अपन एक वक़्त की रोटी निकालत रहलन। हम लोगन के साथ एक दो दिन ठहेरलन। हे प्रभु जहाँ भी बा उनकर पर दया करियह’

‘दादा जी ई त कब की बात ह अब सब ठीक बा...अब सब कुछ बदल गईलबा हो’।

‘कुछ ना बदलल बा सब वैसे के वैसे ही बा सब साहेबवा के हाँथ में बा। हम उनकर हाँथ में एक कठपुतली हईजा। हम ना चाहब तू गली गली ठोकर खईबह बेटा। तू हमरी बात मानह जलदी से जाके अपन काम में लग जा’।

वासुदेव झट से अपन मुँह लटका के सर हिलाते अपन दादा जी से बोलता ‘दादा जी जो आप की आज्ञा। जाने से पहले आप के लिये कुछ लाईके हो?’

‘हाँ थोड़ा पानी पिला दह बेटा’

‘ज़रूर’

तेजी से पानी भरल पीतल के लोटा अपन हाँथ में उठा के दादा जी की ओर बढ़लन और दो घूँट पीला के बोलत बा ‘दादा जी आप अपन सवास्थ पर ध्यान रखियह हम आज काम से जलदी घर लौटब। आप को कोई चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं हम घर लौटते ही सब कुछ सम्भाल लेवब। और दादा जी आज शाम हम पालक रोटी बनाब और अचार के साथ खूब मजे से खाब जा।

जैसे वासुदेव अपन आंगन से बाहर निकलत बा दादा जी मन ही मन मुस्कुरा के बोलता ‘हमर वासुदेव कितना भोला बा। हमर

कितना ख्याल रखेला। हे प्रभु हम त अपन जीवन जी लेली अब हमर बाबुवा की रक्षा करिय। अभी त बेटवा जवान बा उनकर सारा जीवन आगे पड़ल बा। कब सहेबवा से छुटकारा मिली? कब बचवा के जीवन में बहार आई सब आप की मर्जी मालिक...?’।

जैसे वासुदेव सवारी लेके रास्ते में निकलत बा उन के मन में एगो घबड़ाहट सी होई लगल ‘दादा जी कौन हालत में होईयन और अब उनकर तबियत कैसे होई’। वो इतना सोच में पड़ल रहलन कि आज चुपचाप सर झुका के हाँथ में बांसुरी हिलाते हिलाते अपन गाड़ी चलावत रहल जब अचानक बलबीर उनकरा तोकेला: ‘वाह भाई वाह आज न राम न सलाम तोहरा का होईल बा हो? तोहर प्यारा प्यारा गीतवा आज सुनाई नहि देवत बा। तोहर बन्सी की धुन काहे खोये खोये से बा। का हम लोगन से कोई भूल हो गईल बा का हो...कि तू नाराज़ हवह? अच्छा आज दादा जी किधर हवन? आज उनकरा एगो छुटटी देले हवह का?’

‘अरे ना रे चाचा ऐसन कोनो बात ना बा आज हमरा थोड़ा परेशानी बा?’

‘परेशानी! कोनो गड़बड़ होल बा का हो?’

‘हम इस लिये परेशान ह कि दादा जी सवेरे ज़मीन पर गिरल पड़ल रहलन। हमरा एक घबड़ाहट सी होईल बा कि उनकरा काहे ऐसे अचानक से रोग पड़ल’।

‘अच्छा त ई बात बा त बेटा वैध जी कोई ईलाज बतईलन?

‘हम वैध जी के पास जात ही रहनी दादा जी साफ़ मना कर देलन कि उनकरा कुछ ना होईलबा और कहने लगलन कि साहेबवा नाराज़ हो जईयन अगर आज गन्ना कारखाना ना पहुची त’।

‘ई त साफ़ बात बा भैया। तू मत घबड़ावह आराम से अपन काम सम्भालह हम और थोड़ी देर बाद अपन घर लौटते समय तोहारे घर का रास्ता लेवब और दादा जी से मिलते जाईब। हमर पर भरोसा करह हम सब कुछ सम्भाल लेवब। तू आराम से काम पर जा’।

‘ई त आप की बहुत कृपा होई चाचा’।

बलबीर की बात सुनते वासुदेव का मन थोड़ा हल्का सा हो गईल और अपने आप से बोलेला ‘दादा जी हमेशा येहि कहते आईल बा अगर प्यार से दूसरे के साथ रहब त, नेकी का फाल मीठा होई ...अब हम को बात समझ में आईल काहे सभी से प्यार से मिल जूल के रहे के चाहेला और कभी किसी की निन्दा ना करे के चाही... न जाने किस रूप में भगवान मिल जाई। वाह दादा जी वाह आप महान हवह। हे प्रभु सब ठीक कर दियह’।

वासुदेव खुशी से पागल हो के ज़ोर ज़ोर से मीठे मीठे कबीर जी के दोहे बोले लगलन और बांसुरी बजा के फिर से सब किसान के दिल बहलाने की कोशिश करत बा।

बलबीर दादा जी के साथ

जब बैल गाड़ी की अवाज़ दादा जी को सुनाई देईल तब वो एक दम चौंक गईलन और झट से आवाज़ देवत 'बेटा वासुदेव आज बहुत जलदी काम हो गईल'।

'ना दादा जी हम वासुदेव थोड़ी हई हम त बलबीर हई अभी वासुदेव खेत गईलबा कुछ देर बाद अययन '।

'बलबीर का बात बा बेटा? तोहर स्वास्थ सब ठीक बा न हो, आज काम से छुट्टी लेले हवह का?'

'आज हमर भाग्य ना रहल, थोड़ा ही काम मिलल हो। ई ठीक ही होईल जब वासुदेव बतईलन कि आप की तबियत उतना ठीक ना बा त हम से राहा न गईल और आप को देखेने का एक बहाना हो गईल'।

'बलबीर अन्दर आवह जरा पास तो बैठह, काफ़ी दूर रहेल काहे कस्ट उठैलह तोहर दूलहनिया तोहर राह देखत होई। हम त ठीक हई भैया?'

‘दादा जी अब हमरा काहे शर्मिन्दा करत हवह हो। माना हम दूर रहीला लेकिन इसी रास्ते से हरोज निकलीला आप त अपन हवह अब देखे बिना कैसे जाईब’।

‘अच्छा चलह ठीक बोलत हवह’।

बलबीर उतावला सा रहलन कब दादा जी से अपन मन की बात बताईयन। ‘झट से उनकर खटिया के पास ज़मीन पर बैठ के बोलत बा ‘अच्छा दादा जी बतावह न हो आप को कौन कष्ट बा, काहे इतना दुखी दिखाई देवत हवह?’

दादा जी एगो गहरी साँस लेके उतर देवत बा ‘बलबीर ज़रा एक दो घूँट पानी पीला दह भैया हमरा अब न जाने कब तोहर हाँथ से पानी पीये का मौका मिली’।

बलबीर चौंक के ज़मीन से ऊठ के जलदी से दादा जी के एगो गिलास से थोड़ा पानी देवत बा। दादा जी पानी पीते ही अपन मुँह पोंछ के बोलत बा ‘वाह बेटा बलबीर तोहर हाँथ में त जादु बा हमरा ऐसन लगत बा कि अब जान में जान अईलबा। आवः हमर पास बैठह ज़मीन पर से उठह हो’।

दादा जी की बात सुन कर बलबीर को अच्छा लगल। उनकरा ऐसन लगल कि चलो अपन मन की बात बोल दियन, आखिर कब तक पेट में डबा के रखियन ‘आज मौका मिलते ही दिल

खोल के बता देवब। 'सर झुका के बहुत आदर से बोलत बा 'ना दादा जी ई ज़मीन ही ठीक बा'।

'देख: बलबीर हम उमर में तोहर से बहुत बड़ा हई पर हमर और तोहर बीच में कोई फ़ासला न बा। भैया तू एगो हमर दोस्त के समान हवह। आवह आवह उपर बैठह हो'।

बलबीर दादा जी की बात सुन कर बहुत खुश होईलन और झट से खटिया पर बैठ गईलन फिर दादा जी के हाँथ पकड़ के बोलन 'दादा जी आप के लिये थोड़ा भोजन परोस के लाई अगर खाना तैयार न बा त कुछ पकाई?'

'ना रे हमरा खाई के कुछ मन ही न बा। कुछ ना चाही, आराम से बैठह तोहर प्यार काफ़ी बा'।

'पर दादा जी अस्वस्थ होने के कारण समय समय पर न खाने से ही होवत बा'।

'बलबीर हम ठीक हई रे'

'भाफ़ करियह दादा जीदा जी हमरा न जाने काहे ऐसन लगत बा कि आप के मन में कोई बात उछल रहल बा जो बोल न पावत हवह अब हमरा अपना समझत हवह त जरा खूल के अपन मन की बतिया बोलह न हो'।

‘बलबीर बहुत दिनों से हम येही सोच रहत हई अब हम और कितने दिन तक जियब। वसुदेवा को छोटा से पाल पोशली अब देखह उनकर दादी माँ भी गुज़र गईलन। अब हम गुज़र जाब त उनकर देख भाल कौन करी?’

दादा जी येही बात आप को अन्दर अन्दर ही से खात बा। अहो दादा जी हम लोग काहे के हईजा। काहे घबड़ात हवह? वासुदेव हम लोग के साथ आके रह सकियन। आखिर हम कौन पराया हईजा’।

‘ई सब त ठीक बा लेकिन वासुदेव कब तक दूसरो के बोझ बनियन’।

‘ई का बोलतहव दादा जी। वासुदेव आखिर अपन ही बेटा समान हवन’।

‘इस में कोई शक नहीं बा फिर भी हम चाहत हई कि हमर जाने के बाद वो इस झोपड़िया में अपन जीवन आराम से गुज़ारा करियन। हम लोगन के आंगन से बहुत यादें जुड़ल बा अगर एक बार कहानी सुरू करब त शायद दिन लग जाई समाप्त करने में ...’।

‘हम समझ सकत हई आप का बोले चाहत हवह। हमर दादा जी येहि कहा करत रहलन कि अपन मन्दिर कहाँ उठा के ले

जाईबहा। वो ये भी बोलत रहतलन कि जब जहाज से उतरलन कुलि घाट के बाद उनकर पहला और आखरी ठिकाना एक ही जगह पर रहल। उनकर लिये उनकर घर की मिट्टी काशी के समान और पड़ोसि की ज़मीन मानो मथूरा। दादा जी के देहांत के बाद पिता जी भी इस जगह न छोड़लन और जब से वो भी भगवान के प्यारे होईलन तब से हम लोगन अभी तक वोहि जगह पर बसल हईजा। आप ठीक ही बोलत हवह दादा जी'।

'चल बलबीर बात तोहरा समझ में आईल। आखिर कैसे हम चाहब कि वो अपन निवास छोरियन'।

'सही बोलता हवह दादा जी'

'ई बात बा त हमरा सिर्फ एगो आखरी उपाय लौकत बा उनकर लगन कर देई के'।

'अब हमर उमर कहाँ बा पैदल चल के उनकर लिये एगो अच्छी सी दुलहिन खोजे के'।

'ई त बराबर बोलत हवह हो '।

'बलबीर एगो अच्छी लड़की देखियह त हमर बबुवा के लिये'।

'ज़रूर दादा जी'।

बलबीर थोड़ी देर के लिये चुप हो गईल। दादा जी को आश्चर्य होईल। दादा जी को न जाने काहे ऐसन लागल कि बलबीर के

मन में कुछ लटकल बा पर निकाल न पावत बा। झट से बोलत 'हाँ त बलबीर का तोहर आस पास या परिवार में कोई जानल पहचानल कुँवारी लड़की बा जो हमर वासुदेव की दुल्हनिया बने के लायक होई ?'

बलबीर थोड़ा घबड़ा के बोलत 'हाँ दादा जी एगो बहुत अच्छी छोकरी बा हम लोगन के परिवार में पर शायद आप लोगन के बराबरी के न होईयन'।

'तोहर कहने का मतलब समझ में न आईल?'

बलबीर अपन सर झुका के, ज़मीन की ओर देख के थड़थड़ा के बोलत बा 'यही कि छोकरीया तोहरी जात के न हवन' ।

दादा जी सर हिला के और मुसकुरा के इशारा कर के बोलत बा 'बलबीर बेटा जरा हमर पास आवह' और उनकर हाँथ पकड़ के समझावत बा 'सच पूछब त हमरा आज तक तोहरी दादी का जात पात न पता चलल बा। बलबीर ई भ्रम में न रहियह कि हम लोगन को एक ही जात से सम्बन्ध रखे के ज़रूरी बा या तो अपन लड़का या लड़की की शादी सिर्फ़ अपन ही बिरादरी के साथ करे के चाहि। बलबीर इस दुनिया में न कोई बड़ा बा न छोटा। हम लोग के कर्मों का फल इसी मिट्टी पर मिली । बेटा कभी तू ई कहावट सुनले हवह: 'माती कहे कुमहार से तू क्या

रोनदे मोहे एक दिन ऐसा आयेगा जब रोन्दुगी तोहे'। अर्थात मिट्टी कुमहार से बोलता बा कि तू सोचत हवह कि तोहरे हक बा हमरा मोड़े के। मोड़ा जब तक मोड़े सकत बा एक दिन ऐसन आई कि हम तोहरा मोड़ब'। बेटा हम सब लोगन के अच्छा करम करे के चाही, हम सब मिट्टी के पुतले हई जा, जाति पाति से कौन मतलब और सब के सब मिट्टी में ही गड़ जाबजा। बेटा और एगो कहावत याद आगल ज़रा ध्यान से सुनियह 'पोती पढ़ी पढ़ी जग मुआ, पण्डित भया न कोई, ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होईए'। अर्थात 'कोई चाहे दुनिया भर की पुस्तक पढ़यन वो ज्ञानी न बनियन पर जो सिर्फ़ प्यार के दो चार अक्षर पढ़लियन पण्डित कहलैयन'। बेटा दूसरो की छोटी छोटी बातें जो जात पात के विषय पर बा उन लोगन के बहकावे में न अईयह। हम लोगन को एक दूसरे के प्रति प्रेम स्वभाव से जिये के चाही। इतना याद करिय हम सब के सिर्फ़ एक मालिक बा'।

बलबीर अपने आप को थोड़ा शर्मिन्दा महसूस करलन कि ज़िन्दगी में कभी सोच न सकत कि दादा जी उनकरा इतना लम्बा चौरा भाषन जात-पात के बारे में सुनैयन। फिर भी आज उनकर मन का बोझ थोड़ा हल्का सा हो गईल कि उनकरा एगो मौका मिलल अपन बहिन के विवाह प्रस्ताव रखे के। बड़े प्यार से दादा जी के दोनों हाथ पकड़ के बोललन 'माफ़ करियह दादा जी अगर हम आप को अनजाने में कोई ठेस पहुँचैली त'।

दादा जी तुरन्त जवाब देवत बा 'अरे बेटा सब को अपन अपन विचार जात पात के बारे में बा। हम खुश हई कि तू अपन विचार प्रतुत करलह। चलह तोहर छाती भी थोड़ा हल्का हो गईल'।

'वाह दादा जी आप त बहुत महान हव कि हम जैसन के प्यार से अपनावत हव'।

बलबीर अब मौका न गवाय चाहलन। थोड़ी देर के लिये सोचत कैसे वासुदेव का हाथ अपन बहिन के लिये मंगियन। बड़ी सावधानी से दादा जी को देख के बोलत बा 'अच्छा त दादा जी काहे न आप वासुदेव के लिये एगो अच्छा जीवन सन्गी दूंदत हवह?'

'तोहर विचार ठीकबा... अब सब मालिक के हाथ में बा।। अच्छा तोहर बहिन कैसे बा उनकर व्याह होईल की नहीं?'

'दादा जी अभी तक त वो कुँवारी बा'।

दादा जी थोड़ा सा चौंक गईलन कि कैसे उन के मन में ई सोच न पैदा होईल कि बलबीर के घर ही में एगो जवान लड़की बा जो विवाह के लायक बा। दादा जी मुसकुरा के बोलता 'बलबीर तोहरी प्यारी बहिनवा का नाम का बा हो? हम त भूल ही गईली, माफ़ करियह बहुत दिन से देखेले नहीं हई'।

'दुर्गा'।

'प्यारा नाम बा। हाँ त आज कल का करत बा?'

'प्रभु की कृपा से हमर बहुरिया के काम काज में हाँथ बतावट बा'।

'उनकर शादी क्यों न कर देवत हवह?'

'हम ई कोशिश में लगल हई पर अभी तक बेचारी घर पर कुँवारी बैठल बा। आज कल उनकर चिन्ता हमरा खायल जात बा'।

'अरे बेटा घुमा फिरा के काहे बात करत हवह। जब तोहरी बहिन कुँवारी बा और तोहरा इतना चिन्ता होवत बा त हमरा ऐसन लगत बा कि तू उन ही के बारे में हमर से बात करे से काहे हिचकात हवह?'

'जी दादा जी आप सही अन्दाज़ लगईलह'।

'वाह बेटा हमरा पता ही न चलल कब बेतीया बड़ा हो गईल। अगर तोहर बगल से हाँ बा त मानह हमरा कोनो एतराज़ न बा। हम साफ़ साफ़ कह देवत हई कि दहेज में हम लोगन को कुछ न चाहि। इतना तोहरा और बता देवत हई कि हमर पास कुछ देने को भी शक्ति न बा। जो थोड़ा पैसा रहल वो साहेबवा के चुकाई के पड़ल क्यों कि गाड़ी उधार में लेले रहली। अभी त हम लोगन को और थोड़ा करजा चुकाई के बा। पता न चलत

बा कैसे चुकावब जा जब इस साल तूफान और गर्मी के कारण फसल में बड़ा नुकसान होईल बा'।

दादा जी हाथ उठा कर उपर देख के बोलता 'न जाने इस साल लगान कैसे भरी जाई, हे प्रभु आप ही सम्भालियह'

'दादा जी आप काहे बेकार में परेशान होवत हवह। हम लोगन को कुछ नहीं चाही। हमरी बहिन को सिर्फ एगो अच्छा पति मिल जाई और उनकर घर बस जाई इसी में हम सब की खुशी बा। पर एक बार आप वासुदेव से पूछलियह लगन से खुश हवन कि नहीं '।

अरे बेटा तू इस बारे में चिन्ता मत करह हम अपन ओर से सम्भाल लेवब। तू सिर्फ लगन के मुहुरत निकालह और विवाह के दिन पक्का करह'।

बलबीर खुशी से बुलबुल्ला हो के दादा जी के पाँव छू के आशीर्वाद लेवत 'अच्छा दादा जी आज्ञा दह हम रास्ते में पण्डित जी से मिलते जाइब और जैसे मुहुरत निकली हम आके सूचित कर देवब'।

‘ठीक बोलत हवह बेटा, हाँ जब हम लोगन के पास पैसा न बा त अच्छा होई अगर हम तिलक के चक्कर में न फसब जा... अच्छा... सम्भाल के जैय बेटा’।

‘ठीक बा, जो आप की आज्ञा ’।

ईक तरफ बलबीर खुश रहल कि उन की बहिन का विवाह होई पर दूसरी तरफ बड़ी सोच में पड़ल रहल ‘क्या वासुदेव इस रिश्ते से राजी होईयन...। हे प्रभु तोहर हाँथ में सब कुछ बा वासुदेव को सम्भालिया’।

शाम काफ़ी ढल गल रहल और वासुदेव अभी तक घर न लौटल रहल। दादा जी बहुत चिन्तित रहल। परेशानी में व्याकुल हो कर दादा जी धीरे धीरे खटिया से उतर कर हाँथ में लन्तेर्न लेके बाहर निकलत ही रहलन जब कि अचानक एक गाड़ी के पहिये की अवाज़ सुनाई देईल। बड़ी धीमी स्वर से हल्ला करत ‘वासुदेव आज बहुत देर लगादेलह बाबु’।

थका हुवा वासुदेव बोलत: ‘हाँ दादा जी आज एकदम देर हो गईल’।

‘सब ठीक बा न बेटा?’

‘दादा जी आप बाहर का करत हवह हो? आप अन्दर जा हम बैल को थोड़ा पानी पीया के अभी आवत हई फिर आराम से बात करबजा’।

दादा जी बहुत परेशान रहलन कि घर पर खाना न बनल रहल। 'वासुदेव भूखा होई। 'जलदी से रसोई में जा के आग सुलगाईलन। अग्नि को तेज करे खातीर अपन मुँह से एगो फुँकनी से फूखे लगलन। जैसे ही एगो दिब्बा से थोड़ा चावल निकालने की कोशिश करत बा बस उसी समय अचानक वासुदेव रसोई में प्रवेश होवेला। दादा जी को देख के आँख में लोर आ गईल और बड़े भाव के साथ बोलत 'दादा जी आप रसोई में का करत हवह हो.....हाँ आप को फुँकनी से चुलहा फुँकने की का ज़रूरत बा? आप को त बहुत आराम करे के चाही। आप आरम करह हम सब सम्भाल लेवब'।

'अरे न बेटा तू दिन भर कुछ खईले न होईबह। जाके तू स्नान करह हो तब तक हम तोहर लिये थोड़ी खिचड़ी बनाईला'।

'न दादा जी छोड़ह जा हम ई सब देख लेवब। हमरा सब समझ में आवत बा कि आप को हामार बहुत चिन्ता बा। अब त हम कोई बच्चा नहीं। हम खुद के देख भाल अच्छी तरह से कर सकब। जहाँ तक भोजन के सवाल बा हम आप के लिये रोटी और सब्जी साथ में लेके आईल हई।

'कहाँ से तोहरा रोटी और सब्जी मिलल?'

'हरिया चाचा कुछ ज्यादा ही साथ में लेके आईल रहलन और जब आप को खेत में न देखलन त हमरा बोललन 'दादा जी को हमर बहुरिया की रोटी बहुत पसन्द लगेला घर जा के दादा जी

को दे दियह। 'हाँ, और बोललन कि आप अपन ख्याल रखियह कल जब आप से मिलीयन त खूब गप शप करियन'।

'प्रभु हरिया और उनकर परिवार को खुशी दे। हम लोगन का ख्याल जब देखब तब रखेलन। अब देखह कैसे रोटी भी भेजले बा'।

'दादा जी हरिया चाचा के घर की रोटी सचमुच बहुत स्वादिष्ट बा'।

'बेटा ई त होई बेही करी क्यों कि बहुत प्यार से उनकी दुल्हनिया बनावेला'।

'दादा जी आप की ये बात से हम सहमत हई'।

'अच्छा इतना बतावा आज तोहरा काहे देरी हो गईल'।

'दादा जी आज हम बार बार मरने से बच गयली'।

दादा जी घबड़ा गईलन और झट से वासुदेव के दायँ हाँथ पकड़ के पुछत बा 'तोहरा कोई चोट लगल बा का? देखह हमर से कुछ न छुपावह, हम ठीक हई, जलदी से बोलह। बोलह?' बबुवा सुनाव त।

'दादा जी अब आप से का छुपावब। आज रहीम चाचा काम पर न आईल सकलन और बलबीर चाचा जलदी ही निकल गईलन। साहेबवा बहुत गुस्सा में रहलन वो हम के बोललन कि आज ही

सब जलल गन्ना उठा के कारखाना ले जाईके। अब हम घर जलदी लौटने की कोशिश में रहनी और गाड़ी में कुछ ज्यादा ही गन्ना लाद देले रहनी। एक दो बार जब हम खेत से कारखाना गईली त कोई कष्ट न होईल। पर जब अन्तिम बार कारखाना की ओर जात रहली बैल बेचारा कुछ ज्यादा ही थक गईल रहल और पैर कमजोर होने के कारण रास्ते चढ़ न सकत रहल। थोड़ी देर के लिये जब रुकल त हमरा थोड़ा गुस्सा आईल। जब उनकर पीठ पर छरी चलयनी कुछ देर के लिये दौरल फिर ऐसन गिरल मानो जैसे सारा बादल गिर पड़ल। इतने में सब गन्ना गाड़ी से उलट के सड़क पर जमा हो गईल। गाड़ी के एगो पहिया निकल के कुछ दूर तक चल गईल। हम बहुत घबड़ा गयली। प्रभु का लाख लाख सुक्रिया कि रामू चाचा हमर पीछे अपन गाड़ी चलावत रहलन। हम दोनों मिल के लग भग दो या तीन घंटे तक गाड़ी के पहीये ठीक करनी जा और फिर से गन्ना भरली जा। जब तक कि हम दोनों गाड़ी को सम्भाल रहली तब तक दोनों जना के बैलन खूब आराम करलन। जब हम फिर से सवारी शुरू करनी त कोई दिक्कत न होईल। पता ही न चलल कब समय निकल गईल। दादा जी क्षमा करियह हम आप को ऐसन हाल में अकेला छोड़ के काम पर इतनी देर तक रुकल रहनी।

‘अरे बेटा तू काहे हमरा शर्मिन्दा करत हवह और अपने आप को दोषी तेहरावत हवह, सब मालिक की मर्जी ह। ये सब उन का खेला ह’।

वासुदेव की आखों में फिर से आँसू भर आईल 'दादा जी ई तो आप का बड़प्पन ह। अच्छा बतावह आप कि तबियत कैसे बा आज कुछ खयलह पीलह कि नहीं ?'

'सब कुछ कुशल मंगल बा बबुवा। आज जब से बलबीर से बात चीत होईल बा तब से मानो हमर पेट भर गईल बा जैसे कि हमर सब रोग दूर हो गईल बा?'

'दादा जी बतावह बलबीर चाचा के साथ कोई वैध आईल रहल का हो?'

'न रे बबुवा'

'त आप के लिये कोई जरी बुटी साथ में लेके आईल रहलन का?'

'न रे'

'त कुछ भोजन अपन साथ लेके आईल रहल का हो?'

'न बबुवा ये सब बात छोड़ह। इतना ही बोलब कि आज हमर छाती से एक बोझ हलका सा कर देलन बा। तोहर से कुछ ज़रूरी बात करे केबा'।

'दादा जी माफ़ करियह आप की बात समझ में न आवत बा'।

‘सुनह बबुवा घुमा फिरा के बात से कोई मतलब न बा आवह थोड़ा हमरे पास बैठह सब कुछ साफ़ साफ़ बतावब हमर कहने का मतलब का बा ... हम और कुछ दिन के मेहमान हई...’।

वासुदेव का चेहरा थोड़ा उतरल रहल और बहुत बेटाब रहल दादा जी की बात सुने के और इस से ज्यादा दादा जी और कुछ बोलियन वासुदेव कह उठलन ‘हाँ अच्छा थोड़ा बाद में हमरा जो बात बा सर्सन्त से बोलियह पहले त हमर साथ बैठ के थोड़ा भोजन बना लह’।

‘न रे बबुवा तू खालह हमरा खाने से मन उठ गल बा थोड़ा सर्बत ही पिला दह’

‘जो आप की मरजी’

‘दो चमच शक्कर और एक निम्बू ’

‘दादा जी पताह बा’

वासुदेव सरबत के साथ एक रोटी, थोड़ी सब्जी और आम का आचार साथ लेके अईलन।

वासुदेव दादा जी की कमजोरी देख के और उनकर बातें सुन कर रो के बोल परत बा ‘दादा जी आप काहे ऐसे बोलत हवह हो आप ही तो हमर माता पिता और सब कुछ हवह। अब आप के बिना हम कैसे रहब?’।

‘बबुवा येही कारण हम तोहर बारे में सोच रहत हई। देखह बबुवा हम चाहत हई कि तोहर ब्याह हो जाई’।

वासुदेव दादा जी की बात न समझलन बल्कि थोड़ा चौंक गईल रहल। झट से उठ के बोललन ‘दादा जी आप कहना का चाहत हवह?’

‘येही की तोहर ब्याह हो जाई भाई’।

‘ब्याह! वाह दादा जी अभी ही से हमर से छुटकारा पाने की कोशिश में लग गईल हवह। हम आप की बात से बिल्कुल ना सहमत हई। अभी अभी त आप की सेवा शुरू करले हई थोड़ा मौका त दह हो। दादा जी अगर हमर ब्याह हो जाई त आप की सेवा कैसे करब?’

‘अरे बबुवा सेवा की बात छोड़ह थोड़ा अपन सेवा के बारे में सोचह। कौन तोहर खातीर पकाई, रोटी बनाई, कपड़ा धोई और घर सम्भाली? आखिर काम त तोहरा हरोज करे ही के पड़ी अगर हम खेत न जाई सकब त घर पर हमरा कौन सम्भालियन। एक दिन त तोहर शादी करे के ही पड़ी’।

वासुदेव दादा जी की बात पर थोड़ा जोर दालत तब उनकर खोपड़िया में समझ आईल कि उनकर बात में दम बा। वो न चाहत बा दादा जी अकेले बिस्तर पर दिन भर पड़ल रहियन और घर में उनकर देख भाल करे के कोई न बा।

फिर बोलत 'दादा जी जो आप को सही लगत बा हमरा कोई एतराज़ न बा हो।

हाँ त बबुवा, आज बलबीर अपन बहिन, दुर्गा, के बारे में थोड़ा परेशान रहल और बात बात में पता चलल कि वो अपन बहिन के लिये एगो अच्छा लड़का दुंदत बा, हम इस मौके से फ़ायदा उठैली और दुर्गा को अपने घर की बहू बनाने को तैयार हो गयली। हम उनकर हाँथ तोहर लिये मांग लेनी एक शर्त पर कि विवाह जलदी से हो जाई और हम में से कोई एक दूसरे के परिवार पर दबाव न दलीयन दहेज के बारे में। तोहरा त पता बा कि हम बिल्कुल दहेज के खिलाफ हई और किसी से इस विषय पर बात ही न करिला। हम त बलबीर को साफ़ साफ़ बोल देले हई कि हम लोगन के पास कुछ देय के बचल न बा फिर भी वो अपन बहिन का हाँथ देने को राज़ी बा'।

'दादा जी ये सब त ठीक बा क्या हम दुर्गा की देख भाल कर सकब जा? हम इस लिये प्रश्न करत हई कि हम लोगन का जीवन रुखा सूखा से कट जाला, अब एगो भोली भाली लड़की को अपन यहाँ लाके दुखीयारी न कर सकब जा'।

'बबुवा बात सही बा। प्रभु पर थोड़ा विश्वास रखह सब ठीक हो जाई हो। '

हमरा पूरा यकीन बा कि दुर्गा बीटिया तोहर आंगन स्वर्ग जैसन बना दियन और तोहरे लोगन का जीवन बहुत खुश रही। जा बबुवा आराम करह कल हम बलबीर से बात करब'।

वासुदेव अपन दादा जी की बात सुनकर समझ गईलन अब उनकर फैसला अतल बा और उनकर लगन होई के ही रही। मन में बहुत घबड़ा हट सी होईल रहल अपन जीवन में कभी किसी लड़की से बात न करलेबा अब अचानक दुर्गा से कैसे बात होई और वो भी जो उनकर दुलहीन बनीयन। अपने आप को कोसत रहल कि अगर बलबीर चाचा दादा जी से न मिलतन त ई चक्कर में न पड़तन 'हे प्रभु हमर रक्षा करियह जो होई सो अच्छा ही होई' बोल के सो गईलन। गहरी नींद में एक भयानक सपना देखलन कि दादा जी की मृत्यु हो गईलबा और उनकर अंतीम संस्कार करे के लिये कोई ना बा। डर के मारे जब नींद टूटल त दादा जी को सोते देख कर अपन माथा पोंछ के मन में बोलत बा 'ऐसन बुरा सपना कभी हमर दुस्मन को भी न आई। दादा जी हमर भलाई के बारे में कितना सोचत बा। कल अगर हम अकेला पड़ जाब त हमरा का होई। ई बातिया सपना में समझ आईल। दादा जी जो कहलन वो खूब सोच समझ के ही बोलेलन।

चादर थाम के वासुदेव फिर से एगो गहरी साँस लेके सो गईलन।

सवेरे के ठीक पाँच बजल रहल जब वासुदेव की नींद टूटल। उनकरा बड़ा आश्चर्य लगल कि दादा जी अभी तक सो रहल बा। मन में इतना ही खयाल आईल शायद कल तबियत अच्छा न होने के कारण अभी तक असर पड़ल बा और उनकरा बहुत आराम की ज़रूरत बा। कमरे से धीरे-धीरे बाहर निकललन और लोटा लेके मैदान गईलन। दाँतवन करके, अपन मुँह धोके, बैला को पानी पीया के, ईख के पत्ते खिला के, फिर से अपन कमरे की तरफ लौटेला त अपन धोती, कुर्ता और पगड़ी लेके झील की तरफ स्नान करने को निकलत बा। लौटने से पेहले सुर्य देवता की पूजा कर के जब झोपड़ी वापस लौटत बा त देखत बा दादा जी एगो लकड़ी के खम्बा पकड़ के अपन कमरे में खड़ा बा। वासुदेव दादा जी को चुप चाप देख कर घबड़ा जात बा। आँख फार फार के उनकरा देखत बा। उनकरा ऐसन स्थिती में पहले कभी न देखेले रहल और दौड़ के पूछत बा 'दादा जी आप यहाँ काहे ऐसे खड़ा हवा हो? आप की तबियत ठीक नहीं बा का हो?

'बबुवा हम ठीक हई तू हमर चिन्ता ना करह। थोड़ा चक्कर आईल, सब ठीक हो जाई'। सर पकड़ के बोलता 'ई कम्बक हमेशा आता जाता रहेला। थोड़ा सा चाय मिली'।

'दादा जी ज़रूर। का हो ई भी पूछे के चाही'

वासुदेव को समझ में आईल 'शायद दादा जी अपन बीमारी हमर से छुपाय खोजत बा। उनकरा आराम की बहुत ज़रूरत बा। आज चाहे कुछ भी होई उनकरा खेत जाने से हमरा रोके के चाही'।

वासुदेव जब चाय लेके दादा जी के कमरे में गईलन त वो वहाँ पर न रहल। वासुदेव अपन खोपड़िया खुजला के सोचत बा 'इतनी जलदी कहाँ चला गईलन? जब खिड़की से बाहर झाँक के देखत बा त दादा जी अंगन में इमली के पेठ के तले बैठल बा। वासुदेव वही से चिल्लावत बा 'दादा जी आप बाहर काहे बैठल हवह हो, अन्दर आके बैठह, धूप आज बहुत कड़ा बा आप और बीमार हो जाई ब हो'।

'न रे बबुवा आज खूला आसमान देख के हमर मनवा के बहुत अच्छा लगत बा जैसे कि हम भी इन उड़ते पंछियों की तरह पन्ख पसार पसार के खूब उड़ उड़ के जीवन का मजा लेब। अच्छा बबुवा समय का होईल बा?'

'दादा जी मुर्गा जब से बांकले बा तब से लग भग एक घंटा होईल बा'।

'ज़रा हमर घड़ी में देखह त पूरा समय का होईल बा।

'दादा जी तोहर घड़ी कब के रूक गईलबा हो'

'अरे हाँ उनकर कान खीचबह त फिर से चले लगी'।

‘अभी जा के घड़ी को ठीक करीला ‘।

दादा जी अपन घड़ी को बहुत सम्भाल के रखत रहल। उनकर पिता जी उनकरा बिहार में तोफ़ा देले रहल। जब जब दादा जी अपन घड़ी हाँथ में पकड़तलन तब उनकरा ऐसन लगत रहल जैसे कि उनकर हाँथ में फिर से बिहार की मिट्टी सोना जैसे चमकत बा और पुरानी यादें फिर से ताज़ी हो जात रहल। वासुदेव को पता रहल कि एक बार दादा जी के हाँथ में घड़ी लग जाई त पूरा दिन अपन दुख भूल जात रहलन और अपन बीते हुए दिन के बारे में लगातर बात चीत करते ही रहतलन। वासुदेव अपन दादा जी की पुरानी कहानी पर बहुत दिलचस्पी रखत रहलन। उनकर तमन्ना रहल कि एक दिन वो भी अपन पुरखन की मिट्टी का दर्शन करियन और दादा जी को अपन साथ बिहार घूमईयन। जैसे वासुदेव दादा जी को घड़ी हाँथ में दे के जात बा तैसे बलबीर अपन बैल गाड़ी अंगनवा में खड़ा करत बा और प्रणाम कर के दादा जी को खुश खबरी सुनावत बा कि कुण्डली सब ठीक निकलल बा और विवाह रविवार के तई हो सकी।

सुनते ही दादा जी का चेहरा खिल उठत बा और हंस के बोलता ‘बलबीर ज़रा पास आवह थोड़ा हम से गले मिलह भैया अब हम समधी हाई जा’।

बलबीर थोड़ा बेचैन रहल वासुदेव से मिले के। उनकर मन थोड़ा घबड़ाईल सा रहल कि क्या दादा जी वासुदेव को इस रिश्ते के बारे में उनकरा बतईले बा कि नहीं ? उनकर नज़र ईधर उधर चौखट पर मन्दरा रहल और जब थोड़ी देर बाद वासुदेव न दिखाई देलन तब दादा जी से पूछता 'वासुदेव नज़र न आवात बा कोनो काम से बाहर निकलल हवन का?

'अरे न बलबीर। वो अन्दर ही बा... शायद कुछ काम से बन्धल बा। आराम से बैठह हम उनकरा अभी बुलावत हई।

दादा जी जोर से अवाज़ दे के पुकारत 'वासुदेव ज़रा ईधर आवह देखह कौन आईलबा'।

'जी दादा जी ...अभी आया दादा जी। हमरा पता बा हो बलबीर चाचा आईलबा उनकर खातीर थोड़ी चाय बनावत हई '।

'बहुत अच्छा। और एक चाय हमरो लिये बना दिया'

'ज़रूर'।

बलबीर दादा जी के साथ बैठल विवाह के बारे में बात चीत करत रहल जब वासुदेव नमस्ते बोलते दो गिलाश गरम गरम चाय अपन हाँथ में लेके बाहर निकललन। बलबीर उनकरा देख के बहुत खुश होईलन। बलबीर एक घूँट चाय पी के तारिफ करत बा 'बेटा तू चाय बहुत अच्छा बनावेल'

‘बहुत धन्यवाद पर चाचा हमरा काहे शर्मिन्दा करत हवह हो’

इतने में दादा जी वासुदेव की बड़ाई करने में देर न करलन और फट से बोलता ‘खाना भी बहुत अच्छा बनावेला। हमर बबुवा बा बहुत मेहनती हम इतना कह सकब आलसी बिलकुल न हवन। हाँ... जब से उनकर दादी गुज़रल हवन तब से लेके आज तक हमर सेवा में कुछ कमी न छोड़ले हवन। वासुदेव का हाँथ पकड़ के दुलार से बोलता ‘ई हमर हीरा ह’।

बलबीर मन ही मन बहुत खुश रहल कि उनकी बहिन का विवाह एगो साधारण और आदर्श पुरुष के साथ होई। पर वो थोड़ा चिन्तित रहल कि वासुदेव रिश्ते से खुश बा कि नहीं। उनकर मन में वोहि एक बात बार बार दौड़त ‘दादा जी वासुदेव को सब कुछ खोल खोल के बतईले हवन कि नहीं? उनकर ईरादा पूछले हवन कि न?’

दादा जी बलबीर का चेहरा देख के समझ गईल उनकर खोपड़िया में का चलतबा। जलदी से वासुदेव को ईशारा कर के अपन पास बुलावता ‘बबुवा हमर पास आवह ज़रा बैठह तोहर से एक दो ज़रूरी बात करे के बा’।

वासुदेव को पहले से ही पता रहल कि कौन विषय के बारे में उनकरा बुलाया जात बा। दादा जी के पास जाके बैठ गईल।

दादा जी प्यार से बोलत बा 'देखह बबुवा तोहर बहुत समय न लेवब तोहर विवाह बलबीर की बहिन के साथ पक्का हो गईल बा और अगले रविवार को दो पहर में रखल गईल बा... मानलह आज से सिर्फ चार दिन बाद। तू अपन विवाह की तैयारी में लग जा। बलबीर से बात हो गईल बा। हम लोग आपस में सब कुछ सम्भाल लेवब जा और बहुत बाराती साथ में लेके नहीं जाईब जा'।

दादा जी की बात सुन के बलबीर का मन थोड़ा हल्का सा हो गईल और जलदी से अपन धोकरी में से एगो छोटा सा लोटा निकाल के उस में सवा रुपया दाल के वासुदेव के हाँथ में समावत बा। वासुदेव आदर से स्वीकार करत बा और उनकर पाँव छू कर के आशीर्वाद लेवत बा।

बलबीर को फिर से बड़ा आश्चर्य सी लगल कि वासुदेव दुर्गा के बारे में कुछ न पूछलन: 'जब उनकरा पता चली कि दुर्गा उमर में दो साल से बड़ी बा त का उनकरा खुश रखियन?' बलबीर को रहा न गईल और अपन बहिन की खुशी के लिये वासुदेव से प्रश्न करलन 'बेटा का तू इस रिश्ते से खुश हवह न?'

वासुदेव को इस उमर में विवाह के बारे में का पता सर झुका के बोलता 'जो दादा जी की आज्ञा ... जो वो समझतवन ठीक त ठीक ही होई'।

बलबीर दादा जी को नमस्कार कर के अपन घर लौटलन और विवाह की तैयारी में लग जात बा। वासुदेव बैल गाड़ी लेकर निकलत ही रहल जब दादा जी उनकरा रोक के बोलता 'मोहन चाचा और यशोदा चाची से रास्ते में मिलते जईयह और कहियह हम उनसे मिले चाहत हई'।

‘ज़रूर दादा जी’

मोहन चाचा और यशोदा चाची दादा जी के पुराने परम मित्र रहलन जा। मोहन चाचा दादा जी के साथ एक ही जहाज में सफ़र करले रहलन। यशोदा चाची दादा जी को अपन भाई के समान मानत रहलन। दादा जी उन के बुरे वक़्त में बहुत सहायता करले रहलन।

दादा जी हर घर आये मेहमान को अपन भगवान मानत रहलन। मोहन चाचा और यशोदा चाची जब उन के घर प्रवेश होईलन त मानो वो सचमुच भगवान का रूप धारण कर के प्रकट होईलन जा। जब दादा जी उन लोगन को खुश खबरी सुनाईलन कि उनकर बबुवा का विवाह तय हो गईलबा त वो लोग खुशी से पागल हो गईलन जा और विवाह की सारी ज़िम्मेदारी उठा लेलन जा। दादा जी थोड़ा शर्मिन्दा रहल की बीमारी और बूढ़ापे के कारण वो अपन जीगर के टुकरे की शादी में पूरी तरह से अपन

हाँथ न बटाई सकत बा। ईश्वर से येहि बिनती करत 'हे प्रभु शक्ति दह बबुवा का विवाह ठीक से हो जाई'।

मोहन चाचा और यशोदा चाची को पता रहल कि उन लोगन की सहायता के बिना दादा जी अकेला सब कुछ न सम्भाल सकियन। उन लोगन को ये भी समझ में आ गईल रहल कि दादा जी बीमारी के कारण थोड़ा उदास रहल। बस घर जाने से पहले मोहन चाचा और यशोदा चाची दोनों दादा जी के हाँथ पकड़ के उनकरा साहस देलन जा 'भैया आज से शादी मानह हम लोगन के घर में बा, मुन्ना त हम लोगन के बेटा हवन, हम सब सम्भाल लेवबजा, आप सिर्फ अपन स्वस्थ पर ध्यान रखह। वासुदेव की शादी बड़ी धूम धाम से करब जा सारा गाँव देखते रह जाई। हम लोग बाराती के संग खूब सज धज के नाचते गाते जाईब जा।

जब तक कि शाम होत सारा गाँव में धूम मच गईल रहल कि वासुदेव दुर्गा के साथ शादी करियन और वो भी अगले रविवार को। गाँव लोगन को बहुत अजीब लगल 'इतनी जलदी वासुदेव का विवाह कैसे तय हो गईल। दाल में ज़रूर कुछ काला बा? बलबीर अपन अनपढ़, काली और बद सूरत बहिन का पीछा छुराई के लिये दादा जी को कितना दहेज देले बा? सब लोगन की अपन अपन मरजी। होनी को कौन ताल सकेला, अब त समय ही बताई ये विवाह से केकर भलाई होई। गोरा या काला होने से का गृहस्थी पर कोई बड़ा असर होई सकी?

Chapter 2 - हल्दी

जब शनीवार होईल तब सवेरे सवेरे गाँव के सब लोगन दादा जी के घर के आंगन में एगो छोटा सा बम्बू के पण्डाल खड़ा करनलन जा। पण्डाल उतना खास ना रहल। सूखे आम के पत्ते से खूब सजाया गईल रहल और ईधर उधर एक दो खम्बे पर पेट्रोल के लनेतेर्न टांगल रहल। जब रात का समय होईल त यशोदा चाची गाँव की महीला को अपन साथ लेके पण्डाल में बैठल दिखई देलन। उन महिलाओं में से एक दो नचानिया भी शामिल रहल। एगो गीत गवाय के कार्यक्रम रखले रहलन। हल्दी की रसम खूब नीभैलन जा। यशोदा चाची खूब हल्दी के गीत गईलन खास तोर पे जब दादा जी की बारी आईल हल्दी चढाई के 'हल्दी में तेलवा हल्दी के झाक हो, दुल्लहा के हल्दी चढावे आज हो, एकर बर भागी बेटा हल्दी लगावे आज हो, बैठल बा कुँवर बेटा चढावन हो, भर आगन में बाजे बधैया, पियरी हल्दी सोभे आज हो, हल्दी चढावे आज हो, मारो में होवे गमतिया होवे गमतिया। सोने के कटोरिया में पिसल हल्दी या, अहो दुलहा के चढावे हल्दी तेल हो। पहले हल्दीया बिप्र चढावे हो, बिप्र चरावे हो, दादा चढावे हो, दादा चढावे हो, पाछे सजन लोग.....'

हल्दी की रसम पूरी होते खूब नाच गान शुरू होईल। नचनियन खूब मस्ती करलनजा और जब सब के सब थक गईलन थोड़ी देर बाद एक गमत का कार्यक्रम चालू होल दो गवैयन के बीच। बाजा तबला पर खूब गला फार फार के जुगलबन्दी में अपन अपन कलाकारी प्रस्तूत करलन जा। दादा जी खुसी से मस्त हो के और अपन मन बहलाई के लिये एक दो लोक प्रिय गीत छेरलन। किसी को पता ही ना चलल रात कितनी जलदी कट गईल। दादा जी फिर से चंगा हो गईल। आखिर बबुवा की शादी की खुशी में दर्द अपने आप मुँह मोर के भाग गईल रहल। लेकिन कब तक?

विवाह

शाम के दो बजल रहल और सभी बाराती अंगनवा में तैयार हो के बेसबरी से वासुदेव का इन्तज़ार करत रहल। बाराती को खुश रखने के लिये गन्गू और मुन्गू हर्मोनियम तबला के साथ खूब गीत गा गाके सभी लोगन के दिल खुश करलन जा। वाह भाई वाह! सब लोगन को कितना आनन्द आईल का बोल बा?। मूसा चाचा अपन घोड़ा खूब सजैले रहल। जब वासुदेव अपन घर के अंगन में निकलन त एगो छोटा महाराजा के जैसे दिखाई देतलन। मानो भगवान राम बाल रूप में प्रगत होईल बा। दादा जी के बारे में का बोलबह! उनकर आँक से लोर चूवत रहल और उनकरा देख के ऐसन लगत कि वो थोड़ी खुशी थोड़ा गम के शिकार हवन। उनकर चेहरा से साफ़ साफ़ नज़र आवत बा कि

वो वासुदेव को बाल-वर के रूप में देख कर उतना खुश न रहल। उनकर मन में एगो पछतावा रहल 'हे प्रभु हमरा माफ़ करियह परिस्थिति ऐसन होल बबुवा के विवाह करे के पड़ल बा'। दादा जी वासुदेव को अपन गले से मिला के आशीर्वाद दे के बोलत बा 'बबुवा प्रभु तोहरा खुश रखियन'। हमर पास तोहरा भेंट देई के कुछ नहीं बा'। और अपन रूमाल से आँक पोंछ के मोहन चाचा और पण्डित को देख कर बोलता 'चलह भाई मुहुरत का समय बीतल जात बा'। इतने में यशोदा चाची वासुदेव को एगो हार देवत बा जो सफ़ेद चमेली के फूल से बुनल रहल। फिर थोड़ा पानी पीला के उनकर आरती खूब गीत गा गा के उतारलन। बाद में थोड़ा और पानी पीला के उनकर मुँह में एगो छोटा सा पान खिला के आशीर्वाद दे के बोललन 'जा बेटा बेटिया तोहर बेसबरी से इन्तज़ार करत होई'। वासुदेव हाँथ जोर कर नमस्ते कर के चूप चाप घोड़ा-गाड़ी पे बैठ गईलन। बाराती लोग खूब धोलक और सहनाई बजाई लगलन और मुन्गू हर्मोनियम गला में टांग के उनकर आगे आगे चले लगलनजा। माहोल इतना शानदार रहल कि गाँव के सभी लोग एक एक कर के अपन अपन दुवार से निकल निकल के वासुदेव को आशीर्वाद देने लगलन और दादा जी के पैर छू छू कर खूब अशीर्वाद लेलन जा।

रास्ता काफ़ी लम्बा रहल और दादा जी के साथ पूरा बाराती थक गईल रहल। वासुदेव अपन दादा जी को खुशी देख कर चूप चाप बैठल मन ही मन विनती करत 'हे प्रभु दादा जी को ऐसे

ही खुश रखियह ऐसन महात्मा सिर्फ नसीब वालो को ही मिले ला'।

बलबीर एक साधारन व्यक्ति रहल और उनकर पत्नी और बहिन, दुर्गा, के आलावा इस दुनिया में और कोई नहीं रहल। बलबीर दादा जी जैसन बिल्कुल न रहल। उनकर बहुत कम जान पहचान रहल। मगर बलबीर का दिल बहुत बड़ा रहल। सभी से प्रेम और आदर भाव से बात करत रहल। दादा जी के कहने पर ही विवाह के लिये बहुत बड़ा सजावट न करले रहलन। अपन घर के अंगनवा में एगो छोटा सा पण्डाल सिर्फ दस या पन्द्रह व्यक्ति के लिये सजईले रहल और थोड़ा प्रसाद और सबत बना के रखले रहल। बेचारा बलबीर काफ़ी गरीब रहल। उनकर एगो छोटा सा घर रहल वो भी गोबर से लिपल।

आज वो खुशी से मस्त हो के बहुत बेचैनी से बराती का इन्तजार करत रहल। दूर से जब सहनाई और गाना बजाना की धुन सुनाई देल तब वो जलदी से अपन बहुरिया को जा के बोलता बा 'अहो सब कुछ तैयार बा न बाराती आंगन में पधाने ही वाला बा'। जलदी से अपन पगड़ी कस के लोता में दो तीन आम के पत्ते दाल के हाँथ में लिये बेसबरी से वासुदेव की राह देखे लगल। जब बराती उनकर आंगन तक पहुँचल त इतनी बड़ी संख्या देख कर बलबीर अचानक से हदस गईल जैसे पैर में कुछ जोर

ही ना बा। उन करा अपने आप पर बहुत शर्मिन्दगी आईल कि इतने लोगन को अब कैसे सम्भलियन, कहाँ बैठयन और कौन सेवा करियन जब घर पर कुछ ना बा। बलबीर के चेहरा देख के दादा जी समझ गईल बलबीर परेशान बा। दो मेला के बाद जब तक दुलहा और दुलहिन की आरती परछावन के गीत 'कंचन थारी कपूर सुगन्दी, आओ प्रेम से आरती उतारो जी वर व्याहन आये, दशरथ पुत्र जनक दुवारे, आओ आसीस देय जी, वर व्याहन आये, माता बहिन सब मिल के, प्रेम से आरती उतारो जी वर व्यान आये...। 'गा गाके उतारत जात रहल तब तक दादा जी मौका से लाभ उठा के बलबीर को अकेले में बुला के उनकरा समझावता 'बलबीर हमरो सब कुछ पता बा तोहर मन में अभी का चलत बा। देखह हम बराती को अपन तरफ से सम्भाल लेवब तू बेचिन्तित रह। तोहर शर्मिन्दा के कारण हम अपने आप को दोषी ठेहरावत हई। ये सब मोहन भैया और यशोदा बहिन के मेहमन हवनजा। बाराती को थोड़ा पानी पीलादह भैया हम लोगन के लिये इतना ही काफ़ी बा। हम अपन बेटिया को लेने आईयल हईजा और हम लोगन को इस से ज्यादा और कुछ न चाही। सब ठीक बा न बलबीर ?'

बलबीर दादा जी का बड़प्पन देख कर वो इतना गम्भीर हो गईलन उनकर आँक से आँसू एक का एक कर के बहे लगल। दादा जी के पाँव छू कर बोलता 'हे दादा आप महान हवह आप हमर पगड़ी बचा देलह। हम आप के आभारी हई। हमरे पास

अपन बहिन का हाँथ देने के सिवा और कुछ न बा, आज हम आप लोगन को अपन जीगर का टुकरा हवाले करत हई आप उनकर देख भाल करियह'।

दादा जी को बलबीर की नम्रता देखल न गईल। उनकर हाँथ पकड़ के बोलत बा 'अरे बेटा बलबीर इस से और बड़ा तोफ़ा हमार वासुदेव को कहाँ मिली। चीराग लेके खोजब तब भी न मिली। हमरा काहे शर्मिन्दा करत हवह हो। हम लोगन को न धन या दौलत चाही बस थोड़ा सा प्यार मिल जाई येहि काफ़ी बा। तुम सब लोगन का आशीर्वाद हमर वासुदेव बबुवा के लिये काफ़ी बा। सुनह बलबीर हम सब लोगन दो दिन के मेहमान हईजा आज हमलोगन यहाँ कल कौन ठिकाना ये तो सब उपर वाला के हाँथ में बा। सब उनकर का खेल ही ह भैया। बलबीर बड़े प्यार से मिलीयह भैया न जाने कौन भेष में तोहरा मिल जाई भगवान'।

दादा जी की बात सुन कर बलबीर फिर से खुसी से रो देवत बा। दादा जी उनकरा देख के बोलता 'बलबीर चलह पण्डित शादी की रसम शुरू करत बा'।

वासुदेव को कोई अचरज न लगल उनकर ससुराल की तरफ से बहुत लोग उपस्थित न रहल। सर झुकाये चूप चाप ईधर उधर तूकर तूकर देखत रहल। धीरे धीरे जब दुर्गा अपन पैर शादी के

मण्डप में रखलन तब भी उनकर मन में उत्तेज 'इमोशन' पैदा न होल कि उनकर विवाह होवत बा। ऐसन लगत रहल वासुदेव को इन सब चीजों में कोई दिलचस्पी न बा और उन करा कोई फ़रक ही न परत बा उनकर दुल्हनिया देखेने में की उ कैसन बा? मुखरा सुन्दर बा या नहीं ?

विवाह के बाद जब दोनों घर लौटलन यशोदा चाची दुर्गा को अपन पतो समान घर प्रवेश की विधि निभाईलन और उनकर प्यार से स्वागत करलन।

कुछ समय हो चुकल रहल जब अचानक दादा जी बहुत बीमार हो गईलन। दोनों पैर बूढ़ापे के कारण एक दम कमजोर हो गईल जैसे कि अब वो सिर्फ़ एक दो दिन का मेहमान हवन। वासुदेव दादा जी को देख कर एक दम परेशान रहल। पर दुर्गा दादा जी को अपन भगवान से ज्यादा मानत रहल। जब देखबह त उन की बड़ी सेवा में लगल रहल। फजीर को दादा जी को स्नान करे में सहायता करत रहल, दो पेहर में भोजन खीलावत रहल और शाम के समय पर आर्युवेदिक दवा से खूब उनकर देख भाल करत रहल। दादा जी की सेवा में कोई कमी न होने देवत मानो वैध से ज्यादा।

पूरा एक साल ऐसे ही गुजर गईल रहल। वासुदेव और दुर्गा कभी एक साथ पति पत्नी का जीवन न बितईयले रहल। दोनों अलग

अलग एक ही कमरे में सोत रहल पर उन दोनों के बीच एक अटूट रिश्ता रहल। दुर्गा वासुदेव की सेवा खूब करत रहल। हर सवेरे उठ कर उनकरा स्नान करे के लिये गरम गरम पानी देवतलल, रोटी बनावत और सारा घर का काम काज के साथ साथ एक दो बकरी भी पाल रहल। उनकरा न तो सोना चाँदी की चूड़ियाँ, कंगन या हार से कोई मतलब रहल। दो वक्त की रोटी से वो बहुत खुश रहल। दादा जी के देख भाल करते करते पूरा दो साल कट गईल और दुर्गा को पता ही न चलल कि कैसे इतने दिन बीत गईल। राम नौमी की रात रहल सभी लोग उन लोगन के अंगना में इकठा हो के रामायन का पाठ सुनत रहतलल। दादा जी खटिया में पड़ल खूब आनन्द लेत रहल जब अचानक 'हे राम हे राम' करते भगवान को प्यारे हो गईल।

जब मोहन चाचा आवाज़ लगैलन 'दादा जी अब इस दुनिया में न हवन' तब सब कोई चूप चाप प्रभु से दादा जी की आत्मा की शान्ति की प्रार्थना करलनजा। दादा जी की मृत्यु वासुदेव से ज्यादा दुर्गा को सदमा पहुँचल। दुर्गा दुखी रहलन 'अब दिन भर किस के साथ बात चीत करियन'।

दादा जी की अरथी बड़े स्वभाविक भाव से उठल। उनकर क्रिया करम में कोई कमी न रहल और सब विधि पुस्तक अनुसार किया गईल। घर लौटते वासुदेव अपने आप को बहुत अकेलापन महसूस करलन। कुछ दिन तक दुर्गा के साथ बात भी न करलन।

Chapter 3 -Panch saal Baad -पाँच साल बाद

उन लोगन के विवाह पाँच साल से उपर हो गईल रहल और वासुदेव कुछ ज्यादा सयाना हो गईल रहल। अब धीरे-धीरे एक दूसरे से थोड़ा जान पहचान होने लगल। एक रात बारीश इतना बरसल जैसे आसमान फूट के पूरे घर में उतर आ गईल बा। न वासुदेव न दुर्गा नीचे अपने अपने चटाई पर सो सकलन। घर में पानी इतना चलल कि का बोलबह? दोनों घबड़ाईल रहल। बस पानी से बचने के लिये उन लोगन के पास और कोई चारा न रहल सिवा दादा जी के पुराने खटिये में सोने के अलवा। रात लम्बी और भयानक रहल कि दोनों इतने डर गईल रहल कि अनजाने में एक दूसरे के करीब इतना आ गईलन पता ही न चलल रात कब और कैसे गुज़र गईल। सवेरे जब दोनों जागलन त एक दूसरे से आँक मिला न पा सकलन। तब दोनों के खोपड़िया में बात अपने आप समझ में आईल इसी बंधन से वंश बड़े ला।

जैसे जैसे समय बीतल गईल तैसे तैसे दोनों एक दूसरे के प्रति और करीब हो गईलन। दुर्गा इतनी भोली रहल कि उनकरा पता ही ना चलल कि वो पाँव से भारी बा। हर रोज वासुदेव से कच्चा आम या इमली तोड़े के ज़िद्द करत रहल। एक शाम जब यशोदा चाची दुर्गा को इमली खाते देखलन त समझ गईलन कि वासुदेव

अब बाप बनियन। उनकरा थोड़ा आस्चर्य सा लगल कि वासुदेव न सहि त दुर्गा काहे इस के बारे में उनकरा पहले से कुछ ना बताईलन। घुमा फिरा के जब उनकर से पूछलन तब जा के पता चलल कि बेचारी अनपढ़ को गर्भवती के बारे में का जानकारी होई जब उनकर भवजी बंजर रहल।

यशोदा चाची खुशी से पागल हो कर वासुदेव को आवाज़ लगईलन और बैठा के समझईलन कि ऐसी हालत में दुर्गा की खूब सेवा करे वो अब माँ बनियन। वासुदेव खुशी से इतना उतावला होल का बोलबह? फिर जब बैठ के सोचे लगल त थोड़ा उदास हो गईल कि बच्चवा के देख भाल कैसे करियन। जैसे यशोदा चाची चौकत से बाहर अपन पाँव रखलन तैसे ही वासुदेव दुर्गा को अपन परेशानी बतावत बा। दुर्गा भी कुछ समय के लिये परेशान रहल पर हिम्मत लेके वासुदेव को समझईलन 'अहो आप काहे खामो खाम परेशान होवत हवह अपन पेट काट के थोड़ा कर के गुजारा कर लेवबजा'। दुर्गा की बात सुनते ही वासुदेव का चेहरा पर से सब परेशानी मिट गईल और उठ के शानदार ढंग से बोललन 'दुर्गा तू सच बोलत हवह चलह जो प्रभु की मरज़ी। कल दाई माता से जाके मिल लियह और पता करियह कि कब हम लोगन के घर में फूल खिली'।

'जी स्वामी'।

दूसरे दिन जब शाम को वासुदेव घर लौटलन थोड़ा आराम कर ने के बाद दुर्गा उनकरा जनईलन 'अ हो आज सवेरे दाई माता

ईधर ही से गुजर रहतलन जब हम उनकरा तोकनी त हमरा बतैले बा कि और चार महीने के बाद हम लोगन के घर में बच्चा पैदा होई तब तक हमरा अपन पूरा ख्याल रखे के चाहीं।

दुर्गा की बात सुनते ही वासुदेव बहुत खुश होईल और बोलत बा 'दुर्गा कल से घर अंगना में झाड़ू न लगईय हम सब अन्दर और बाहर का काम सम्भाल लेवब। हाँ, और काम होई त हमर लिये छोड़ दियह। घास बिल्कुल न काटिया और भारी बोझ से दूर रहियह'।

चार महीने बाद

चार महीने हो चुकल रहल। दुर्गा अपन आँगन वा में हनुमान जी की मुर्ति साफ़ कर के महाबीर स्वामी का झण्डा सजावट रहलन जब उनकरा बहुत ज़ोर से दर्द आईल। ज़ोर ज़ोर से जब चिल्लैलन तब उनकर एगो पड़ोसी जो अपन गाय को पानी पीया के निकलत ही रहल सुनते दौड़ल आईल। दुर्गा की हालत देख कर जलदी से उनकरा खटिया में लेता के दाई माता को बुलाने दौड़ल। जैसे दाई माता पहुँचत बा त एगो छोटा सा प्यारा सा बच्चा जनमल। जब वासुदेव को खबर मिलल कि वो बाप बन गईल त काम छोड़ के जलदी से घर लौटलन। अपन वंश को देख के वासुदेव की आँक से आँसू टपक गईल। बच्चे को अपने

हाँथ में उठा के गले से लागाके बोलता 'वाह रे भाई तू कितना प्यारा हवह' और जैसे बच्चा उन पर सू सू करत त हँस के बोलता 'भाई थोड़ा नट खट भी हवह आते ही हमर कपड़ा गीला कर देलह हो अब आगे जाके कौन रास लीला रचैबह। 'भाई तू पूरा के पूरा अपन मैया पर गईल हवह हो। 'दुर्गा उनकी बात सुनते ही मुस्कुरा के बोलता बा 'अहो मुन्नावा तोहर पर गईल बा, गोरा और तोहरी जैसे नीली आँकवा बा। ये त हमरो जैसन कहाँ काला और बदसूरत बा। ये तो मानो हमरो बाल गोपाल जैसे लागत बा'।

'हमरा काहे शरमीन्द करतव हो गोरा काला से का मतलब हम के त अपन दुनिया में जीये के बा। तू हवह त हम लोगन का जीवन की नाया आसान से भवसागर पार कर लियन'।

वासुदेव अपन पत्नी के साथ बात चीत करत ही रहल जब बाहर से एगो आवाज़ सुनाई देल 'अहो बबुवा ज़रा दरवाजा खोलह देखह हमर साथ कौन कौन आईल बा। 'वासुदेव को आवाज़ जानी पहचानी सी लगल 'ये तो यशोदा चाची की आवाज़..'. जलदी से दरवाजा खोल के देखत बा त उनकर अन्दाज़ा सही निकलल। यशोदा चाची अपन महीला के साथ खड़ा रहल। उनकर बगल में तीन नचनीया खूबे सज धज के अपन हाँथ में धोलक और लोता लेके बजाई के तैयार रहलनजा। 'जैसे अन्दर घूसलन

जा जैसे खूब ललना गा गाके नचलन। ऐसन लागत बा जैसे कि यशोदा चाची के ही घर में बच्चा पैदा होईल बा। वासुदेव दुर्गा के पास बैठ के सोचता 'आज उनकर माता, पिता, दादा और दादी जी जीवित रहत त कितना खुश होईतन। चलो प्रभु की कृपा से आज फिर हम लोगन के आंगन में खुशी खिलल बा'।

यशोदा चाची घर लौटने से पहले वासुदेव से पूछत बा 'अरे बबुवा मुन्नावा को कौन नाम से हम बूलावब जा?'

'चाची हम लोगन को नाम के बारे में का पता आप ही कौनो नाम रखदह हो'।

'बबुवा हम पण्डित जी से पूछताछ कर के आईल हई उनकर पुस्तक अनुसार मुन्नावा का नाम 'श' अक्सर से निकलल बा'।

'ये तो बड़ी अच्छी बात हो गईल। 'श' से श्रवण का नाम, दादा जी को श्रवण कुमार की कहानी से बहुत लगाव रहल। हमरा उनकर उपदेश हमेशा सुनावत रहलन 'बेटा हो तो श्रवण कुमार जैसन जो अपन माता पिता को बुढापे में अपन कन्धे पर बैठा के तीरथ यात्रा करवईयन'।

'हाँ बबुवा ई नाम बहुत प्यारा बा। बहु से भी तो पूछलह हो, आखिर माँ हवन उनकर भी त हक बनेला'।

इतने में दुर्गा बोलत हम सब सुन चुकली 'अहो सासू माँ ठीक बोलत हवन श्रवण बहुत सुन्दर नाम बा'।

'त चलह आज से मुन्नवा को श्रवण का नाम से पूकारा जाई 'श्रवण भूपतलाल'।

वासुदेव प्रसन्न हो के बोलत बा 'श्रवण हम लोगन की आँख का तारा बनियन, जो हम लोगन की सेवा करियन और हम से कभी न बिछडियन'। का ये सम्भव होई?

दुर्गा भी वासुदेव की बातों से सहमत रहल श्रवण एगो होनहार आदमी बनियन और अपन माता पिता की सेवा में कोई कमी न छोरियन। का ये भी सम्भव होई?।

आठ साल

श्रवण अब लग भग आठ साल के हो गईल रहल और खूब मन लगा के पढ़ाई करने लगल रहल। दुर्गा उनकर पढ़ाई से बहुत प्रसन्न रहल कि अपन कक्षा में हमेशा पहले आत रहल। छोटे ही उमर में काफ़ी पुरस्कार जीतले रहल। गाँवा के सभी लोगन येही बोलता रहलन श्रवण पूरा के पूरा अपन दादा जी पर गईल बा। श्रवण के गुरु जी बहुत गर्व से उनकर बारे में बात करत रहल और सभी से येही कहत 'ये बालक आगे चलके अपन माँ बाप का नाम रोशन करियन। 'गुरु जी की तारीफ सुन कर वासुदेव और दुर्गा खुशी से पगाल हो जातलन जा। श्रवण को

बहुत प्यार मिलत खास तौर से उनकर माता जी से। पिता के साथ का बोलह मत खूब मस्ती करत। वासुदेव चाहे कितना भी थका रहल वो अपने कन्धे पर श्रवण को बैठा के खूब घूमावत फिरावत रहल। जब देखबह त एक साथ खेलत 'ओका बोका टीन टोलोका लावा लाती चनन काती हई गोड़ वा पचकादे'।

का श्रवण बड़ा हो के श्रवण कुमार ही के जैसन बनियन? ये तो समय ही बताई। कल का होई कौन जानत बा हो!

अकाल

देश में जब अकाल पड़ल त फ़सल पर बड़ा असर होईल। सभी किसान घबड़ा गईलन जा कि अनाज बिना उन सब का कैसे गुजारा होई। वासुदेव और दुर्गा हरोज सवेरे सवेरे उठ कर अपन हाँथ जोर के भगवान से विनती करत कि श्रवण की पढ़ाई में किसी तरह की बाधा न होई। लग भग एक महीना तक गाँव के सारे किसान एक साथ ईकटठे हो के खूब ईन्द्र देवता की पूजा करलन ताकि बरसात फिर से होई और चारों तरफ हरियाली ही हरियाली छाई।

अचानक से जब बादल गरजल गाँव के सभी लोगन के चेहरे पर एगो छोती सी मुसकान दिखाई देल। जब बारीश की पहली बून्द् गिरल त गाँव में खुशी की धूम मचल, सब के सब पागल सा हो गईलन। पर जब एकदम से पानी आई लगल तब सब अपन अपन अंगना में खूब मस्ती करलन जा। लेकिन कुछ दिन

के बाद जब बारीश के साथ बाढ उतरल किसान बेचारे हो गईलन एक दम परेशान। सब अपन अपन छाती पिट पीट के बोले लगलन 'हे प्रभु ये कैसन अन्याय ह। हम पर दया करह। बिन फसल के हम लोगन का जीवन कैसे कटी, हम लोगन अपन कर्जा कैसे चुकावबजा'।

ले लेके भगवान का नाम बैठ के किसान रतत बा सुबह शाम:

'हे दयानीदान और न करह परेशान

हम बालक नादान दया करो दयावान

जनम जनम हम रतते आये तेरो नाम अब देदो मुक्ति का दान

घर से न हो बेघर संतान भूख से मरे न कोई किसान

सूली पे लटकल बा जान बचावह हम लोगन का प्राण

दुखिया न हो बदनाम बुझादो ये तूफान'

जब वासुदेव को पता लगल कि उनकर बैल पानी में बह के मर गईल तब वो पूरी तरह से टूट गईल रहल। अकेला बारीश में भिगत हुवे बैठा छाती पिट पीट के रो रो के बोलत बा 'अब अपन परिवार के देख भाल कैसे करब? हमर श्रवण को कैसे बड़ा आदमी बनावब? 'उनकरा कोई उपाय न लगत कि अपन खर्चा कैसे निकलियन। बहुत घबड़ाहट सी होवत बा कि जोन

उधार साहेबवा से ले ले रहल वो अब कैसे चुकईयन। उनकर दिमाग में ये ही चलत कि 'कौन उनकरा फिर से उधार देई'।

सोचते सोचते वासुदेव पानी में इतना भीग गईल कि उनकरा ऐसन बुखार पकड़लल लग भग तीन महीने तक खटिया में पड़ल रहल।

वासुदेव की हालत देख के दुर्गा बहुत परेशान रहल। लेकिन वो उनकी सेवा में कोई कमी न छोड़लन। श्रवण के भविष्य के लिये थोड़ा कपड़ा की सिलाई और दूसरे के खेत में काम करने लगलन।

बलबीर अपन बहिन की हालत देख कर बहुत दुखी रहल और जब उनसे और सहा न गईल तब एक दिन बैठ कर खूब विचार कर के एगो उपाय निकालत बा कि उन लोगन की सहायता के लिये अपन यहाँ से कुछ देई के पड़ी। पर वो तो खूद गरीब रहल जो बड़ी मुश्किल से दो वक्त की रोटी कमावत बा। मालीक की कृपा से जब उनकर गाय तीन बच्चे पैदा करलन त उन में से दो दुर्गा को भेंट करलन। दुर्गा बड़े भाई का तोफ़ा इनकार न कर सकलन। उनकरा इतनी खुशी होईल कि का बोलबा। उनकर मन में एक ही विचार आईल कि जब बचवन बड़ा हो जयन तब दूध बेच के श्रवण की पढ़ाई में लगईयन। थोड़ी दुखी भी रहलन कि बलबीर भैया अपन पेट काट के कैसे उन लोगन की

सहायता में पड़ल बा। आखिर भाई तोह पिता के समान होवेला शायद उनकर ईरादा श्रवण के भविष पर ज्यादा रहल।

लग भग एक साल बीत चुकल गईल रहल और दोनों गाय के बच्चवन खूब मोटा और तंदरुस्त हो गईल रहल। दुर्गा एगो बेच के एक छोटा सा बैल खरीदलन और जो दूध बेच कर पैसा मिलत श्रवण की पूरी पढ़ाई में खर्चा कर देवतबा। अब तक वासुदेव की तबियत उतनी ठीक ही न रहल रोटी कमाने के लिये हालत से मजबूर होके फिर से बैल गाड़ी चलाना चालू करलन। दुर्गा थोड़ा ज़मीन किराया में लेके खेती बारी करने लगल। दुर्गा काम से इतना बँधा हुआ रहल कि कहा न जाई। श्रवण की पढ़ाई में इतना खर्चा होवत रहल कि एक पैसा भी ना बचत।

एक बार जब गाँव के सब लोगन पिकनिक पर जात रहल और जब वासुदेव और उनकर परिवार को आमंत्रण देलन साथ चलेके त वासुदेव निराश होके कोई झूठ मुठ बहाना बना के न गईलन सिर्फ़ इस लिये कि उन लोगन की बस की बात न रहल। उन के घर में एगो फूटी कौरी न बचल रहल। जैसे सब लोगन चल पड़लन वशुदेव उदास हो के अपन इमली के पेड़ के तले बैठ कर खूब गला फाड़ फाड़ के खूले आसमान को अपन दुख सुनावता -

‘कोनो दिन दाल खा के कोनो दिन भाजी खाके कोनो दिन कच्चू
पुरी हो भैया ला ला सुन सुन हम दिनों गन्ना काटेला।

शुक्रवार के पैसा लेके भैया दोकान जईला हम दोकान जाई ला

दोकान से भैया सामान खरीदेला हो सामान खरीदेला

परिवार सन्ग खाईला मजे में रहेला मजे से सोईला।

हमरे भाई जन समुन्दर जाला लैका फैका लेके सिनेमा भी जाला
हाँ सिनेमा भी जाला

हमर तक्दीर में सिनेमा और समुन्दर कहाँ हमर जीवन घर में
बितेला घर में बितेला।

कोई पैसा पानीसा बहावेला हमर शारीर से भैया पसीना बहेला
पसीना बहेला

कोई पैसा लकरी तरह जरावे लाहमर शारीर भैया घाम में जरेला
घाम में जरेला’।

Chapter 4 - बीस साल बाद

वासुदेव काफ़ी रोगी हो गईल रहल। श्रवण अब बीस साल के हो गईल रहल। देखने में खूब लम्बा चौरा खासा नौजवान लागत रहल। अपन पढ़ाई समाप्त करने के बाद जब तक कोई अच्छी सी नौकरी उनकरा न मिलत तब तक वो अपन माँ बाप के साथ खेती में हाँथ बढ़ाई लगल रहल। वासुदेव श्रवण को धूप में जाने से हमेशा मना करत रहल 'बेटा तू काला हो जईबह। अभी तू जवान हवह, जा छाँव में आराम करह, हम सब कुछ सम्भाल लेवब'। दुर्गा अपन पति देव की बातें सुन सुन कर बहुत गुस्सा करतलन। वो हमेशा बोलतलन कि श्रवण को काम करे के चाहि ताकि वासुदेव का बोझ थोड़ा हल्का हो जाई। दुर्गा वासुदेव का ख्याल बहुत रखतलन। वो न चाहत कि पति फिर से बीमार पड़ जईयन ।

विदेश में लड़ाई के कारण महंगाई चारों ओर फैल चुकल रहल। आंटा, चावल, तेल, चीनी और साबून के दाम न पूछह। किसान को नये कपड़े और अच्छे खाने पीने की चीजें एक सपना सा बन गईल रहल। सरकारी नौकरी त एक दम दूर की बात रहल। फिर भी वासुदेव और उनके परिवार कुशल मंगल रहल।

श्रवण अपने आप को बहुत बदनसीब समझत की अभी तक बेकार बा। सोचत कौनो अच्छी सी नौकरी लग जाई त माँ बाप

की देख भाल सारी ज़िन्दगी करियन। दुर्गा अपन बेटा की उमर बढ़ते देख कर वासुदेव को बोलता 'अहो श्रवण के पिता जी अब मुन्ना बड़ा हो गईल बा उनकर विवाह कर देई के चाहेला'। वासुदेव दुर्गा की बात से बिल्कुल सेहमत न रहल। वो चाहत रहल श्रवण किसी भी सरकारी नौकरी में लग जाई तब उनकर विवाह की बात चलईयन। कब तक श्रवण अच्छी नौकरी की तालाश करियन? ये भी तो सोचने की बात रहल!

एक दिन मोहन चाचा ऐसे ही अपन खेत से निकलत रहल जब रास्ते में वासुदेव के साथ श्रवण से भी मुलाकात हो गईल। मोहन चाचा श्रवण को देख कर आश्चर्य होईलन कि 'कल का छोटा लाडला अब कितना बड़ा हो गईल'। श्रवण का साधारण आदर्श भाव देख के वो अति प्रसन्न होईलन। ऐसन लगल जैसे कि उनकर मन मोह लेलन। उनकरा और एक बात बेहद अच्छी लगल कि श्रवण इतना पढ़ाई कर के भी अपन माँ बाप के कारोबार में पूरे तन मन के साथ हाँथ बढावत बा। जाते जाते उनकर मन में विचार आईल कि श्रवण के अलावा और कोई अच्छा लड़का उनकर पोती के लिये न मिली।

पूरे तीन दिन के बाद किसी बहाना बना के मोहन चाचा वासुदेव के घर पहुँचल। वासुदेव उनकर बहुत आदर करत रहल। जब अपन पोती के लिये श्रवण का हाँथ मांगलन वासुदेव बिल्कुल मोहित हो गईल। दुर्गा बेताब रहलन कि उनकर घर में एगो

पतोह आई और उनकर आंगन में पोता और पोती खेलियन। जब तक मोहन चाचा सोचत ही रहल कि वासुदेव इस रिशता को स्वीकार करियन या नहीं, अचानक से दुर्गा हाँथ जोर के बोलत बा 'मोहन चाचा मानह हम लोगन की तरफ से सब ठीक बा'। मोहन चाचा कुछ घबड़ा सा गईल ई सोच के 'वासुदेव की जबान से ये बात काहे न निकलल। वो श्रवण से पूछताछ कर के उतर देतन का? सही सोचत होई श्रवण से पूछताछ जरूरी बा आखिर ये तो उनकर भविष्य के बारे की बात चलत बा!'

मोहन चाचा सही अन्दाज़ लगईलन कि वासुदेव के मन में एगो उदासी छायल रहल। वासुदेव ई सोच में दुबल रहल 'कि ये तो घोर अन्याय होई कि हम लोग श्रवण से बिना सला लिये उनकर विवाह की बात आगे चलाई लगलीजा और वो भी पता नहीं छोकरीया पसन्द करियन?'। वासुदेव को बिल्कुल समझ में न आवता कैसे श्रवण को बोलियन 'अगर न मनियन त हम मोहन चाचा को अपन सकल कैसे दिखावबजा'।

शाम को जब श्रवण रामायन पाठ से घर लौटत बा त पिता जी से पूछत बा 'पिता जी सुनने में आईल बा मोहन चाचा आज हम लोगन के यहाँ आईल रहल। हमरा उनसे मिलने की बहुत इच्छा रहल, बैठ कर उन के साथ बहुत दिनों से अच्छी तरह

से बात न होईल बा। हाँ त पिताजी उनकर पोती, सावित्री, कैसे हवन?’

‘का तू सावित्री को जाने ले?’ आस्चर्य से वासुदेव पूछलन।

‘जी पिता जी हम दोनों एक ही कक्षा में पढ़ाई करनी जा। और हाँ हमर अच्छी दोस्त भी हवन’।

‘अच्छा!’

‘बड़ी भोली और प्यारी भी हवन, उनकर शादी के न्यौता लेके आईल रहल का?’

दुर्गा जवाब देवत बा ‘मुन्ना मोहन चाचा उनकर रिश्ता लेके आईल रहल’।

‘का?’

‘जी सही सुनलह, तोहर लिये, मुन्ना तोहरे संग अपन पोती की शादी करने के बारे में यहाँ आईल रहल’।

‘आप लोगन उनकरा का जवाब देलह?’

‘मोहन चाचा हम लोगन के बुजुर्ग हवन हम उनकर बहुत ईज्जत करत हईजा, वो हम लोगन पर बहुत एहसान करले हवन और जनम तक उनकर कर्जा चुका न सकबजा। उनकरा हम निराश

न कर सकनीजा। माफ़ करियह मुन्ना तोहर राय लिये बिना हम लोग बात आगे बड़ा देनीजा'।

'आप लोगन की बात हमरी खोपड़िया में बिल्कुल न घुसल हो। घूमा फिरा के बात न बनावह थोड़ा साफ़ साफ़ बोलह'।

थोड़ी धीमी आवाज़ में दुर्गा श्रवण के हाँथ पकड़ के समझावत बा 'मुन्ना हम लोग तोहर विवाह पक्की कर देले हईजा'।

श्रवण के दिल में खुशी के लड्डू फूटे लगल रहल कि सावित्री से बड़ कर और कोई लड़की उनकर जीवन संगिनी न बन सकी। कभी सोच ही न सकत कि ऐसन छोकड़ी संग उनकर लगन होई। अपने आप को खुश नसीब समझता कि उनकर जैसन लड़की चीराग लेके ढूँढबह त भी न मिली। माँ बाप की ओर देख कर थोड़ा शर्मा के बोलता बा 'जो आप लोग उचित समझत हवा'।

श्रवण अपन माँ बाप को खुश देखना चाहत रहल। वो उन लोगन के दिये हुवे वचन पर कोई बाधा न पहुँचाई चाहतलन। उनकर विचार अनुसार जो उनकर माता पिता उन के लिये सोचत और करत रहलन सब उनकर भलाई ही के लिये रहल।

वासुदेव और दुर्गा श्रवण की बात सुन कर बहुत प्रसन्न होईलन कि उन लोगन का लाडला इस रिश्ते से खुश बा। दुर्गा मौका से लाभ उठा के बोलता बा 'देखह मुन्ना हम लोगन को दहेज में कुछ न चाही घर में एक अच्छी सी बहू आ जाई हम लोग के लिये इतना ही काफी बा'।

वासुदेव दुर्गा की बात से बिल्कुल सेहमत रहलन 'तू बड़ी अच्छी बात बोललह। दहेज में का रखल बा? अच्छा से देखबह त एक इन्सान अपन मतलब और फ़ायदे के लिये दूसरे इन्सान पर दबाव दालत बा खास तौर पे लड़की के माता पिता पर जिन पे बड़ा असर होवेला। देखा जाई त उन लोगन को लड़कों वालो से ज्यादा दुख होवेला। ये तो घोर अन्याय ह। अगर हम लोगन का मुन्ना राजी बा त अब देरी कौन बात की। कल ही हम मोहन चाचा के घर जा के लगन का शगुन बांध के आवब जा'।

दुर्गा खुशी हो कर वासुदेव की और देख के बोलता बा 'अहो श्रवण के पिता जी कल मुन्ना को भी साथ ले

जाईब जा'।

'दुर्गा सही बोललह...। मुन्ना कल दो पहर में चलब जा तू सज धज के तैयार हो के रहियह'।

‘जी, पिता जी’

कुछ सप्ताह बाद श्रवण का विवाह सावित्री के साथ कर दिया गईल। जब कि दोनों एक दूसरे को पहले ही से जानत रहलजा इन लोग का प्रेम जलदी से मजबूत हो गईल। सावित्री अपन घर के काम के अलावा खेती में भी हाँथ बढाने लगलन। अपन सास ससूर की सेवा में कोई कमी न छोड़त रहल। वो उन लोगन से बेहद प्यार करत रहल इतना कि जब देखबह त पड़ोसन से उन लोगन की तारीफ करते रहतलन।

एक साल बाद-A year after

विवाह के एक साल बित चुकल रहल जब उन लोगन के घर में एगो छोटा सा प्यारा सा बच्चा जनम लेल। घर में खुशीयाली छा गईल रहल जैसे कि भगवान राम जी पैदा होईल बा। श्रवण खुशी से पागल रहल कि उनकर बेटा बड़ा हो कर एगो डाक्टर बनियन और अपन सभी परिवार की देख भाल करियन। बड़े प्यार से बच्चे का नाम रवि रखा गईल। वासुदेव और दुर्गा इतने खुश रहल कि कहा न जाई। वासुदेव की इच्छा रहल कि रवि बड़ा हो के श्रवण के साथ खूब खेलियन और अपन गोदी में बैठा के उनकरा शिक्षा देई। श्रवण अपन माता पिता के साथ रवि को खुश देख कर उनकर छाती फूल जात रहल।

रवि सिर्फ़ दो साल के रहल जब वो अपन दादा और दादी जी के साथ ही सोवत और उठत बैठत रहल। दादा जी भी येहि चाहत की रवि आगे चल कर डाक्टर बनियन। अपन पतोहीया से कहा करत 'बहू रवि की देख भाल में कोई कमी न होने दियह उनकरा खूब लिखाई और पढ़ाई में ध्यान देई के बोलियह ताकि हमर पोता विद्वान बनियन...। उनकरा हम लोगन की संस्कृति के बारे में बताई के न भूलियह। हम चाहत हई हमर पोता हमर सुपुत्र, श्रवण, जैसन होई और सब लोग बोलियन जैसन बाप वैसन बेटा'।

सावित्री बड़े प्यार से उतर देवता 'जी, पिता जी, हम भी येही चाहत हई हमरो लाडला अपने पिता के जैसे अपने बड़ो का आदर करियन, सभी से मिल जूल के रहियन और रामायन गीता के पाठ सीखियन '।

'बराबर बोलता हो बेटिया आज के ज़माने में हमरो श्रवण जैसन बहुत कम मिली'।

एक रात जब सब लोग सो रहत अचानक बड़ा सा तूफ़ान आईल। हवा और बारीश इतने तेज चलल कि कहा न जाई। पूरा के पूरा घर तोड़ देलन। नुकसान इतना होईल के सब किसान फिर से सड़क पर आ गईल। सब अपन अपन खोपड़िया पे हाथ रख

कर रोवाता कि पहले ही से इतना मुश्किल से अनाज कमावत रहलजा अब कैसे गुज़ारा होई।

वासुदेव सोचते सोचते इतना परेशान होईलन कि उनकर दिल में ऐसन सदमा पहुँचल कि एक बार ज़मीन पर गिरलन त कुछ दिन तक अपाहीज हो गईलन। दुर्गा उन की हालत देख कर बहुत उदास भईलन।

वासुदेव अपन जीवन से तंग हो कर चिल्ला चिल्ला के सिर्फ़ एक ही बात रट रहल 'हे भगवान आप हमरा ई दुनिया से उठालह...हमरा काहे किसी के बोझ बनयले हवह...'. श्रवण पिता जी के चिल्लाने की आवाज़ से कभी नाराज़ न हो वतहल। भगवान से प्रार्थना करत कि उनकर पिता श्री जलदी से ठीक हो जईयन। सावित्री भी अपन आंगन में हरोज माहाबीर स्वामी की पूजा करत और येहि बिनती करत कि उनकर ससूर जल्द से जल्द अच्छा हो जयन और फिर रवि संग उछल उछल के खेलियन।

श्रवण के पास जो थोड़ा सा पैसा बचल रहल पूरा के पूरा पिता जी के देख भाल में खर्चा कर देले रहल। अब उनकरा और कोनो उपाय दिखाई न देवता कि कहाँ से पैसा उठैयन अपने परिवार

की देख भाल के लिये। उनकर पास एक ही रास्ता बचल रहल साहेबवा से कोनो छोटा मोटा नौकरी माँगे के।

दुर्गा न चाहत की श्रवण साहेबवा के यहाँ नौकरी करियन। काहे? शायद उनकरा पूरा भरोसा रहल आज नहीं तो कल बेटवा के कोई सरकारी नौकरी मिल ही जाई और उन लोगन के सारे दुख मिट जाई। लेकिन सावित्री अपन पति के विचार से सहमत रहल थोड़े दिन के लिये कोई छोटी सी नौकरी लग जाई त घर के सब लोग दो वक़्त की रोटी आराम से खा सकियन जा। ससूर की हालत देख कर बहुत चिन्तित रहल। वो सोचत जैसे थोड़ा सा पैसा हाँथ में लगी उनकरा कोई अच्छा सा डाक्टर के पास ईलाज करियन। सावित्री हिंदी और अन्ग्रेज़ी में काफ़ी पढ़ल लिखल रहल। अपने घर के आंगन में एक छोटी सी पाठशाला खोलले रहल जहाँ गाँव के सभी बच्चे शाम को पाठ लेने आत रहल। थोड़ा जो पैसा कक्षा चला के मिलता रवि की पढ़ाई में और ससूर की देख भाल में पूरे खर्चा कर देवत रहल। दुर्गा सावित्री के प्रति बहुत आभारी रहल कि वो बेचारी अपन सारा दिन उन लोगन की सेवा में बन्धल रहल। मानो सावित्री साक्षात देवी मैया के रूप में उन लोगन के घर में बसल बा। सावित्री गाय के पोशन पालन खूब मन लगा के करतलन। शायद येहि

वजह से उन लोगन के घर में दूध की कमी न रहल। सावित्री दूध के पैसा से थोड़ा घर का खर्चा भी चला लेवत रहल।

उनकर बहुत इच्छा रहल अपन ससूर जी के लिये एगो छोटा सा रेडियो खरीदियन ताकि खटिया में पड़े पड़े थोड़ा दुनिया भर की बातें और समाचार से अपन मन बहला सकियन। टेलीविज़न त बहुत दूर की बात रहल। श्रवण माँ बाप से हमेशा कहा करत कि जब उनकरा एगो अच्छी सी नौकरी लग जाई त एगो छोटा सा टेलीविज़न खरीदियन।

सावित्री के विवाह के बाद मोहन चाचा के आगे पीछे और कोई वारिस ना रहल। जब उनकर देहांत होईल त सवित्री को बड़ा सदमा पहुँचल। मोहन चाचा के पास कुछ न बचल रहल सिर्फ़ एक टूटा फूटा बक्सा जिस के अन्दर एगो छोटी सी पुरानी रेडियो पड़ल रहल। सावित्री का मन थोड़ा हल्का सा हो गईल रहल 'चलह ई रेडियो एगो यादगार बन के रह जाई। 'वो खुश रहलन कि अब ससूर जी का मन थोड़ा खुश हो जाई'। पर रेडियोवा बैटरी बिना कैसे चली। सावित्री लग भग दो महीने तक एक एक पैसा बचा के बैटरी खरीदलन। जब रेडियो चालु होल त घर में इतनी खुशी आईल जैसे अन्धेरी रात में रोशनी।

वासुदेव के साथ रवि खूब रेडियो का मजा लेवत। हर शाम ठीक छह बजे श्रवण रेडियो से दुनिया भर की ताजा खबर से लाभ उठात रहल। एक शाम श्रवण खूब ध्यान लागा के समाचार सुनत रहल जब एक सूचना मिलल कि अगर कोई अन्ग्रेजी में पढ़ल लिखल बा और इंग्लैंड में नौकरी करे चाहत बा त जल्द से जल्द अपन नाम और पता मिस्टर पौल मोर्गन के यहाँ भेजे के जिनकर दफ़्तर शहर के ब्रिटिश एम्बेसी में मिली। सावित्री को काम से फ़ुरसत ही कहाँ कि वो बेचारी थोड़ा आराम से समाचार सुनियन। न जाने कहाँ से चाँद निकलल रहल कि सावित्री ससूर जी को चाय देते समय उनकरा भी सूचना सुनाई देईल।

श्रवण अपन कमरे में जैसे प्रवेश होईलन त सावित्री उन से पूछत बा 'अहो रेडियो पर सुनलह विदेश में अन्ग्रेजी पढ़ल लिखल काम करवा की ज़रूरत पड़ल बा'।

'हाँ, हाँ, हमरो भी सुनाई देईल। अब हमरो बस की बात कहाँ जब पढ़ाई लिखाई कितने साल बीत गईल। हमरा तोहर लोगन की चिन्ता बा। पिता जी बिन सहारे खटिया से कहाँ उठत सकत हवन। माता जी अब बीमारी के कारण थोड़ी बहरी और अन्धी भी हो गईल बा। इतना हमर फ़र्ज बनत बा अब माता-पिता जी

की सेवा में पूरी ज़िन्दगी येही बिताई के। अब तू अकेली कैसे सब कुछ सम्भालबह। विदेश जाई के भी तो थोड़ा पैसा ज़रूरी बा। हम लोगन के पास एक फूटी कौरी कहाँ।

‘आप सही बोलत हवह फिर भी एक बार माता पिता जी से पूछ के अपन फ़ोर्म काहे न भर के छोड़ देवत हवह। कौन जाने आप की तकदीर खुल जाई ।’

‘न न हो हमरा काहे शर्मिन्दा करत हवह। पिता जी को इन सब बातें सुन कर बहुत दुख होई और हम न चाहत उनकरा और थेस पहुँची, खास तौर पे माता जी को’।

‘फिर भी सोचलह बात करने में कोई हर्ज न बा’।

‘बराबर बोलत हवह। चलह हम उन लोगन से बात कर के देखी ला’।

वासुदेव खटिया में लेटल रहल, बगल में दुर्गा रामयन की एक दो चौपाय बड़ी कठिनाई से आईना लगा के पढ़त रहल, रवि दादा जी की छाती पर अपन हाँथ में बाल पूस्तक थामे गहरी नींद में रहल। श्रवण और सावित्री दोनों ज़मीन पर दुर्गा के पास आ कर बैठ गईलन। दुर्गा येही सोचत कि शायद अपन बाबु जी के पास रामायन सुनने दोनों आईल बा। उन लोगन को देख

कर दुर्गा अपन आईना उतरलन। वासुदेव सावित्री से बोलत बा 'बहू अच्छा होईल तु आ गईलह। आज हम लोगन को ऊ अध्याय सुनावह जहाँ राजा दशरथ श्रवण कुमार की कहानी सुनावत बा और अपन दुःख भरे स्वर में अपन पश्चाताप करत बा'।

'जी पिता जी' बोलत सावित्री। जैसे ही रामायन के उस अध्याय खोललन तैसे ही रवि उठ के बैठ गईल और आँख मीचते, थोड़ी नींद में बोलत बा 'हम भी कहानी सुनब'।

सावित्री रवि को थका हुआ देख कर बोलता बा 'हमर राजा बेटा तू आराम से सो जा कल तोहर परीक्षा बा रात बहुत ढल चुकल बा। हम तोहरा कल पूरी कहानी सुनावब'।

'न माँ आज ही हमरा कहानी सुने के मन करले बा,' रवि बड़ी जिद्दी कर के बोलत।

वासुदेव सावित्री को समझावत बा 'चलह हमर मुन्ना के लिये थोड़ा सा श्रवण कुमार की कहानी सुनादह बहू शायद वो भी कुछ सिख जयन'।

'अच्छा जैसे आप की आज्ञा,' सावित्री उतर देवत बा।

सावित्री बड़े प्यार से रवि को कहानी सुनावत बा

‘श्रवण के वृद्ध माता-पिता देखे नहीं सकते रहल। याने कि दोनों बूढ़े और अंधे रहलन। श्रवण उन लोगन की बड़ी सेवा करतलन। एक बार माता-पिता जब बोललन ‘बेटा हम लोगन को तीर्थ यात्रा पर जाने को बड़ा मन करत परन्तु क्या करे, देख नहीं सकते, स्वयं यात्रा करने से भगवान के चरणों में हमें शांति मिल जाई। श्रवण माँ बाप की बात सुन कर प्यार से बोलल ‘आप चिन्ता न करह हम आप लोगन के यात्रा करवाब। श्रवण ने दो बड़ी-बड़ी टोकरियाँ लीं। उन्हें एक मजबूत लाठी के दोनों सिरों पर रस्सी से बाँध कर लटका देलन। इस तरह एक बड़ा काँवर बन गईल। फिर उस ने माता-पिता को गोद में उठा कर एक-एक टोकरी में बिठैलन । लाठी कंधे पर टाँग कर श्रवण माता-पिता को तीर्थ यात्रा कराने चल पड़लन। ‘ श्रवण उन लोगन को अनेक तीर्थ स्थान पर भ्रमन करैलन। एक बार वो एक वन से हो कर जा रहतलन जब वृद्ध माता-पिता को प्यास लगल। श्रवण उन लोगन को छाँव में बैठा के अपन घड़ा लेके आस पास बहेती नदी से पानी लाने निकलल’।

रवि की नींद पूरी तरह से गुम हो गईल रहल और जब सावित्री अपन सास की ओर देख कर रवि से कहत बा ‘अब तू सो जा हमरा लाडला’। त वो फिर से जीद्द कर के बोलेलन ‘माता जी आप हमरा पूरी कहानी सुनावह हमरा नींद न आवत बा’।

दुर्गा सावित्री से कहत बा 'बहू अगर रवि को नींद न आत बा त उनकरा काहे न पूरी कहानी सुना देवत हव उनकरा अपने आप नींद लग जाई। उनकर दादा जी ठीक ही कहलन शायद इस कहानी से उनकरा कोई लाभ प्राप्त हो जाई। हम लोगन के श्रवण तो अपन पास ही हवन जो हम लोगन की सेवा करियन अब प्रभु की कृपा होई त रवि तोहर लोगन के श्रवण बन जाई'।

'बराबर बोललत हवह माता जी' सावित्री इतना केह कर फिर से पढ़ाई कायम रखलन:

'हाँ, जब श्रवण पानी लेने गईलन उसी समय अयोध्या के राजा दशरथ वन में शिकार करत रहल। घड़े में पानी भरने की आवाज़ सुन कर उनकरा ऐसन लगल कि कोई जंगली जानवर नदी में पानी पी रहल बा। राजा दशरथ तुरन्त शब्द-वेदी बान चलईलन। बान लगते ही श्रवण भूमी पर गिर पड़लन। राजा जी दौड़त जब वहाँ पहुँचल त अपनी भूल पर उनकरा बहुत पश्चाताप होईल, परन्तु अब होनी को कौन ताल सकेला। श्रवण की आँक से बहते आँसू कहेला अब हमरे माता पिता को कौन सम्भाली और राजा जी से विनती करत बा 'हमरे वृद्ध माता-पिता हमर प्रतीक्षा करत बा कृपा करके उनकरा थोड़ा पानी पीला दह। इतना ही कह कर उनकर प्राण निकल गईल'।

रवि उठ कर माँ से पूछता 'माता जी! माता जी! श्रवण कुमार जी के वृद्ध माता-पिता की देख भाल कौन करलन'। सावित्री उतर देने वाली ही रहल जब उनकर मुँह की बात वासुदेव छिन लेवत बा 'थोड़ा सबूर कर मुन्ना-ध्यान लगा के सुनह सब तोहरा पता चल जाई'।

सावित्री पूरा ध्यान लगाके आगे की कहनी फिर से सुनैलन 'राजा बड़ी शर्मिन्दा होईलन। जल्द से उनकर दुखी, वृद्ध माता-पिता के पास गईलन और उन से अपन अप्राध बता के क्षमा मागेलन। किन्तु माता-पिता के दुख की सीमा न रहल।

वृद्ध पिता इतना ही बोल उठलन 'जिस प्रकार पुत्र वियोग में हम लोग प्राण त्याग रहतै उसी प्रकार तोहर भी अपन पुत्र के वियोग के दुख भोगे के पड़ी'।

श्रवण कुमार का नाम उनकी मात्री-पितृ भक्ति के लिये अमर रहल।

'का इन सब का मतलब निकलत बा हमारी समझ में न आईल', रवि अपन आँख मिच मिच के अपन माँ से पूछत बा।

सावित्री को पता रहल कि रवि अभी छोटा बा और उनकर बस की बात न रहल सब कुछ समझे के। वो उनकरा कहानी का उपदेश साधारण रूप में समझाने के प्रयास में रहलन जब वासुदेव रवि के हाँथ पकड़ के बोलता 'हाँ बबूवा ज्यादा दिमाग

न फोरह तू अभी बालक हवह बड़ा होबह त तोहरा इन सब बातों का मतलब तोहर खोपड़िया में फट से समझ आ जाई। हम इतनाही कह सकब कि इस कहानी का प्रमाण हम लोग के जीवन पर आधारित बा। मानह हर एक घर की कहानी से बिल्कूल मिलत जुलत बा। जो माँ बाप अपन बेटा के गुण गाई और दुनिया उनकर पूजा करेला और जो इसी धरती में एगो मिसाल बन के रह जाई उसी जीवन को महात्मा कहलात बा'।

वासुदेव की बात सुन कर रवि बोलता 'दादा जी हम बड़ा हो के श्रवण कुमार जैसन बनब। अपन माँ बाप की पूरी तरह से सेवा करब,' फिर से गेहरी नींद में सो गईलन।

श्रवण और सावित्री आज जलदी में न रहल। दुर्गा को थोड़ा अजीब लगल कि बात का बा। इतने में सावित्री बोलता 'माता और पिता जी रवि के पिता जी आप लोगन से एगो सलाह मशवरा के लिये यहाँ रुकल हवन'। वासुदेव और दुर्गा के मन में एक ही विचार आईल 'शायद अब ये दोनों हम से अलग होई चाहत बा। अब और कितने दिन तक एक ही चुल्हा जलईयन, हम लोगन की सेवा करियन, अपन जीवन और रवि के भविष्य के बारे में थोड़ा उन लोगन को सोचेने का त हक बनत बा। अब हम लोगन बूढ़ा बूढ़ी अपन जीवन गुज़ार लेवब जा। दुर्गा प्यार से बोलत बा 'हम लोगन से खुल खुल के बात करह...बोलह जो बोलेके बा'।

श्रवण अपन सर झुका के बोलत बा 'परेशान होने की कोई बात न बा। आज रेडियो की एक सूचना में सुनाई देईल कि विदेश में लिखल पढ़ल काम करवा की ज़रूरी पड़ल बा। सावित्री हमरा बोलत बा काहे न हम भी अपन फ़ॉर्म भर के भेज देवत हई ताकि विदेश में कोई नौकरी लग जाई। हम उनकर बात से उतना सहमत नहीं हई फिर भी आप लोगन की राई जानल हम अपन कर्तव्य मझत हई। सावित्री के कहने का मतलब ई बा विदेश में जा के कुछ दिन में थोड़ा पैसा कमा लेवब और हम लोगन के जीवन भी बदल जाई। हम सावित्री से केह चुकली कि ई सब हम लोगन की बस की बात ना बा। हम लोगन के पास एक फूटी कौरी न बा खर्चा करे के। आप लोगन का बोलता हवह जा? का ये ठीक बात बा? हमरा अपन फ़ॉर्म भरती करे के चाही या न, जो आप लोग अच्छा समझबह?'

वासुदेव अनपढ़ ही सही पर एक दम अच्छे विचार का आदमी रहल। श्रवण को समझावता 'मुन्ना आज हम भी रेडियो पर इस के बारे में सुनली, हम तोहरा बोले के ही रहली चलो अच्छा हो गईल कि तोहरा बहुरीया ई बात उठैलन। हम भी येही चाहतै कि तू अपन फ़ॉर्म भर दह। मुन्ना भेजने में कौन नुकसान बा हम लोगन बाद में देखबजा। हम त तोहरा बोलब आज का काम अभी कर दह। कल कौन देखलेबा हो। इस में तोहर परिवार की

भलाई बा, खास कर के रवि के भविष्य के बारे में तुन लोगन का पूरा हक बनेला'।

वासुदेव की बात सुन कर दुर्गा बहुत प्रसन्न होईलन बेटा को काम मिलते ही घर के सभी सदस्य का जीवन थोड़ा बदल जाई।

Chapter 5- दूसरे दिन

British Embassy and the departure.

जैसे ही सवेरा होईल श्रवण सहर के लिये रवाना होईलन। जब ब्रिटिश एम्बेसी पहुँचलन त बड़ी भीड़ देख के घबड़ा गईलन। काफ़ी लोग श्रवण से पहले वहाँ पहुँच चुकल रहल अपन फ़ोर्म भरती करने के लिये। उनकर सामने लाइन में खड़ा रहल रफ़ी चाचा के बेटा, करीम। श्रवण उनकरा देख के बहुत खुश होईलन कि चलो कोई जान पहचान मिल गईल और वो भी उनकर बचपन का दोस्त। दोनों काफ़ी समय तक बात चीत करलन। दोनों के थोड़ा तज्जुब लगल कि फ़ोर्म एक छोटा सा कागज का टुकरा जिस में सिर्फ़ अपन नाम, पता, रूचि (होबिबिएस), अचिवेमेंट्स और शिक्षा के बारे में कुछ जान कारी लिखे के ज़रूरत रहल। श्रवण थोड़ा परेशान रहल कि शायद उन लोगन को फिर से इनतरव्यु पर बुलाया न जाई। जब अपन अपन फ़ॉर्म श्री पॉल मोर्गन के हाँथ में सोपलन पढ़ते ही मोर्गन साहेब उन से पूछत बा 'बाँसुरी कब से बजावेलह?'

'छोटा से'

वो ऐसे ही पूछलन क्यों कि उनकरा और उनके बच्चे, लौरा और रीता, को बाँसुरी बजाने और सुनने में बहुत दिलजसबी रहल। कई बार मोर्गन साहेब बाँसुरी सीखने की कोशिश करलन पर अपन काम की वजह से सीख ना पईलन। उनकर इरादा रहल कि उन की दोनों सुपुत्री फिर से बाँसुरी सीखियन पर अब तक घर पर आके कोई अच्छा सीखानेवाला न मिलल रहल।

मोर्गन साहेब मौका से लाभ उठैलन। उनकरा पता रहल अब वो इंग्लैंड लौटियन त क्यों न श्रवण को अपन साथ ले जईयन। किस को कहाँ भेजा जाई और किस को कौन सी नौकरी में लागाया जाई सब मोर्गन साहेबवा के हाँथ में रहल। श्रवण से पुछत बा 'अच्छा इतना बतावह तू कहाँ से बाँसुरी सीखलह?' श्रवण गर्व से उतर देवत बा 'हम पहले अपन बाबु जी से सीखली और बाद में लग भग एक साल अपन संगीत अध्यापक - संगीत मास्टर मर्टिन बेतनोवेन - से थोड़ा यूरोपियन सर्गम सीखने का मौका प्राप्त होईल। 'मोर्गन साहेब सुन कर बहुत प्रसन्न होईलन और उनकरा देख के बोललन 'तोहर योग्यता देख के हमरा पूरा यकीन बा कि तोहरा कोई नौकरी सीखने में समस्या न होई। हम लोगन के साथ जाने की अपन तैयारी करह'।

श्रवण मोर्गन साहेब की बात सुन कर घबड़ा गईल 'हे राम ई का हो गईल, इतनी जल्दी पैसा कहाँ से आई, हम अपन परिवार को कैसे छोड़ के जाब। हम के साहेबवा को सच सच

बोले के चाही कि हम लोगन के पास एक फूटी कौरी न बा विदेश जाई के। कितनी मुश्किल से यहाँ तक आने को भारा मिललबा, अब उतना दूर जाने के लिये कहाँ से करजा उठाब’

श्रवण अपन सर झूका के तन्क यू (धन्यवाद) करके बोलता ‘साहेब ई सब त ठीक बा इतनी जलदी हम पैसे का बंदोबस्त न कर सकब। अभी अभी तूफान के कारण हमरो सारा ज़मीन गीली हो गईलबा, इस साल सफल बड़ी मुश्किल बा, हम सब का जीवन रूखी सूखी रोटी खा के चलत बा अगर थोड़ा समय देबह त हम कोई न कोई उपाय निकालब इंग्लैंड के लिये’।

मोर्गन साहेब श्रवण की सच्चाई सुन कर उन पर तरस खा के बोलता ‘श्रवण भूपथलाल तू चिन्ता मत करह। हम तोहर जाने का प्रबन्ध जहाँ तक हमर तरफ से होई हम करब। अगले सप्ताह, सोमवर के ठीक दस बजे, हम लोगन यहाँ से जहाज में छोड़ब जा। तोहर पासपोर्ट हम लोग बना देवाबजा तू सिर्फ अपन जनम पत्र छोड़ दियह हमरो सेक्रेटरी के साथ। एक दो कागज़ पर अपन हस्ताक्षर लगा दियह। हाँ जाने से पहले फोटोग्राफर से मिलते जईयह तोहर पासपोर्ट के लिये एक दो फोटो निकलियन’।

‘जी साहेब। पर हम तोहर कर्जा कैसे चुकावब?’

‘प्यारे श्रवण भूपतलाल तोहर पगाढ़ में से थोड़ा थोड़ा पैसा काट लेवब जा’।

श्रवण साहेब की बात सुन कर उनकरा ऐसन लगल जैसे कि पूरा बोझ हल्का हो गईल। एक बड़ी मुसकुराहट के साथ जब दफ्तर से निकलल त करीम पूछत बा 'का होल भाई कोई तोह अच्छी खबर बा? बहुत दिनों के बाद तोहर चेहरा पर एक बड़ा सी मुसकान नज़र आईल बा?'

ठीक बोलता हवह करीम भाई अब ऐसन लगत बा कि हम लोगन के बुरे दिन मिट जाई। माता पिता जी की सेवा खूब करब। एक छोटा सा मजबूत घर बनाब जिस से तूफ़ान भी तकराई त अपने आप शर्मा के सर झूका के मुँह मोर लियन। सावित्री के लिये अच्छे अच्छे कपड़े और गहने खरीदब। रवि को न बोलह उनकर परवरिश में कोई कमी न छोड़ब। उनकरा पढ़ा लिखा के डॉक्टर बनाब'।

इतने में करीम का नाम पुकारा गईल और श्रवण बोलत बा 'जा भैया तोहर बारी आईल बा' और उनकरा समझावत बा 'ठीक ठीक से जवाब दियह'... 'हम तोहरा बाहर इन्तजार करब'।

श्रवण खड़े खड़े कुछ समय चुप चाप सोचत सब कुछ इतनी जलदी हो गईल शायद उपर वाला की मेहरबानी बा। 'वाह रे प्रभु तोहर खेल कौन ताल सकत बा। अब हमरो घर वालों को भी सम्भाल लियह'।

श्रवण के मन में खुशी से ज्यादा गम रहल अपन परिवार को अकेला छोड़ के कैसे जईयन। 'का सावित्री अकेली घर सम्भाल सकियन?' ऐसे अनेकों प्रश्न उनकर मन में दौरत रहल।

करीम जैसे दफ्तर से बाहर निकलत बा श्रवण से गला मिला के बोलत बा 'भैया अल्लाह की दूवा से हम भी सफल हो गयली। अब हम एक साथ सफ़र करबजा। चलह दूर देश में हम लोग मिलके रहब जा'।

श्रवण करीम की बतिया सुन के उनकर जान में अब थोड़ा जान आईल विदेश में किसी के साथ अपन दुख सुख बाँट सकियन। दोनों खुशी खुशी से घर लौटत बा।

जब से श्रवण ब्रिटिश एम्बेसी के लिये घर छोड़ले रहल तब से वासुदेव उनकर घर लौटने की राह देखतलन और प्रभु से येही विनती करत 'हे प्रभु हमर मुनना की रक्षा करियह उनकर नौकरी पक्का कर दियह'।

जैसे पिता जी के कमरे की चौकत पर श्रवण अपन कदम रखेलन उनकर सभी परिवार एक साथ ईकठे हो गईलन। सब के सब बेटाब रहलन जाने के कि उनकर दिन कैसे गुजरल। सभी को एक साथ मुसकुराते देख कर उनकर मन एक दम उदास हो गईल 'कैसे कहियन अब वो सब को छोड़ के विदेश जईयन'। माता पिता जी के पाँव छू कर रवि को अपन गोद में

बैठा कर होठ काँपकपाते बोलत बा 'सावित्री थोड़ा ठंडा पानी पीला दह हो'।

सावित्री को बड़ा अजीब लगल उनकर पति का चेहरा देखके 'काहे उतरा उतरा सा बा। ज़रूर कोई विशेष बात होई जो हम से छुपाई चाहत हवन?'।

श्रवण जैसे ही दो घूँट पानी पीलन उनकर पिता जी हाँथ से ईशारा कर के पूछता 'बेटा तोहर दिन कैसे गुजरल? तोहरा जगह पता करे में कोई कठिनाई होईल का हो, तोहर चेहेरा थोड़ा उतरल उतरल बा?'

पानी का गिलाश सावित्री के हाँथ में दे के बोलता बा 'पिता जी प्रभु की कृपा से कोई कठिनाई न होईल बल्कि सब ठीक बितल'।

'सब ठीक' सुन कर वासुदेव को बड़ा अच्छा लगल और उनकर से एगो और प्रश्न करतन लेकिन श्रवण बोल उठलन 'पिता जी, रफ़ि चाचा का बेटावह, करीम, वो भी वहाँ नौकरी की तलाश में आईल रहल। वासुदेव को अब रहा न गईल फिर प्रश्न करलन 'सुनवाह न बेटा वहाँ का का होईल?'

श्रवण को बात समझ में आईल पिता जी बेताब रहल और उनकरा अब सब कुछ साफ़ साफ़ बताता ज़ारूरी बा। माता पिता के हाँथ जैसे पकड़लन उनकर आँख से आँसू टपक गईल और सुसकाते हुवे कहने लगल 'अब हम आप लोग को का बताई हो,

हमरो नौकरी पक्का हो गईल बा और हम लोग अगले सोमवार को जहाज पड़ब जा इंग्लैंड के लिये। ये सुन कर घर के सभी लोग एक दम से चौंक गईल। सावित्री मन ही मन सोचने लगल 'इतने कम समय में कहाँ से पैसा का प्रबंध होई'। वासुदेव और दुर्गा के देख के का बोलबह वो बेचारे एक दम हदस गईल 'श्रवण पैसा बिना विदेश कैसे जईयन'।

वासुदेव बेटा को नौकरी मिल गईल बा इस से और बढ़िया कौन खबर बा! ई मौका फिर से कहाँ प्राप्त होई? वासुदेव दुर्गा के बूला के उनकर कान में फूस फूसावता 'श्रवण की माँ अपन नाक की फूली, हाँथ का कन्गन और गले का हार कल सोनार के पास जा के पिघला दिय और जो पैसा मिली सब श्रवण के दे दियह। अगर जरूरत पड़ी त सब चाँदी के बरतन बेच दियह'।

'हमरा काहे शरमिनदा करत हवह हम कल ही जाके पैसों का प्रबन्ध करब'।

सावित्री सास ससूर की बात सुनते ही उदास हो के बोलत बा 'आप लोग काहे इतना परेशान होवत हव हो हम खूद सम्मभाल लेवब। अब हम लोगन के बैला कौन काम के रही जब रवि के पिता जी विदेश चला जईयन। कल ही हम बेच दालब और अगर और पैसों की ज़रूरत होई त अपन दोनों कंगन गीरवी रख देब'।

सभी लोगन की परेशानी देख के श्रवण बोलता पैसों की चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं बा 'साहेबवा हमर टिकट और खर्चा सब बन्दोबस्त कर देले बा। हमर पगाढ़ में से थोड़ा थोड़ा कर के चुका देवब। करीम भी येही करियन'।

सावित्री 'ये तो बहुत अच्छी बात हो गईल फिर भी थोड़ा पैसा अपन साथ में रखना ज़रूरी बा'।

'बराबर बोलतवह बहू' दुर्गा अपन घूँघट हटा के बोलता।

दूसरे दिन बैल बेचा गईल और गाड़ी इमली के पेड़ के तले अकेली एक अनाथ के जैसे पड़ल रहल। थोड़ा पैसा जो मिलल सावित्री बहुत सम्भाल के रखले रहल इस लिये की कोई चोर या लुटेरा न उठा लियन।

गाँव में खूब धूम मचल रहल श्रवण और करीम अब विदेशी बाबु कहलईयन सभी लोग बहुत खुश रहलन कि जब वो दोनों विदेश से लौटियन त वहाँ के जीवन के बारे में सुनैयन और गाँव के किसी नगरिक को भी विदेश में अपन जगह बनाई के कोई उपाय मिल जाई। वासुदेव की छाती गर्व से फूलल रहल अब उनकर मुन्ना इंग्लैंड में जाके खूब पैसा कमाई और बड़ा आदमी बन के लौटियन।

रविवार का दिन रहल श्रवण के आँगन में हलचल मचल रहल। गाँव के सभी लोगन अपन अपन परिवार के साथ श्रवण को आशीर्वाद देने के लिये लाइन लगाई ले रहलन जा।

वासुदेव का चेहरा देख के सभी को ऐसन लागत रहल कि उनकर जीगर का टुकड़ा अब उन से बहुत दूर चला जईयन। वासुदेव की आँखों से एक ऐसी कहानी दिखाई देवत रहल जैसे कि कल के बाद अपन बेटवा की सूरत फिर से न देखियन।

सूग्रीम और चन्द्रू दोनों खूब तैयारी के साथ अपन बाजा और धोलक लेके आँगन में बैठल रहल। वो लोग वासुदेव को खुश करने के लिये वहाँ पर रहल। जैसे जैसे शाम बितल तैसे तैसे वासुदेव खटिया में बैठल खूब झूम झूम के अपन कलाकरी से सब के दिल बहलैलन। वासुदेव इतना आनन्द उठैलन कि कहा न जाई। उन सब लोगन के साथ रवि भी खूब मस्ती करलन। भगत दादा जो कभी एक ज़माने में अंगेजी फ़ौज में सीपाही रहल श्रवण से बात चीत करने के लिये बहुत उत्सुकत रहल। उनकरा इंग्लैंड के ठण्ड मौसम के बारे में बहुत जानकारी रहल। वो न चाहत श्रवण इंग्लैंड में जा के बीमारी का शिकार हो जईयन। वो अपने साथ एगो टोकरी ले कर खड़ा रहल जिस में कुछ पुरानी चीजें रहल 'कोत, रुसी टोपी और हाँथ और पैर के मोर्जे'। वो मौका पाके जैसे श्रवण से मिल के उनकरा आशीर्वाद दे के उपदेश शुरु करतबा 'बेटा देखह अपन जड़ी कभी न भुलियह। इंग्लैंड में तन मन लगा के काम करियह। कभी किसी

की बहकावे में न अयह। हमेशा सोचियह तोहर गृहस्थी जीवन और वंश यहाँ बा। अपन बूढे माँ बाप की सेवा में विदेश से भी कोई कमी न छोरियह। दारु और नशा की दवा से दूर रहियह। कभी किसी लड़की के जाल में न पडियह। अब इस बुढापे में हम तोहर से का छिपावब। हम विदेश में जा के पूरी तरह से बहक गईल रहली। हम बिड़ी, जुवा, दारु और बहुत से उलते रास्ते अपनईली। हम एकदम से स्वार्थी हो गईल रहली, हम भूल गईल रहली हमरो एक परिवार बा जो हमर इन्तजार करत बा। आज हम अपन मनमानी के परिणाम भोगत हई। सब लोगन पराया हो गईलन। हम कितनी बार फाँसी लगाने की कोशिश करली। हमर जैसन गलती कभी न करियह। जा बेटा जा हमर अशीर्वाद तोहर संग हमेशा रही। हमर बात पर गौर करियह'।

श्रवण भगत दादा जी की बात सुन कर बोलत बा 'दादा जी हम आप को वचन देवत है कभी किसी के बेहकावे में न आवब हो'।

रात ढल चुकल रहल सावित्री कमरे में अकेली रोवत रहल। श्रवण के सारा सामान एक छोटी सा पेट्टी में पैक कर के रख देले रहल। श्रवण शाकाहारी होने के कारण खाने पिये में थोड़ा नखरा करत रहल। सावित्री न चाहता उनकर पति जहाज में भूखा रहियन और बीमार पड़ जईयन। थोड़ा पापर, भाजी और आम का अचार एक डिब्बा में सम्भाल के बांध देले रहल। सावित्री के चेहरा देख कर ऐसन लगता जैसे श्रवण अब उन लोगन को

हमेशा हमेशा के लिये छोड़ के चला जैईयन। श्रवण सावित्री की आँसू पोंछ के समझावत बा 'सावित्री तू काहे रोवत हवह हम त सिर्फ़ कुछ दिन के लिये जात हई अगर तू हिम्मत हार देबह त हम कैसे जीयब। माता पिता और रवि की देख भाल कौन करी? सब के सब अब तोहर जिम्मेदारी पे बा। हमर जीव अभी तक नहीं मानत बा कि हम विदेश में जा के नौकरी करब। सुनह हो... अगर तू बोलबह त हम कल न जाब'।

सावित्री श्रवण की बात सुन कर घबड़ा गईल 'न रवि के पिता जी ये सब त खुशी की आँसू ह। आप हम लोगन की चिन्ता छोड़ह हम सब सम्भाल लेवब'। इतने में जलदी से अलमारी खोल के एगो लोटा में से पैसे निकाल के श्रवण के हाँथ में रख के बोलत बा 'सम्भाल के रखियह आज भगत दादा बोलत रहलन जहाज में काफ़ी चोर भी सफ़र करेला'।

श्रवण सावित्री की ओर देख कर मुसकुरा के बोलत बा 'भगत दादा हमरो भी बहुत भाषण दे के गईलन बा। उनकर बात में कुछ न कुछ तोह सच्चाई ज़रूर होई। हम पैसा सम्भाल के रखब तू बेफ़िक्र रहियह'।

रात पूरी तरह से ढल चुकल रहल और पता ही न चलल कब मुर्गा बाँक देलन। सब के सब घर के सदस्य अपनी अपनी तैयारी में लगल रहल। वासुदेव की बीमारी हालत और लम्बी सफ़र होने के कारण दुर्गा बंदरगाह न जाई सकलन। सावित्री

सास ससूर को घर में अकेला न छोड़ चाहतलन पर का करियन बेचारी रवि की ज़िदद के कारण उनकरा जाना ही पड़ल।

घर के सामने जब गाड़ी की खट खट की अवाज़ सुनाई देईल तब वासुदेव खुशी से झूम उठत बा जैसे वोहि परदेश जईयन और सवारी उनकर लिये भेजा गईल बा। जोर जोर से चिल्ला के रफ़ी को बुलावत बा 'ईद मुरबक रफ़ी भैया... ज़रा अन्दर आवह भाई। साथ में करीम को भी लावह'।

जब रफ़ी और करीम अन्दर वासुदेव से मिलत बा त वासुदेव हाँथ जोर कर रफ़ी से इतना ही निवेदन करत 'श्रवण तोहर बेटा समान हवन अच्छा से बनदरगाह तक सवारी करियह। और करीम को बोलत बा 'करीम बेटा जा अपन माता पिता का नाम विदेश में खूब ऊँचा करियह। सब से मिल जूल के रहियह। अल्ला का नाम लेते रहिय और अपन रोजा रखिया। श्रवण की देख भाल करियह...सुनह बेटा अब विदेशवा में तोहर अलावा उनकर और कौनो भाई नहीं बा?'

गाड़ी में सामान रखने के बाद श्रवण माता पिता से अशीर्वाद लेने कमरे के अन्दर घूसत बा। वासुदेव अशीर्वाद देते वक्त बोलता 'जा बेटा तोहर सफ़र सफ़ल होई। खूब फूलो फलो दूध में नहावो'। जैसे श्रवण दरवाजे की ओर कदम रखतबा वासुदेव की आँक में आँसू भर कर गिरे लगल। उनकरा न जाने काहे ऐसन लगत जैसे अपन बबुवा को आखिरी बार अशीर्वाद देवत बा। दुर्गा अपन आँक से आँसू पोंछ के श्रवण को समझावत बा

‘बेटा अब हम लोग चार दिन के मेहमान हईजा। जलदी से अईयह। एक बार तोहरा देख लेवबजा त मानो हम लोगन की तीर्थ यात्रा सफल हो जाई’। वासुदेव बोलत बा ‘सही बोलत हव दुर्गा, जब श्रवण आ के हमर चिता जलाई त मानो हमारा मुक्ति मिल जाई’।

सफर काफ़ी लम्बा रहल और गाड़ी में जब जब रवि तंग करत श्रवण अपन बाँसुरी की मीठी ध्वनि से उनकर मन बेहलावत बा। जब सवारी बनदरगाह पहुँचलन रवि चिल्लाह चिल्लाह के बोलत ‘बाप रे बाप इतना बड़ा जहाज! पिता जी हम आप के साथ चलब हम माता जी के साथ घर न जाब’।

‘अरे न रे बेटा हम का हमेशा के लिये विदेश जात हई। हम अपन मुन्नावह के लिये बहुत जलदी लौटब और साथ खिलौवना लाईब’। श्रवण बेटे को कन्धे में बैठा के उनकरा ईधर से उधर झुमा झुमा के गुदगुदी कर के बोलत ‘तोहरा ई जहाज में का, हवाई जहाज में सैर करावब’।

‘न पिता जी आज हम आप ही के साथ चलब, रो रो के रवि जिद्द करता।

सावित्री न चाहतलन कि श्रवण को कोई परेशानी होई जलदी से रवि के हाँथ पकड़ के समझावता ‘अच्छा बेटा जिद्द ना करत बा हो। तोहर पिता जी जब लौट के अईयन त तोहरा पानी के

जहाज में का हवाई जहाज में घुमईयन'। माँ की बात सुन कर रवि एकदम चूप हो गईल।

अब श्रवण के जाने का समय हो चुकल रहल। सभी को प्रणाम कर के, रवि को अपन सीने से लगा के जहाज की ओर सावधानी से सीढ़ी पे पैर रख के उपर गईलन त बड़ी दूर से हाथ हीला हीला के 'राम राम' करलन।

कुछ देर बाद जहाज धुआँ फुकत धीरे-धीरे समुन्दर में बहुत दूर तक निकल गईल।

जब सावित्री घर लौटलन त घर बहुत सूना सूना लगल। सास ससूर को अकेला देख कर रहा न गईल और रो पड़लन। दुर्गा बार बार उनकर से इतना ही पूछत बा 'बहू श्रवण अच्छा से गईलन न हो? अपन भोजन साथ में ले गईल कि नहीं? बेटवा उदास रहल का?'

'सब कुछ अच्छा से बितल, हाँ माता जी उनकर चेहेरा थोड़ा उतरल उतरल रहल जैसे कि उनकरा जहाज में जाई के मन ही न रहल'।

सास बहू की बतियन सुन कर वासुदेव बोलत 'आप लोगन काहे खाम खाह परेशान होवत हवह। शुरू शुरू में थोड़ी परेशानी त सब लोगन को होवेला। श्रवण शेर का बच्चा ह वो कभी हिम्मत

हारने वाला मैं से ना बा। सुनह रात ढल चुकल बा अब आप
लोग जा के आराम करह।

Chapter 6 - जहाज - Ship

Sea journey

जहाज का सफ़र बहुत कठिन रहल। करीम अस्वस्थ होने के कारण उनकरा एक दाना न पचल। उनकरा इतनी उलटी लगल बेचारा और बीमार पड़ गईलन। एक रोग से उनकरा अनेक रोग पकड़ले रहल। वो इतना पतला हो गईलन जैसे वो किसी भूख हड़ताल के शिकार रहल। मोर्गन साहेब जहाज ही में उनकर ईलाज करने में कोई कमी न छोड़लन पर बीमारी फैलते गईल। श्रवण उनकर बहुत देख भाल करलन। करीम न चाहता कि श्रवण उन की तरह रोगी हो जईयन। उनकरा देख के एक ही बात दोहरावता 'भैया हम ठीक हई तू अपन स्वस्थ पर ध्यान दह अब तू भी बीमार पर जईबह त ई जहाजवा में तोहर देख भाल कौन करी। तीन सप्ताह तक वो बिस्तर पर पड़ल रहल। एक रात वो इतना बीमार हो गईल मानो अब किसी वक़्त उन की सांस रूक जाई। डॉक्टर उनकर हालत देख के एक दम परेशान रहल और जब कहलन उनकर बचना बहुत मुशकिल बा त श्रवण एक दम घबड़ा के सोचत 'अगर करीम भाई मर जईयन त उनकर जनाजा कैसे उठी? उनकरा कहाँ जा के दफ़नाय जाई?'

करीम की साँसे कभी भी रूकने वाली रहल। उनकर कंठ सुख गईल रहल और बहुत जोर से प्यास लगल रहल। श्रवण के हाँथ पकड़ के रो के बोलता 'भैया हमरा थोड़ा पानी पीलादह'। जैसे श्रवण उनकरा पानी देलन वो एक घूँट पीते ही धीरे-धीरे अल्लाह

का नाम लेके दम तोड़ देलन। श्रवण एक दम अकेला पड़ गईल और खूब छाटी पीट पीट के रोवत बा। जब करीम के शारीर एक चादर में लपेट के समुन्दर में फेंका गईल श्रवण डर के मारे अपने कमरे में छिपक गईलन। वो इतना घबड़ा गईल अगर वो भी बीमार हो जईयन त सचमुच उनकर देख भाल कौन करी, वो न चाहत उनकर लाश समुन्दर में फेंका जाई। श्रवण करीम की आत्मा की शांति के लिये पूरे दो सप्ताह तक प्रार्थना करलन अल्लाह उन पर रहम करी।

पूरे एक महीना के बाद जहाज सौथाम्प्टों के बंदरगाह पर आके रुकल। लग भग पाँच बज गईल रहल और चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा छाईल रहल। मौसम इतना खराब रहल कि लमबे लमबे खमबे पे लटकल बिजली के बल्ब की रोशानी कुहासे के कारण धुनधलासा हो गईल रहल। कुछ दिखाई ही न देवता आगे का होवत बा। श्रवण निराश हो के चूप चाप अपन कोठरी पे जा के बैठ जातबा। वो बेचैन रहलन इंग्लैंड देखे के।

लग भग छह बजल रहल जब पूरी तरह जहाज बंदरगाह में आके एक लंगार पर लटका के छोड़ा गईल रहल। जहाज के सभी यात्री जब एक एक कर के उतरने लगल तब श्रवण बाहर भीड़ देख के बड़ा आश्चर्य होईल 'बाप रे बाप! इतने लोग!' और आँक फार के अचरच से फिर से दोहरावत बा 'बाप रे बाप! यहाँ त पूरी दुनिया इकटठा हो गईल बा'। झट से अपन टूटी फूटी अंग्रेजी में किसी गोरे नौसैनिक से पूछत बा 'भैया का यही

इंग्लैंडवा ह?’ नौसैनिक को पता रहल श्रवण पहली बार यात्रा करत बा और उनकर मजाक उडा के और हँस के जवाब देवत बा ‘न रे मुख ये तोह सिर्फ सौथाम्प्टों बंदरगाह ह, हाँ ये तोह एक शुरुवात ह। पूरी इंग्लैंडवा देखब त हदस जईबह। तोहर पतलून गीला हो जाई। जब कभी लन्दन जईबह त तोहर आँक फटते ही रह जाई। श्रवण को बात समझ में आईल जिस व्यंग्यात्मक भाव से उनकर साथ नौसैनिक बात करलन वो जरूर एक घमंडी किस्म के व्यक्ति रहल। श्रवण को थोड़ी सी शर्मिन्दगी आईल पर अपने आप को सम्भालते हुए मन में बोलत बा ‘ये तोह हमर मैया के देश न ह जहाँ चारों तरफ प्यार ही प्यार बसेला ये तो परदेश ह हमरा बच बच के हर एक कदम उठाई के पड़ी। इतने में उनकी सवारी आ गईल और मोगन साहेब सब को छोड़ के उनकरा अपन साथ घर ले गईलन।

Chapter 7 - Morgan Saheb साहेब के घर

After the death of Paul Morgan

जब मोगर्न साहेब के घर पहुँचलन त उनकरा कमरे देखा के बोललन 'आज से येही तोहर घर ह'। श्रवण 'घर' सुन कर चौन्क गईलन और उनकरा अपन घर की बहुत याद सताने लगल। जैसे मोगर्न साहेब कमरे से बाहर निकलन तैसे ही एक कुर्सी जो खिड़की के आस पास पड़ल रहल उस पर जाके बैठ के खूब रोईलन। उनकरा किसी चीज पर दिलचस्पी न रहल। बूढे माँ बाप और बीवी बच्चा की याद सताय लगल। मन हीं मन सोचत 'हम तो हई परदेश में गाँव में निकल होई चाँद। जाने किस हालात में होई हमरी जान, घड़ी घड़ी दिल पूछत कब सब से फिर होई पेहचान, कैसे बतावब कितना दिल बा परेशान'।

श्रवण गहरी सोच में दूबल रहलन जब अचानक से दरवाज़ा पर खटखटाहट की आवाज़ सुनाई देल। दरवाज़ा खोल के देखतबा त एक प्यारी सी लड़की चौकत पर खडी बा। श्रवण नमस्ते कर के पूछत बा 'आप कौन?'

वो लड़की और कोई न रहल बल्कि मोगर्न साहेब की बड़ी बेटी लौरा रहलन। थोड़ी अंग्रेजी और थोड़ी भोजपुरी में जवाब देलन 'गुड़ मोर्निंग प्रवन भुपतलाल - नमते श्री प्रवन भुपतलाल'- हमर नाम बा लौरा मोगर्न। हम लोग पहली बार मिलत हईजा- हम

तोहरे साहेब, पौल मोर्गन, की बेटी हई। तोहरा हमरो दाद नीचे बुलैले बा। तू हमरा लौरा कह के बूला सकबह'।

'थैंक यू मैडम- धन्यवाद मैडम। आप जा हम अभी नीचे आवत हई'।

जैसे लौरा अपन सर घुमईलन तैसे श्रवण उनकर से पूछत बा 'मेम साब आप भोजपुरी कहाँ से सीकलह?' वो उतर देवतबा ' हम लोग बिहार में थोरे दिन रहली जा। कभी तोहर संग ई बारे में खुल के बताब'।

श्रवण जब नीचे उतरल त मेंज पर खाना तैयार रहल और भोजन की खूशबू खूब फैलल रहल। मोर्गन साहेब के आमने सामने उन के दोनों बीटियन साथ बैठल रहल। वो लोग बेसबरी से उनकर साथ भोजन बनाई के लिये इन्तजार करत रहल। मोर्गन साहेब खडे हो कर अंग्रजी में अपनी बीटियन का परिचय देवता 'आवह श्रवण ये अपन घर समझह- हमरो बीटियन से मिलह -लौरा और रीता। अफसोस हमरे घर में इतना ही सदस्य बा। तोहर घर जैसन ना बा जहाँ सब परिवार एक साथ रहेला। चलह कुछ खालह तू ज़रूर बहुत भूखा प्यासा और थका होई बह'। श्रवण को थोड़ा अजीब सा लगल कि मोर्गन साहेब की दुल्हनिया वहाँ साथ में न रहलन

श्रवण को बहुत भूख लगल रहल पर शाकाहारी होने के कारण सिर्फ़ रोटी के साथ आलू और गोभी खईलन। खाने के बाद श्रवण

मोर्गन साहेब से प्रश्न करत बा 'कितने बजे उनकरा उठे के चाही और नौकरी कहाँ लगल बा?' इतने में मोर्गन साहेब उत्तर देवत बा 'वाह भाई वाह तू त हमर मुँह की बात छिन लेलह। फिर अपन बीटियन की ओर देख के मुसकुरा के बोलता 'लड़कियों आज से श्रवण हम लोगन को बाँसुरी सिखईयन।

श्रवण सोचे न सकत मोर्गन साहेब उनकरा इंग्लैंड में बाँसुरी सिखाई के लिये बुलईलेबा। वो सोचत ज़रूर कोई और बात बा? का जो श्रवण सोच रहत बा वो सही बा? ये

तो समय ही बताई।

मोर्गन साहेब श्रवण को समझईलन वो उनकर घर ही में रहियन। उनकर काम सिर्फ सब को संगीत सिखाई के और बदले में उनकरा एक संगीत अध्यापक का तनखवाह दियन। श्रवण अपने आप को बहुत भाग्याशाली समझलन कि उनकरा अच्छा काम मिल गईलबा और खाने पीने और रहने का भी बन्दोबस्त आसानी से हो गईल।

मोर्गन साहेब की बीटियन श्रवण से उमर में काफ़ी छोटा रहलन। रीता खूब लम्बा और मोटी और ददूसरी खूब पतली और गोरी। देखने में बहुत सुशील पर उन लोगन के चरित्र के बारे में बहुत कम लोगन को पता रहल। बचपन में माँ किसी दूसरे आदमी के साथ भाग गईल रहल। सब लोग मोर्गन साहेब को दोषी ठहरावत कि वो काम से हमेशा घर से कुछ ज्यादा ही बाहर

रुकतलन। भाई काम ही ऐसा हो तो बेचारा का करियन। दोनों बेटियन काफ़ी दिन बोर्डिंग स्कूल में पढलन। मोगन साहेब अपनी बीटियन से बहुत प्यार करत रहल। बीटियन उनकरा अपन भगवान मानत रहल। शायद मोगन साहेब कभी उन लोगन को माँ का प्यार भी देने में कोई कमी न छोड़ले रहल। उनकरा सिर्फ़ एक ही गम खाईल जात रहल लैकवन थोड़ा सुधर जईयन त मानो उनकर तीर्थ यात्रा सफल हो जाई।

वो इसी कारण एक साधरन व्यक्ति को अपन घर में पनाह देलन ताकि उनकर बीटियन थोड़ी दूसरो की संस्कृति के बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकियन जिस से उन लोगन के जीवन में थोड़ा सुधार आई। मोगन साहेब वो इतना ही चाहत रहल कि बीटियन को थोड़ी जानकारी होई गरीबो की ज़िन्दगी का मतलब का ह; कैसे दो वक़्त की रोटी बड़ी मुश्किल से कामावेलन; अच्छे इन्सान बने के लिये का का न सहलन और कैसे गलत चीसों से दूर रहेलन। ये तोह वक़्त ही बताई मोगन साहेब अपन मकसद में कितनी सफलता प्राप्त करियन।

मोगन साहेब को बिल्कुल पता न रहल श्रवण शाकाहारी रहलन और उनकरा सिर्फ़ आलू और गोभी खात देख कर बड़ा दुख होईल 'श्रवण हमरा क्षमा करियह, हमरा पता न रहल कि तू शाकाहारी हवह और तोहरा सिर्फ़ आलू और गोभी खाई के पड़ल'

|

श्रवण मुस्करा के जवाब देवत बा 'साहेब इस में तोहर कोनो दोष न बा हमरा तोह इन दो सब्जियों से पेट पूरा भर गईल, वाह खाना मजेदार रहल। घर पर तो हम लोगन एक सब्जी से काम चला लेवत हई जा और यहाँ दो सब्जियों मिलल। वाह कितना आनन्द आईल'

मोर्गन साहेब श्रवण की बात सुन कर समझ गईलन वो कितना साधारण और आदर्श वाला इन्सान हवन जो उनकरा शर्मिन्दा न करे चहलन और इसीलिए उनकरा खुशी देखे खातीर ऐसी मीठी बोली बोललन। मोर्गन सहेबवा उनकरा देख के बोलता, 'तू खुश त हम भी खुश। अच्छा कल तू अपन खुद के लिये खाना बना लियह'।

'थैंक यू - धन्यवाद' श्रवण बोलता।

ठण्ड का मौसम रहल काफ़ी बारीश गिरल रहल। घर के सामने ईधर उधर पोखरा में पानी जमा होईल रहल जहाँ मेंडक खूब उछल उछल के दूबकी मार मार के कूद कूद के मजा लेवतलन। अभी सिर्फ़ ठीक पाँच ही बजल रहल, शाम ढल चुकल रहल और चारों तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा छाईल रहल। ऐसन लगता जैसे घनेरी रात। सड़क में बिजली की बाती धीमी धीमी जलत रहल। घर में इतना ठण्ड रहल श्रवण के पूरा शारीर काँप रहल जैसे उनकरा जोर से जुकाम लगल बा। श्रवण अपन बिस्तर पे जाके जलदी से कम्बल लपेट के लेट गईलन कुछ देर बाद जब

थोड़ी गरमी फूँकल त उनकरा ऐसन लगल जैसे जान में फिर से जान आईल बा।

जब श्रवण को अपन घर की याद एक दम सताने लगल तब जलदी से उठ के एगो चिट्ठी लिखलन और सवेरे जैसे मौका मिलल त मोर्गन साहेब से निवेदन करलन उनकर घर भेजे के। मोर्गन साहेब थोड़ा शर्मिन्दा रहल कि काफ़ी दिन बीत गईल रहल जब से श्रवण अपन घर छोड़ले रहल और परिवार को एक भी सन्देश न भेजले बा। लिफ़ाफ़ा अपन हाँथ में लेके बोलत बा 'आज ही डाक घर जा के भेज देवब'। साहेबवा की बात सुनकर श्रवण के मन का बोझ थोड़ा हल्का सा हो गईल।

लग भग आँठव सपताह चलत रहल और श्रवण के सभी घर वाले परेशान रहल कि 'का बात बा अभी तक श्रवण इंग्लैंड से एक सन्देश न भेजले बा'। और जब से रफ़ी चाचा अपन इकलौता लाडला, करीम, की मृत्यु के बारे में उन लोगन को बता के गईल बा तब से वो लोग कुछ ज्यादा परेशान रहल। खास कर के वासुदेव। उनकर मन में बुरे बुरे ख्याल दौड़त रहल 'न कोई चिट्ठी न सन्देश ...हमरो लाडला कोनो बीमारी का शिकार होईल बा का? हे प्रभु हम दुखियन को काहे और कष्ट देवत हवह। हम लोगन से अब और कुछ सहा न जात बा। अब और कितना परीक्षा लेबह। दया करह भगवान। प्रभु हम हाँथ जोर कर आप से बिनती करत है हमरो बबुवा की रक्षा करियह'। सावित्री भी चिन्तित रहल। वो हरोज सवेरे उठ कर सूर्य देवता से विनती

करत 'हे प्रभु हमर स्वामी की रक्षा करिय, ताकत दिय वो स्वस्थ रहियन और उनकरा करीम भाई जैसन रोग न पखड़ी ।

वासुदेव के मन में दिन प्रति दिन हलचल खबलल रहल। रात को नींद न आवत रहल और दिन को चैन कहाँ। वो खटिया में लेते हुवे सिर्फ आँगन की और देखत रहत कब डाकिया सन्देश लेके अईयन।

सावित्री खेत से लौटत ही रहल जब अचानक डाकिया घर के आँगन में अपन पैडल साईकिल की घंटी बजा के चिल्लावत बा 'वासुदेव चाचा! वासुदेव चाचा! देखह विदेश से कोई चिट्ठी आईल बा'।

वासुदेव बीमारी के कारण सिर्फ सुन सकता। खुशी से पागल हो के हल्ला करता 'दुर्गा देखह डाकिया बाबु कोई चिट्ठी अनालेबा ।

'हाँ बाबु किनकर नाम की चिट्ठी आईल बा?'

'चाची वासुदेव भुपतलाल'

'अच्छा, थोड़ा बतईबह कहाँ से आईलबा?'

'चाची बेफिक्र?'

'इंग्लैंड से हमरो लगत बा...ये तोहर बेटवा भेजले बा'।

जैसे दुर्गा अपन हाँथ में चिट्ठी पकड़लन उनकरा ऐसन लगल जैसे श्रवण उनकर सामने खड़ा बा और उनकर हाँथ थाम लेबा। दोनों आँख से आँसू टपकल जैसे बिन मौसम में बरसात।

दुर्गा की हालत देख के डाकिया को रहा न गईल। बड़े प्यार से पूछत बा 'चाची अगर आप की आज्ञा हो त हम चिट्ठिया पढ़ के सुनाई हो?'

दुर्गा जवाब देवत बा 'बेटा बहुत धन्यवाद हमरो पतोहीया पढ़ल लिंकल हवन देखह वो आवत ही बा'।

सावित्री चिट्ठी देख कर बहुत खुश होईल। उनकर सब थाकावट एक ही झटके में चूर हो गईल। उनकरा पता रहल ससूर जी की बीमारी श्रवण को चिन्ता करले बा। सावित्री उत्तेजित रहल और ससूर के कमरे में जा के लिफ़ाफ़ा फाड़ के पढ़े लगल

'पुजनीय माता और पिता जी, मेरी प्यरी सावित्री और हमर जीगर का टुकड़ा रवि। आप सभी को सादर प्रणाम। यात्रा कठिन पर सफल रहल। आप लोगन की याद बहुत आत बा। हम आप लोगन से क्षमा मानगत हई कि पूरा एक महीना सफ़र करने में ही लगईल और इसी कारण हम आप लोगन को चिट्ठी न भेज पईली।

अब आप लोगन को का बोलब। पूरा सफ़र आप लोगन की याद में हम खोयल रहली। पिता जी का ख्याल कुछ ज्यादा ही आवत

बा। सावित्री ठीक समय पर पिता जी को दवा देते रहियह। हाँ माता जी का ख्याल रखियह। रवि से कहिया कि वो अपन पढ़ाई में खास ध्यान देई के। सावित्री तू भी अपन ख्याल रखियह। हम घर का सारा जिम्मेदारी तोहर हाँथ में सौंपेले हई। हमरा पूरा विश्वास बा तू अच्छा से सब कुछ सम्भलबह और अपन कर्तव्य निभयबह।

माना की जहाज बहुत बड़ा रहल फिर भी हमरा बहुत घबड़ाहट सी पकड़ले रहल जैसे एगो डरपोक सफ़र करत बा। हज़ारों मीलौ की दूरी तक सिर्फ़ पानी ही पानी। पता ही ना चलता समुन्दर जा के कहाँ रुकी। आसमान कभी गरज के इतना पानी बरसावतलल जैसे जहाज के साथ हम सब को निगल जाई। बीच समुन्दर में कभी कभी एक दो जहाज नज़र आईल और वो भी दूर से कोई कश्ती साहील में डूब रहल बा। समुन्दर ऐसन लगल जैसे पानी से बना हुआ एक नीला बीस्तर। दूर से जब लहर उठत त बाप रे बाप जैसे बड़े बड़े सफ़ेद तकिये। आकाश में चिड़ियों उड़ उड़ के खूब मजा लेवत रहल। कभी कभी हमरा ऐसन लगत हम एक पिंजरे में बन्द हई जो अपन सब लोगन के प्यार के लिये तरसत बा। मनवा ऐसन लगता काहे न हम भी उन चिड़ियों की तरह खुले आसमान में फट से उड़त फिरत आप लोगन के पास चला जाईब।

साहेबवा हमर खूब ख्याल रखेला। उनहीं के घर में हमर नोकरी और रहने का बन्दोबस्त करल गईल बा। अब कोई चिन्ता करने

की बात न बा हम मजे में हई। हाँ तनखवा मिलते ही हम पैसा भेज देवब।

सावित्री माता, पिता और रवि की देख भाल खूब करियह। हाँ हम घर जल्द वापस लौटब। कभी हमरो भी एक चिट्ठी भेज दियह हमरो मन थोड़ा हल्का हो जाई।

अच्छा आज्ञा दह अपन ख्याल रखियह'

वासुदेव श्रवण की मीठी मीठी बात सुन कर बहुत प्रसन्न होईलन और उनकर मनवा थोड़ा स्थीर हो गईल रहल। हाँथ जोर कर बोलत 'हे दाता आप को लाख लाख धन्यवाद आप ऐसेही श्रवण की रक्षा करियह। धन्य हो मालीक'।

सावित्री बिन खाये पिये चिट्ठी लिखना शुरू करलन। रवि अपनी माँ से बोलत बा 'माँ ! माँ ! पिता जी से बोलियह हमरा एगो हवाई जहाज भेजे के हम अपन दोस्तों के साथ खेलब'। सावित्री हँस के बोलत बा 'अरे मुन्ना छोटा जहाज का, जब तोहर बाबु जी लौटियन त तोहरा एगो बड़ा जहाज में विदेश घुमईयन'।

'सच?

मोर्गन साहेब

एक साल बीत चुकल रहल। श्रवण अपन परिवार की देख भाल के लिये हर महीने पैसा भेजा करत रहल। कभी मोर्गन साहेब

खुद डाक खाना से पोस्टल ऑर्डर्स खरीद कर अपने साथ घर लाया करतलन और श्रवण को याद दिलावतलन 'अपन परिवार के यहाँ ये भेजना मत भूलियह'।

सावित्री सास ससूर की सेवा और रवि की पढ़ाई में उनकर सारा दिन काट देवत रहल। अच्छी डाक्टर और दवाई के असर से वासुदेव अब उठत, बैठत और चलने लगल रहल। दुर्गा कुछ ज्यादा दुर्बल हो गईल रहल।

मोर्गन साहेब श्रवण के स्वभाव से इतना प्रसन्न रहल कि का बोलबह? ऐसन लगत जैसे श्रवण उनकर दिल ही जीत लेले बा। इतना कि अब श्रवण को अपन घर का एक सदस्य के दर्जा देलन और विश्वास करने लगल। वो खुश इस बात पे रहलन कि जब से श्रवण उन के घर में अपन कदम रखलन तब से उनकर दोनों बेटियन एक दूसरे के साथ लड़ना झगड़ना बिल्कुल बन्द कर देले रहलन। पढ़ाई और लिखाई में कुछ ज्यादा ध्यान देवतलन। अपने बदमाश दोस्तों से मिलना जुलना छोड़ देले रहलन। शायद इस लिये कि हर शाम भोजन के बाद श्रवण उनलोगन को बाँसुरी सिखावत रहल और टुईशन के बाद वो इतना थक जात रहल कि पाठ समाप्त करते ही दोनों अपने अपने कमरे में जाते ही सो जातलन।

श्रवण कभी क्रोधित न होवतलन और बड़े प्यार से मन लगा के सिखावत रहल। मोर्गन साहेब को श्रवण के साथ बात चीत करने

में बेहद आनन्द आवत रहल। उनकरा ताज्जुब होवत कैसे एक ही साल के अन्दर वो अपने गुरु मर्टिन बेतनोवेन से यूरोपियन सर्गम अच्छी तरह से अभ्यास कर लेले रहल और इंग्लैंड अईला भी बहुत महीने न बितल रहल कि वो अच्छी अंग्रेजी भी बोलने लगल रहल। मोर्गन साहेब को कभी ऐसा लगल कि श्रवण एक गुणवान पुरुष हवन जो संगीत में अपन नाम कमईयन।

एक शाम मोर्गन साहेब श्रवण को अपने कमरे में बुलैलन। श्रवण काफी घबड़ा गईल रहल। जब मोर्गन साहेब उनकरा बैठने को कहलन श्रवण के दोनों पैर काँपने लगल। श्रवण के दिमाग में खलबली मचल रहल 'साहेबवा काहे हमरा बुलैले बा?

मोर्गन साहेब श्रवण को देख के मुस्कुरा के बोलत बा 'चिन्ता करने की कोनों बात न बा। हम तोहरा एक ज़रूरी काम से बुलईले हई।

'आराम से बैठह और थोड़ा ध्यान दे के सुनियह बेटा, हमरा एक दो सप्ताह के लिये अफ्रिका जाई के परत बा। अब का बोलब काम ही ऐसन बा त हम कैसे ताल सकब। हम चाहत है कि हमर गैरहाजीरी मे तू सारा घर और हमर बेतियन की देख भाल करबह। बस और एक बिनती बा अगर बुरा न मनबह त, ज़रा लौरा और रीता पे कड़ी निगरानी रखिय। हम नहीं चाहत हैय कि वो अपने दोस्तों, बेम्जमिन स्मिथ और पौल जुलिअन, के

साथ बाहर मिलने की कोशिश करियन जिन के चाल चलन बिल्कुल खराब बा'।

'श्रवण की छाती खुशी से उचछलल रहल कि मोर्गन साहेब उनकर काम से इतना प्रसन्न बा कि भरोसे के तौर पर लौरा और रीता के देख भाल की ज़िम्मेदारी उनकर पर सौंप देले बा। पर एक बात उनकर दिमाग मे समझ न आईल 'काहे बेंजामिन और पौल को घर मे घुसने से मना रहल'। श्रवण हिचकिका के पूछता 'साहेब कोई कारण?

मोर्गन साहेब घूर के बोलता 'कहानी लम्बी बा। हम तोहर संग कभी इस के बारे मे बात करब। हमर सर दर्द से फूटट बा। अच्छा काफ़ी देर हो चुकल बा जा के आराम करह'।

श्रवण को थोरी घबड़ाहट होईल अगर मोर्गन साहेब विदेश मे ज्यादा दिन ठहरियन और समय पर पागाढ़ न मिली त अपन परिवार की देख भाल कैसे करियन। मोर्गन साहेब दिल से सच्चा और इमानदार इन्सान रहल। वो जाने से पेहले लौरा के बैंक अक्कोउन्ट मे थोड़ा पैसा जमा कर देले रहल और उनकरा समझा देले रहल कि जब तक वो विदेश मे रुकियन श्रवण को पैसा बैंक से निकाल के समय पे देई के 'हम लौरा के साथ पैसा छोड़ले हई वो तोहरा तन्खवा दियन'।

श्रावण जैसे चौकत के कमरे तक पहुँचलन मोगर्न साहेब से पूछत बा 'साहेब आप को कोई दर्द की गोली चाही?'

'न रे हमर चिन्ता मत कर'।

जब से मोगर्न साहेब अफ्रीका के लिये जहाज पकड़लन तब से उनकी तबियत कुछ ज्यादा ही बिगड़ गईल रहल। पूरे एक महीना किसी अफ्रीका के अस्पताल में उनकर ईलाज के लिये रखा गईल जहाँ वो अपन आखरी दम तोड़ देलन।

मोगर्न साहेब की अचानक मृत्यु से उन की बेटियन बहुत दुखी होईलन। श्रवण का हाल मत पुछह वो इतना रोईलन जैसे कि उनकर कोई अपन खून का रिश्ता बिछड़ गईल बा। उनकरा यकिन ही न होवत इतनी जलदी साहेबवा उनकरा कैसे छोड़ के चल गईलन। उनकरा इतना बड़ा सदमा पहुँचल कि सर पकड़ के बोलत बा 'हे राम अब हमरी हालत का होई? हमर परिवार की कौन दशा होई? हे प्रभु हमर पर थोड़ा तरस खा। तोहर से विनती करत है हमरा कोई दूसरी जगह नौकरी मिला दह'।

मोगर्न साहेब की मृत्यु उनकर बेटियन और श्रवण के जीवन पर बहुत भारी असर पड़ल। थोड़े दिन के बाद एक वकील घर पर जब वसीयत नामा पढ़लन त पता चलल मोगर्न साहेब अपन पूरे होश और हवास मे सारे के सारे जायदाद अपन सुपुत्री लौरा के नाम कर देले रहल। रीता का हक सिर्फ उस समय बनी जब

लौरा जीवित न रहियन। अगर कभी लौरा विवाह कर लियन त आधा हिस्सा के हकदार उनकर पति होईयन।

श्रवण एक दम आश्चर्य में रहल कि मोगन साहेब अपन एक औलाद को काहे दिन दहारे ठुकरैलन जब दोनों बहिन एक साथ एक ही छत के तले बड़े प्यार से बड़ा होईलन। श्रवण की बस की बात न रहल वकील साब से इन के बारे मे पूछताछ करे के। वो मन ही मन सोचत ज़रूर कोई वजह होई। वक़्त ही बतलाई।

वकील की बातों से साफ़ रहल लौरा बहुत दुखी रहल कि उनकर बहिन को जायदाद मे से कुछ न मिलल। ई त साफ़ रहल कि उनकरा बेदखल करा गईल बा। अपन बहिन की हालत देख के बोलत बा 'मेरी प्यारी लाडली बहिन तू न घबड़ा हम तोहार साथ हई, तोहर रक्षा करब। वकील साहेब की बातें से तू न हो उदास, ये तो सिर्फ़ एक सरकारी उसूल ह। हम लोगन एक डाली के फूल हई जा हो, हम कभी न बिछरब जा हो आंधी हो या तूफान'।

रीता बहिन की बातें सुन कर भावुक हो के उनकर हाथ सुराह के बोलत बा 'बहिन जो होईल सो अच्छा होईल। इस में दाद के कोई दोष ना बा। हमरा तोहर से कोई शिकवा गीला न बा। ये सब उपर वाला का खेला ह जो करबह वोही भोगे के पड़ी'।

इतना बोल के मुँह लटकाये लौरा से गले मिला के कमरे से बाहर निकलत बा।

श्रवण के आलावा लौरा और रीता की देख भाल करे के और कोई न रहल। पिता की अचानक मृत्यु से दोनों बहने एक दम टूट गईल रहल। दोनों मे फिर से काफ़ी झगड़ा शुरू होल। कभी इतना डर लगे कि कही आपस मे कोई हादसा न हो जाई जिस से फिर पछताई के पड़ी।

मोर्गन साहेब अपन बचवन के लिये वसीयत नामा मे काफ़ी पैसा छोड़ले रहल। उनकर मृत्यु के बाद लौरा और रीता दोनों अपन अपन मनमानी करने लगलन। पैसा पानी की तरह धरा धर बहाई लगलन। कभी दिस्को त कभी दारु के अद्दा पे। श्रवण इन सब चीसैं से बहुत नफ़रत करत रहल और जब जब उन लोगन को समझाने की कोशिश करलन दोनों हमेशा उनकर बात अनसुनी कर देवतलन। कभी कभी दोनों बहिने श्रवण के उपदेश को एक मजाक बना के रख देवतलन। श्रवण को बहुत गुस्सा आवतलल पर जीव जाँत के चुप चाप सेह लेवतलन। बड़ी चालाकी से श्रवण अपन साथ घीज़त रहलजा ताकि उन लोगन खूब समय तक अपन मौज मस्ती करियन और घर लौटे समय अगर अन्धेरी रात मे कोई चोर या डाकू उन लोगन पर हमला या अपहरन करे की कोशिश करियन त श्रवण उन लोगन से लिपतियन।

श्रवण एगो इमानदार इनसान रहल जो कभी किसी के बहकावे मे न आवतलन। वो अपन संस्कृति से बहुत प्रेम करतलन। हमेशा अपन धोती कुर्ता की पोशाक मे दिखाई देवतलन। जब जब लौरा और रीता के साथ बाहर निकलत रहल वो बेफिक्र अपन वोही हिन्दुस्तानी वस्त्र पहन के निकलतलन। लौरा और रीता अब अपने आप को बहुत ऊँचे घराने के लोग मानने लगल जा। इतना के जैसे दोनों बहिन मे घमंती की चर्बी चढ़ल बा। श्रवण से दूर दूर रहतलन और उनकर परिचय कभी अपने दोस्तों के साथ न करावतलन। जब जब किसी पार्टी मे उनकरा साथ लेके जात रहलन हर बार किसी न किसी बहाने से उनकरा बाहर या गाड़ी मे बैठने को मजबूर करतलन जा। कितनी बार किसी एक छोटे से कमरे मे अकेला रहतलन। शायद येही एक वजह रहल कि कभी उन लोगन के दोस्त श्रवण के बारे मे कुछ पूछताछ न करतलन।

इक रात श्रवण को दिस्को मे जाने से माना रहल और उनकरा बहुत देर तक बाहर गाड़ी में लौरा और रीता का ईन्तज़ार करे के पड़ल। रात भयानक रहल और बर्फ़ इतना गिरल रहल कि गाड़ी पूरी तरह से बर्फ़ की चादर मे लिपटल रहल। श्रवण को ठण्ड थर्थरा के छोड़ले रहल जैसे उनकरा कोई मीरगी की दौरा पड़ल बा। जब लौरा बाहर बिड़ी जलाने निकलल श्रवण की हालत देख कर बहुत घबड़ा गल। लौरा अपन बिड़ी फ़ैक के श्रवण को अपन साथ अन्दर ले जात बा।

जैसे श्रवण अन्दर घुसत बा सभी के सभी लोग उनकरा आँक फाड़ फाड़ के देखत बा जैसे कोई पराया [अलिएन] आसमान से टपक के आ गिरल बा। सब लोगन उनकर हिन्दुस्तानी पोशाक मे देख के उनकर खूब हँसी उड़ावत बा और एक एक कर के उनकर से पूछत बा 'हे दोस्त खूब सज धज के आईल हवह कोई फ्रेन्सी ड्रेस् पार्टी मे जात हवह का, हम सब को भी साथ ले चलह भाई?' श्रवण बड़ी नादानी से सब को जवाब देवत 'अरे ना रे भैया ये तोह हम लोगन के राश्ट्रीय वस्त्र ह। ई त हमर पूर्वज की शान, इसी मे बसल बा हम बिहारी का पहचान भैया। ई वस्त्रवा से जुड़ल बा हमर मिट्टी की जान। गर्व से पहन के करिला इनकर पूरा सम्मान। इतने मे बेंजामिन जो आस पास मे खड़ा रहल चिल्लाह चिल्लाह के बोलत बा 'चलो दोस्तों एक पेग हो जाई 'बिहारी बाबु' के नाम'। श्रवण मुसकुरा के बोलत बा 'अरे वाह क्यों नहीं भाई? खूब हमर नाम का ध्वजा उड़ाव: हमरा तोहर लोगन से का मतलब। तू का जनबह इस पोशाक का वरदान'।

रीता शराब के नशे में चूर श्रवण से बोलत बा 'हेल्लो बिहारी बाबु तू बहुत काँपत हवह आवह हम लोगन के साथ एगो जाम उठावह तोहर ठण्ड एक चूटकी मे भाग जाई। लौरा श्रवण को ज़ोर ज़ोर से काँपते देख कर थोड़ा और घबड़ा गईल और वो भी बहिन की बात दोहरैलन 'बिहारी बाबु, तू हमर प्याला मे से एक घूँट पिलह हो तोहर शरीर मे गर्मी फूँक देई।

श्रवण अपन ज़िन्दगी मे कभी दारु पर हाथ न लगईले रहल। हमेशा सभी से यही कहा करत रहलन: 'डारु कभी न पीयह हो, किसी को भी न दियह हो, भले इन्सान को बुरा बनावत, शराब खराब बा हो, घर से बेघर करत भाई, अपनो मे फूट दालता भाई, सुख शान्ति सब छिन लेवत भाई, दुख ही दुख देवता भाई'।

श्रवण भगत चाचा की बतियन न भूलईले रहल 'चाचा डारु पीते पीते अपन घर, बीबी और बच्चे सब कुछ खो देले रहल। बाद मे जीवन से तंग हो के गले में फाँसी डालने की कोशिश भी करले रहल'। शायद ये भी ईक कारन रहल श्रवण शराब से बेहद नफरत करत रहल और उस से दोस्ती किसी कीमत पे न करे चाहतलन।

पर ठण्ड उनकरा इतना जोर से पकड़ले रहल कि उनकरा अब और कुछ सहा न जात रहल। लौरा और रीता अपन ज़िद्द पे अटल रहलन कि जब तक पार्टी चली तब तक वो लोग वहाँ पर रुकियन। श्रवण परेशान रहल 'अब हमरा कुछ हो जाई त हमर परिवार कैसे जीयन। अब हमरा लौरा की बात माने ही के पड़ी'।

लौरा जो बगल मे ही खड़ी रहल उनकरा बुला के थोड़ा शर्मा के बोलत बा 'अच्छा बोलते हवह त एक घूँट पीलाह दह'। लौरा झट से अपन हाथ से उनकर होंठ पे काँच का प्याला रख के चिल्लैलन 'चियर्स! ये जाम बिहारी बाबु के नाम। अमर रही

आज की शाम से तोहर नाम'। अब का होई अनजाम बाद मे देखब जा परिणाम?

थोड़ी देर के बाद श्रवण नशे मे चूर होके अनाप शनाप बकने लगल। लौरा की समझ में आईल श्रवण के सर पर नशा चढ़ गईल बा उनकरा जल्द से जल्द घर ले जयाई के चाही।

कुछ दिनों के बाद श्रवण बिन रुकावट से और अच्छी अंग्रेजी बोले लगल। धीरे धीरे दारू के साथ बिड़ी भी जलाई के शुरू करलन। दिस्को और पार्टी का नशा उनकर सर पर चढ़ गईल रहल। अपन पूरखो की पोशक फेंक के अब सुट बूत पहने लगल। श्रवण एगो इंग्लिश जेंटलमैन बन गईल। जहाँ जहाँ जात रहल वहाँ लड़कियां उनकर पीछा न छोड़त रहल। लौरा और रीता अपन साथियों से अब उनकर खूब परिचय करावत रहलन। श्रवण अपने आप को हीरो समझने लगल। धोती का नाम अपन कान से सूने ही न चाहत रहल, अब रोटी हाथ से कहाँ खाई जाईल अब त चाकू और कांटा इस्तमाल करत बा। अपन पैसा पानी की तरह खर्चा करत बा। एसो आराम की ज़िन्दगी मे इतना चूर अपन पूरे परिवार की चिन्ता मन से हटा देले रहल। श्रवण एक नई ज़िन्दगी जीये लगल शाकाहारी से अशाकाहारी बन गईल।

लौरा और रीता श्रवण को बड़े प्यार से 'बिहारी बाबु' चिल्ला चिल्ला कर पूकारा करत रहलन और श्रवण हँस हँस के मज़ा लेवत रहल। इन लोगन के साथ एक ऐसी दोस्ती बन गईल कि

कहा न जाई। घर मे बदमाशी फिर से शुरू हो गईल। रीता अपने दोस्तों बेंजामिन और पौल के साथ घर मे रात रात भर खुब मस्ती करत रहल। हरोज घर मे चरस, गंजा और नशे की दवा बाहर से खरीद के लाई जात रहल। श्रवण नशे की गोली भी लेना शुरू कर देले रहल।

लौरा को थोड़ा घबड़ाहट होवता अगर उन की बहिन पहले जैसन फिर से नशे का शिकार न हो जईयन जिन के कारण उन लोगन को बोर्डिंग स्कूल से निकाला गयल रहल। अब किस के सहारे उनकर से बात करियन जब श्रवण भी इस बुरी आदत मे फँस गईल बा। लौरा अपन बहिन को इस मुसीबत से कैसे निकलियन? उनकरा कोई रास्ता न सुझता। बहिन की चिन्ता अन्दर ही अन्दर एक डायन की तरह खाईल जात रहल।

शुक्रवार का दिन रहल जब लौरा थोड़ा पैसा निकालने बैंक गईलन त उनकरा एगो धक्का लगल। कहा न जाई? पिता जी के बचाये हुवे सब पैसे पानी की तरह बहल जात रहल और अगर इस रफ्तार से पैसा खर्चा होते जाई त वो लोग थन थन गोपल हो जईयन। सर हिलाके, एगो लम्बी साँस लेके अपने आप को सम्भालते हुवे मन ही मन मे बोलत बा 'अब हमरा कुछ न कुछ करे के चाही'।

घर लौटते ही लौरा श्रवण पे चिल्ला चिल्ला के पूछता 'रीता कहा बा?'

'मालकिन हमरो पता नहीं ' '

'पता नहीं, त घर पे बैठल का मक्खी मारत रहलह बिहारी बाबु'

'न मालकिन हम त खाना बनावत रहनी और रीता मेम अपने दोस्तों के साथ कब से बाहर निकलल बा'।

'तोहरा पता बा कब घर लौटयन?'

श्रवण सीर हिलाके जवाब देवत बा 'न'

लौरा फिर गुस्सा कर के बोलत बा 'त घर पर अन्डा पारत रहलह का?'

श्रवण फिर चुप चाप रहल।

लौरा को अपने आप पर थोड़ा शर्मिन्दगी आईल श्रवण पर न जाने काहे अपन गुस्सा उतरलन।

बाद मे जब रीता घर पर अईलन श्रवण उनकरा बतावत 'लौरा मेम थोरे गुस्से मे आज बा वो आप के बारे मे पूछत रहलन'।

'अभी हम उनकर से बात करीला'।

रीता लौरा के कमरे मे जैसे अन्दर जात बा त देखत बा उनकी बहिन अपन चश्मा लगा के चुप चाप कुछ पढ़त बा। धीमी सी अवाज़ दे के बोलत बा ' दीदी बिहारी बाबु हमरा बोललन आप हमर बारे मे पूछत रहलह'।

'हा बैठ तोहर से एगो बहुत ज़रूरी बात करे के बा'।

'अच्छा कौन सी बात? हम से कोई गलती हो गईल बा का?'

'कौन सी गलती?'

'तू खुद ही जानत हवह अपन बचपना छोरह अब सुधर जा न त हम सब सड़क पर आ जाईब जा'।

'हमरा आप की बात समझ मे न आईल बा ज़रा खुल के बतावह'।

'अब हम इन सब बेफुजूल चीसों पर पैसा बहाना बन्द करब जा। बात समझ मे आईल कि नहीं?। बैजामिन और पौल को यहाँ आने से मना करियह'।

'आप का बोले चाहत हवह?'

'आज से, इ घरवा मे, नशा की दवा बन्द। अगर तू हमरी बात न मनबह त हम तोहरा घर से बाहर निकाल देवब।। समझी'।

'आप काहे हमर पर इतना गुस्सा निकालत हवह। आप भी इस में शामिल हवह। हमरा काहे अकेली दोषी ठेहरावत हवह'।

'बस आज के लिये इतना ही काफ़ी बा। हम इस विषय पर इस से ज्यादा और बहस न करब। हमर फ़ैसला अटल बा। और कोई

माई के लाल बदल न सकियन। बात तोहर भेजा मे घुसल कि न?’

रीता मुँह लटका के सीधे अपने कमरे मे घुस गईल। रीता छोटे ही से बड़ा नटखत रहल। उनकर पिता और बहिन का प्यार बिगड़ले रहल। उनकरा बिल्कूल अच्छा न लगल जब लौरा उची अवाज़ मे बात करलन। रीता को किसी का परवाह न रहल। वो कभी किसी की बात न सुनत रहल खास तौर पे लौरा की। लौरा हमेशा अपन बहिन की भलाई चाहतलन पर उनकी बातें मे चाहे कितनी भी सच्चाई रहल रीता हमेशा उनकर बात ताल देवतलन और कभी न सोचतलन कि ये सब उनकर फ़ायदे के लिये कहा जात रहल। अपन कमरे मे जाते ही, खिड़की बन्द कर के, मुँह फूला के खुब जोर जोर से रेडियो सुने लगल।

रीता अपन मनमानी कुछ ज्यादा ही करे लगल। हरोज शराब के नशे मे एक हाथ मे बिड़ी और दूसरे हाथ मे दारु की बोतल झुल्यते घर लौटतलन। उनकी दशा देख के श्रवण को घृणा आवत। कई बार श्रवण उनकर से बात करने की कोशिश करले रहलन मगर सब बेकार। जब उनकरा फिर से समझाने का प्रयास करलन 'छोटी मेमसाब आप अभी जवान हवह बिड़ी और शराब तोहरा शोभा ना देवे ला, हम आप से विनती करत हई आप इन सब बुरी आदत को छोड़ देबह त बेहतर बा। हमर कहने का मतलब ई बा कि इस से दूर रहबह त अच्छा बा, इस में कोनो फ़ायदा न बा बल्कि सिर्फ़ नुकसान बा'। रीता श्रवण

की भाषन सुन कर हँस के अचेपुर्न हो के उनकरा मुँह तोड़ जवाब देले रहलन 'लो देखह! उल्टा चोर कोतवाल को कैसे डाँटत बा। ओई! हेल्लो । बिहारी बाबु, काहे न जा के अपन मुँहवा शीशा मे झाँक के देखत हवह, आज से तू भी काहे न दारु, बिड़ी, चरस और नशीली दवा छोड़ देवत हवह। अपन उपदेश किसी और को जा के सुनैयह यहाँ तोहर दाल न गली। कल का परदेशी हमरा समझाई कि का अच्छा और का बुरा बा और हमरा का करे के चाही। ई त हद से ज्यादा अपन सीमा पार करत बा'। रीता बिगड़ल रहलन पर सच बोले मे कभी न हिचकिचातलन। आज वो फिर से सच ही बोल्लन कि जब जब लौरा घर से बाहर काम पे निखलत श्रवण रीता और उनकर दोस्तों के साथ मिल कर खूब शराब पीयत रहल और नशीली दवा के साथ जूवा भी खेलत रहल। श्रवण जो हमेशा से पाठ पूजन मे लिप्त रहल इस गन्दगी में फँस के, सब कुछ भुला के, जूवारीयन के सन्ग जूवारी बन गईल रहल। अपन पूरी कमाई मौज मस्ती मे लुता देवतलन।

रीता की बात सुन कर श्रवण को ऐसन ठेस पहुँचल उनकर पूरी बोलती ही बन्द हो गईल। शरमिंदगी से लाचार और बेबस हो कर न जाने कहाँ अपन मुँह छूपईयन। उनकरा ऐसन लगत जैसे कि चूल्हू भर पानी मे डूब के मर जईयन। एक ही उपाय सुझट रहल वहाँ से बस एक कुत्ता के जैसे अपन दूम दबा के चुप चाप निकले के। श्रवण का जीवन पूरा बरबाद हो गईल

रहल। अब वो इस लज्जच्छाक (दल दल) जीवन से कभी छुटकारा पाई सकियन कि नय ये तो वक्त ही बताई।

श्रवण काफ़ी गुस्से मे रहल। अपने कमरे मे बैठल अपने आप से बोलता 'रीता मेमसाब आज कुछ ज्यादा ही बक बक करले बा। इतना घोर अपमान हम सपने में भी न सोचे सकत। यहाँ पर हमर मोल एगो कुत्ता से कम ना बा'।

श्रवण परेशान रहल। अपन दिमाग कुछ देर तक चलईलन त उनकर खोपड़िया में समझ आईल कि 'अब यहाँ ज्यादा दिन तक न रुके सकियन और अपन जाने की तैयारी करे के चाही?' ये तोह सब ठीक बा पर कहाँ जईयन जब उनकर जेब मे एक फूटी कौरी ना बा? पैसा चोरी करियन का?

दूसरे दिन जब लौरा श्रवण को रसोई मे चाय बनाते देखलन त उनकर उतरा उतरा चेहरा देख के समझ गईलन कि श्रवण जरूर किसी बात से खुश न बा। बड़ी नरमी से पेशा आवता और प्यार से नीची आवाज़ मे पूछत बा 'हे बिहारी बाबु आज तोहर चेहरा पर इतनी उदासी काहे बा? अच्छा तोहरा हम से कोई शिकवा गीला बा का हो?।

श्रवण धीमी आवाज़ मे उत्तर देवता 'मेमसाब आप से हमरा कोई शिकायत नहीं बा'।

'कोई त बात बा। हमरा ऐसन लगता कि रीता तोहरा कुछ बोलले बा?'

लौरा को सब पता रहल काहे श्रवण अपन मुँह गिरयले रहल। रीता हमेशा किसी न किसी को कुछ न कुछ बोलल करे ला। लौरा मन ही मन मुस्कुरावता और फिर बोलत बा 'रीता की बचपना अभी तक न गईल बा। हमेशा छोटी छोटी बातें पे आपे से बाहर हो जाला और टूट पड़ेला'।

जैसे रसोई से निकलता सर घूमा के श्रवण से बिनती करता 'बिहारी बाबु अगर हम लोगन तोहरा अनजाने मे कुछ बोल देले हईजा त हम को अपन समझ के माफ़ कर दियह'।

लौरा की मीठी बतियन सुन कर श्रवण सोचता 'जब यहाँ सब कुछ अच्छा खासा चलत बा, खाना खूब मिलत बा, कोई कष्ट नहीं बा। हमरा ऐसन लगत बा कि उपर वाला लौरा को परी के रूप मे भेजले बा हमरा मनाई के लिये। धन्य हो प्रभु! अगर येही तोहर मर्जी। चलह हम अपन बोरिया बिस्तर फिर से यहीं पर बिछा देवत हई'।

रीता अपने दोस्त बेंजामिन और पौल के चक्कर मे पूरी तरह से फँस गईल रहल। रीता दिन प्रती दिन नशे मे इतना चूर कि अपन होश न सम्भाल सकतलन। उनकरा अपन पढ़ाई मे बिल्कुल दिलचसबी नहीं रहल। वो इतना लपरवाहि हो गईल कि यूनिवर्सिटी धमकीयन दे चूकल रहल अगर फिर से अपन परीक्षा

मे अशफल होईयन त उनकरा यूनिवर्सिटी से हमेशा हमेशा के लिये नीकाल दिया जाई।

रीता को इन सब धमकियो से कोई फर्क ना परत बा। पर लौरा को रीता के भविष्या के बारे मे बहुत चिन्ता रहल। वो अपन छोटी बहिन की बुरी आदत देख कर पहले ही से बेहद परेशान रहल और उपर से यूनिवर्सिटी की चिट्ठी पढ़ कर एक दम टूट गईल रहल। लौरा भी रीता को कितनी बार डरा चुकल रहल अगर पढ़ाई मे ध्यान न दियन त उनकरा घर से निकाल दियन। लौरा फिर से रीता को घर से बाहर निकालने को सोचले रहल पर छोटी बहिन के प्यार के आगे हर बार मार खा जात रहल। कैसे बोलियन? कैसे समझईयन? उनकर दिमाग से कोई उपाय ही न सूझल? वो अपन लाडली बहिन को खोना न चाहतलन। उनकरा पता रहल कि एक बार वो घर छोड़ईयन त वो सीधे नरक की ओर बढ़ ते जईयन। उनकर मन मे एक डर सा रहल रीता फिर से न वोही जवाब दियन 'कोई बात नहीं हो हम बेंजामिन के यहाँ चली जाईब। उनकर दिल और घर बड़ा बा हमरा पनाह दियन'।

लौरा के पास कोई चारा न बचल रहल सिवा रीता को फिर से प्यार से समझाई के। पर जब तक कोई उपाय निकलियन तब तक रीता की बुरी आदत और बिगड़ते गईल।

कुछ दिन के बाद।

एक रात लौरा अपने दोस्तों के साथ फिल्म देखने बाहर गईल रहल। श्रवण रीता की देख भाल के लिये घर ही पर रुकल रहल। श्रवण थोड़ा थका रहल और अपने कमरे में मजे से गेहरी नींद में सोवत रहल जब एक अजीब सी महक उनकर कमरे तक पहुँचल जो उनकर नींद पूरी तरह से उड़ा देले रहल। जैसे कुछ जलत बा। उनकर दिमाग में आईल 'कहीं कमरे में आग लगल बा का?' श्रवण एक दम घबड़ा के ईधर- उधर पता लगाई की कोशिश करलन। पर जब उनकर कमरे में कुछ दिखाई न देल त वो जलदी से बाहर निकल के गलियारा में आ के खड़ा हो गईलन। अचानक से जब धुवाँ की धार उनकर आँख और नाक तक पहुँचल त वो एक दम ताजुभ हो गईलन 'बाप रे बाप! ई त रीता के कमरे से आत बा। बाप रे! ई का होवत बा! दरवाजे के छोटे छोटे छेद से भी धुवाँ रेल गाड़ी की एन्जिन की तरह काहे निकलत बा। जरूर कुछ गड़बड़ बा'।

जब दरवाजा खोल के देखत बा त श्रवण एक दम चकित हो जात बा। पूरे के पूरे कमरे धुवाँ में डुबल रहल जैसे तावा पर से रोटी गिर के आग में जल के कोयला हो गईल बा। श्रवण अपने ज़िन्दगी में ऐसन धुवाँ कभी न देखले रहल। श्रवण को थोड़ा अजीब लगल। खोपड़िया खुजला के बोलत बा 'ई कैसन धुवाँ न आग न चिंगारी? जब थोड़ा आगे बढ़त बा त और घबड़ा जात बा। 'बाप रे बाप यहाँ ई सब का होवत बा? कमरे के एक कोने में रीता नशीली दवा का इनजेक्सन लगा रहत बा और दुसरे कोने में बेंजामिन और पौल बारी-बारी खूब गाँजा फूँकत बा।

रीता की हालत देख के श्रवण को बड़ा गुस्सा आईल पर उनकर हाथ बन्धल रहल। श्रवण रीता से फिर अपन मुँह लगाई के उचित न समझलन। ई त सही सोचलन। अब बात करने से कौन मतलब जब वो खुद इस कीचड़ मे शामिल रहल। कितनी बार वो उन लोगन के साथ मिल कर ऐसे ही दम मारले रहल। अब उनकर दिलवा मे काहे आग लगत बा? अब कैसे मना करियन?

ये सब देख के श्रवण को इतना शर्म आईल कि उनकर माथे पे पानी चूवे लगल। बेसबरी से लौरा की राह देखे लगल। जैसे लौरा घर के दरवाजा खोलल श्रवण रीता की शिकायत करलन त लौरा अपने आप पर बहुत गुस्सा करत बा और दोषी ठेहरवत बा 'अगर आज हम अपन बहिन और उनकर घटिया दोस्तों के साथ मिल कर डारू और चरस न पीती त ये दिन देखे के न परत। ई हमर गलती ह कि हम उन लोगन के छूट देनी अब हमरा भोगे के परत बा'। फिर भी बहिन की रक्षा के लिये अपन कर्तव्य सोचलन। रीता के कमरे खोल के चिल्ला चिल्ला के बोलता बा 'रीता ई सब का होवत बा। ई कमरे में का चलत बा? अब हम और बर्दाश न करे सकतैं। ई हमर हुकुम ह तू अपन दोस्तों को अभी के अभी यहाँ से दफ़ा करह और कभी अपन मनहूस शकल लेके फिर से दोबारा न अईयन। अगर कभी ईधर उधर घर के आस पास ई लफंगवन अपन मर्दानगी दिखाई के कोशिश करियन त हमर से बूरा और कोई न होई। हाँ, अगर ज़रूरत पड़ी त हम उन लोगन को बन्दूक से उड़ा देवब'।

रीता को अपने जिगरी दोस्तों बेंजामिन और पॉल के सामने बहिन की बतियाँ इतनी कड़वी लगल कि वो शरमिन्दगी से पानी पानी हो गईल। उनकरा पूरा यकिन रहल कि उनकर बेज़ती श्रवण के कहने पर ही होइल बा। रीता को श्रवण पर इतना गुस्सा आईल जैसे जीते जी उनकर प्राण निकाल के फेंक दियन। रीता अपन खोपड़िया चलैलन मौका मिलते ही श्रवण को एक ऐसन सबक सिखैयन उनकर नाना और नानी एक साथ याद आजईयन और दिन में तारे नज़र आई।

Attempted Suicide - खुदकुशी

जैसे बेंजामिन और पॉल कमरे से बाहर निकललन रीता अपन सब खिड़की खोल के जोर से रेडियो चलैलन। पहले से जो नशे की दवा अपन अलमारी छुपा के रखले रहल एक ही झटके में लील गईलन और कुछ देर बाद ज़मीन पर बेहोश हो के गिर गईलन।

उनकर शरीर एक दम घोंघा जैसन ठंडा हो गईल रहल जैसे कि उनकर बचने की अब कोई उम्मीद न रहल। किसी को कुछ पता कहाँ रीता कौन हालत में बा। लौरा के सर में पहले ही से बहुत दर्द रहल। वो थोड़ी देर के लिये अपन कमरे में बती बुझा के शान्ति से आराम करे चाहत रहल। रेडियो की ऊँची ध्वनि लौरा को बिलकुल सहा न गईल। लौरा हाथ में पानी लिये जब रीता के कमरे में घुसत बा त सब खिड़कियन खुलल रहल। ज़ोर

ज़ोर से परदे उड़त रहल और ठण्ड हवा बहत रहल। लौरा ठण्ड कमरे को देख कर उनकरा बहुत गुस्सा आईल और चिल्ला चिल्ला के बोलता बा 'रीता कहाँ हवह। कहाँ हवह? अब तो अपन रेडियो की अवाज़ थोड़ी धीमी करह बहिन। तोहर भेजा में भूसा भरल बा का? बहरी हो गईल हवह का? बाप रे बाप इतना ठण्ड। अपन खिड़की त थोड़ा बन्द करह। नखरे छोड़ह। गुस्सा ठूक दह'।

जब रीता चुप ही रहल लौरा घबड़ा के कमरे में बिजली जलईलन। रीता को ज़मीन पर बेहोश पड़ल देख कर उनकर हाँथ से काँच का प्याला छूट के ज़मीन पे गिर के चूर चूर हो गईल जैसे उनकर जान निकल गईल। बहिन की बुरी हालत देख कर उनकरा ऐसन लगल रीता शायद कुछ ज्यादा दारु पीले बा। पर जब नशे की खाली बोतल आस पास पड़ल देखलन त उनकरा बात समझ में आईल रीता गुस्से में खुदखुसी करने की कोशिश करले बा। जोर जोर से हल्ला करत बा 'बिहारी बाबु गजब हो गईल बा हो जलदी से एम्बुलेंस बुलावह। हे भगवान हमर बहिन को कोई बचावह। बिहारी बाबु एम्बुलेंस को जलदी से टेलेफोन करह'।

श्रवण रीता को ज़मीन पर तड़पते देख कर मन ही मन सोचे लगल 'रीता मेमसाब बहुत तकलीफ में बा उनकर बचना मुश्किल लगत बा वो अब किसी वक़्त भगवान की प्यारी हो जईयन'।

रीता को जब होस्पिटल में दाखिल करा गईल त पूरे एक महिना बिस्तर में पड़ल रहलन। बरे से बरे डाक्टर उनकर इलाज करलन फिर भी उनकर हालत इतना नाजूख रहल कि उनकर बचने की उम्मीद बहुत कम रहल। श्रवण उपर वाला से बहुत प्रातना करलन कि वो जल्द से जल्द ठीक हो जईयन। लौरा पूरी तरह से टूट गईल रहल। उनकर हालत देख के पता लग जात रहल कि वो अपन बहिन से कितना प्यार करत रहल और उनकरा किसी कीमत पे खोना नहीं चाहतलन। अपन बहिन की सेवा करे के लिये थोड़े दिन काम पर ना गईलन। श्रवण रीता की सेवा में अपन हाथ खूब बतैलन। रीता जब अपन होश सम्भाललन तब उनकरा बहुत पश्यताप होईल। श्रवण से माफ़ी माँगलन और धीरे धीरे उनकरा श्रवण से प्यार भी होने लगल। श्रवण को पता रहल कि रीता उनकरा तहे दिल से प्यार करत बा और पाना चाहत बा फिर भी उन की तरफ कोई बुरी नज़र से कभी न देखले रहल। रीता अब थोड़ा सुधर गईल रहल। पर कब तक?

दुर्घटना - *Fatal Accident*

लौरा रीता के बारे में कभी सोच सोच कर एक दम घबड़ा जातलन। बार बार अपने आप को दोषी ठेहरात रहल कि शायद

उन ही की कठोर वाणी के कारण रीता खुदकुशी करने पर मजबूर हो गईल रहल। एक दिन लौरा गिरजा घर से लौटे समय बड़ी खुशी से अपन बाईसिकलवा चलात रहल। न जाने अचानक फिर कौन सी सोच में खो गईल कि उनकरा पता ही न चलल कब बीच सड़क में उतर गईल और एक मोटर गाड़ी के नीचे आ गईल। गाड़ी एक सूखल पता के जैसे उनकरा उडा देईल रहल और ज़मीन पर बेहोश पड़ल दिखाई देईल। दुर्घटना इतनी भारी रहल का बोलब! उनकर दायँ हाँथ टूट गईल रहल, दोनों पैर पूरी तरह से जख्मी दिखाई देवत रहल और फुटल सर से खून बह रहतलल। जब लौरा को हस्पताल में दाखिल करा गईल त खून इतना बह चुकल रहल कि उनकर बचने की उम्मीद बहुत कम रहल। लौरा को जब आपरेशन थिएटर में लाया गईल त पता चलल कि उनकर ब्लड ग्रुप के मैच ब्लड बैंक में न रहल। डाक्टर लोग परेशान रहल कि अगर खून का प्रबन्ध न होई त लौरा कोमा में चली जईयन फिर उनकरा बचना मुश्किल हो जई। एक ही उम्मीद बाकि रहल शायद रीता के खून बहिन के खून से मिली। पर जब लाबोरातारी से रिपोर्ट आईल की दोनों बहिन का खून एक ही जैसन ना बा त परेशानी और बड़ गईल। श्रवण अपन मेमसाब की जान बचाने के लिये अपन जान देने को तैयार रहल और अपन खून देने में बिलकुल न झिझकलन। श्रवण की महरबानी से लौरा की जान खतरे से बाहर आईल। बाद में जब लौरा को डाक्टर और नर्स से पता चलल कि श्रवण उनकर सेवा के लिये हस्पताल में कितने दिन तक वहाँ रुकल

रहल और उन्हीं की सहायता से उनकर जान बचल बा त लौरा प्रसन्न हो के श्रवण के हाथ पकड़ के बोलता, 'बिहारी बाबु तू कितना महान हवह हम तोहर करजा जनम जनम तक न चुकाई सकब'।

'ई त हमर फ़र्ज़ रहल अपन मेमसाब की सेवा करे के'

रीता बहिन की बुरी जख्मी हालत देख के अपने आप को ना सम्भाल सकलन। गम भुलाने के लिये फिर से अपनी पुरानी गंदी आदात अपन दोस्तों के साथ चालू करलन।

लौरा को जब रीता के बारे में पता चलल त उनकर दिल पर बड़ा सदमा पहुँचल। जैसे कि अब इस दुनिया से मन उठ गईल बा। वो फिर से इतनी बीमार पड़ गईलन जैसे अब कोनो भी ईलाज का असर असफल रही। श्रवण लौरा की हालत देख कर उन पर तरस खातलन और उन की सेवा में पूरी मेहनत लगईलन। इतना कि उनकरा नहावत, धोवता, कपड़े पहनावता, बाल बनावता, खिलावता और पीलावता।

जब हस्पताल से घर आईलन श्रवण लौरा को बड़े से बड़ा डाक्टर से उनकर ईलाज करवैलन और जब पैसों की कमी होईल तब वो अपन तन्खवा लेनाही बन्द कर देलेरहल। श्रवण बड़ी शर्मिन्दा रहल कि उनकर पास एक फूटी कौरी न बचल रहल अपन परिवार के लिये। 'कौन हालत में वो लोग होईयन,' ये सोच

सोच के कभी इतना घबड़ात रहल कि उनकर सर में दर्द भड़क जात रहल। लौरा श्रवण से कभी ये प्रश्न ना करले रहल काहे वो तन्खवा लेना छोड़ देले रहल। लौरा को पता न रहल कि श्रवण शादी सुधा रहल और उनकर आगे पीछे परिवार की ज़िम्मेदारी बा। शायद कभी पूछताछ करने की कोशिश ही न करले रहल।

श्रवण बहुत परेशान रहल पैसा कहाँ से आई। उनकर पास कोई चारा न रहल बस एक दूसरी नोकरी के सिवा। एक दो बार घर छोड़ने की कोशिश भी करले रहल पर सब बेकार। शायद लौरा की बीमारी उनकरा हमेशा रोकले रहल। एक दिन श्रवण बैठ के खूब खोपड़िया चलैलन 'अब यहाँ छोड़ब त... कहाँ जाब? कौन मुँह से जाब? अपन परिवार का सामना कैसे करब? गाँव वालन का बोलियन? हम एक मजाक बन के रह जाईब? यहाँ त हमर अच्छा खासा चलत बा, मुफ्त खाना मिलेला, पहने के लिए बढिया कपड़ा, सोने के लिये बिस्तर, माश, मछली, दारु सब बा, का ई सब छोड़ के फिर से एक नरक की ज़िन्दगी बिताब जहाँ एक रोटी मुश्किल से मिलेला?'

अपने बीते हुवे दिन याद कर के बहुत घबड़ात बा और अपने आप को समझावत बा 'अब जो होई सो देखा जाई, वो अपनी ज़िन्दगी से खुश बा हम अपनी ज़िन्दगी से खुश है। अब हमरा उन लोगन से अब का लेना देना। पैसा बचा ही कहाँ बा चिट्ठी के लिये'।

धीरे-धीरे लौरा को श्रवण से प्यार हो गईल। श्रवण उनकर बहुत इज़त करत रहल। लौरा देखने में चाहे एक परी जैसन रहल श्रवण उनकरा भी कभी बुरी नज़र से न देखले रहल बल्कि हमेशा अपन दिल में मालकीन का दरजा देले रहल।

रीता फिर से दूसरों के बहकावे में आके अपन मन मानी शुरू करे लगल। घर में दोस्तों की कमी न रहल। जब देखबह त कोई न कोई घर में आता जाता बा जैसे उन लोगन के माँ बाप के घर ह। रीता श्रवण को अपन नोकर बना के रखले रहल। लौरा रीता के व्यवहार से बहुत नाराज रहल। कितनी बार उनकरा फिर समझाई की कोशिश करलन अपन पढ़ाई में ध्यान देई के पर हर बार उनकर बात अनसुनी कर देत रहल।

Chapter 8 Dus sal baad - दस साल बाद

पूरे दस साल बीत गईल रहल रीता वैसे के वैसे ही रहल, न कोई काम न धाम हमेशा नशे में चूर। कई बार चोरी के इल्जाम में पुलिस चोकी में रात भी काट चुकल रहल। जब रीता को पता चलल लौरा और श्रवण एक दूसरे से प्यार करत बा और दोनों शादी की तैयारी में लगल हवन त उनकर खोपड़िया कुछ ज्यादा चलने लगल 'अगर लौरा श्रवण से शादी कर लियन त उनकरा जायदाद में से एक फूटी कौरी न मिली'। ये सब सोच के रीता बहुत परेशान हो जात रहल और उनकर दिल के धड़कन कुछ ज्यादा धक धक करत रहल ये सोच के 'पैसा बिना उनकर कैसे गुजारा होई। शराब और नशे की गोली कैसे खरीदियन'। हर रोज की घबड़ाहट से बचने के लिये उनकर मन में एक विचार पैदा होईल 'क्यों न अपन दोस्त बेंजामिन से कुछ सलाह मशवरा करियन शायद कोई उपाय बतैयन'। रीता की बात सुन कर बेंजामिन कुछ ज्यादा परेशान हो गईल। अब वो भी सोचने लगल अगर पैसा रूक जाई त मुफ्त का खाना दाना आदि चौपत हो जाई। बेंजामिन बड़ी चलाकी से अपन दिमाग लडैलन और रीता के देख के जोर से हँस के बोलता 'ई कौन सी बड़ी बात बा, कोई पहाड़ तोड़े के बा का। एक चुटकी में कमवा हो जाई'। रीता को उनकर बात समझ में न आईल 'तोहर कहने का मतलब ज़रा खुल के समझावह'। बेंजामिन मौके से लाभ उठावत बा और रीता के कान में अपन चाल फूसफूसात बा'।

रीता बेंजामिन की बात सुनते ही इतना घबड़ा जात बा कि उनकर हाँथ के सब रोमाँच खड़ा हो जात बा, माथे से तप तप पसीना चूवे लगल जैसे अब किसी वक़्त एक मोम की तरह पिघल जईयन। बेंजामिन को पता रहल रीता उनकर बात से पूरी सहमत ना रहल। बेंजामिन उनकर कान फिर से भरलन और बहुत सोचने के बाद रीता मजबूर हो के उनकर सलाह को उचित समझत बा और बोलता कि मौका मिलते ही वो चाल चलैयन। अब इन दोनों कौन सी चाल खेलियन? ई त हम लोगन को सब्र करे के पड़ी। समय ही बताई?

रीता अपन बहिन के साथ मिल जूल के रहने लगल। उनकर सब बात माने लगल। श्रवण को कभी एक पल सोचने ही न देलन कि वो भी उनकर से प्यार करत बा पर कभी बोलने की हिम्मत पैदा न होईल। हरोज नशे में चूर त फुरसत कहाँ? रीता बहिन की शादी से खुश न रहल पर का करियन अपन स्वास्थ्य के लिये जब तक कि वो अपन चाल में कामयाब न होईयन तब तक लौरा के साथ झूठ मूत बहिन के प्यार का खेल खेलते रहल। जब देखबह त रीता लौरा के सन्ग शादी के बारे में बात करत बा- विवाह में कौन कौन लोग को न्योता भेजियन, कौन सी दुलहन की जोरी बनवैयन और कौन सी गीरजा घर में उनकर शादी की रस्म ज्यादा शोभा देई?

श्रवण लौरा के प्यार में इतना मस्त कहा न जाई।

वो हरोज लौरा से पूछत कौन सी जगह पे उन लोगन की शादी होई। विवाह की खुशी में मन इतना मचचल रहल जैसे कि पहली बार दुलहा बनियन। लौरा को अपन नज़र से एक मिनट हटने न देवत रहल जैसे लैला मजनु। एक दिन लौरा कुछ काम से बंधल रहल और घर आने में देरी कर देले रहल। श्रवण उनकर प्रतीक्षा में एक दम बेचैन रहल। रीता से बार बार पुछता लौरा घर कब अईयन और वो हँस हँस के एक ही जवाब देवत बा 'बिहारी बाबु इतनी बेचैनी काहे होवत हवह। हिरंजा से कुछ ज्यदा उतावला होवत हव हो। लौरा को थोड़ा अपन जीवन जीये दह हो? बिहारी बाबु तोहोरा प्यार का मतलब कहाँ से आई। सुनह जब तक प्यार में थोड़ा न तड़पबह त मजा कहाँ से आई। सच्चा प्यार में जितना तड़पबह उतना ही मजा आवेला'।

‘सच!’

रीता उनकरा घूर के फिर से दोहरावत 'बिहारी बाबु अभी तड़पन कहाँ देखले हव हो'।

ई का बोलत बा हो? सोचने की बात बा। क्या श्रवण रीता की बातों का मतलब समझ पायन?

प्यार में पागल, श्रवण रीता की बातों को नज़र अन्दाज़ करत
बा और एक तड़पते मजनु की तरह बैठ के गावत:

हमर फूल कहाँ रे हमर प्यार कहाँ रे हमर लौरा कहाँ रे हमर
हार कहाँ रे ।

चोरी कर के हमर दिलवा अब कहाँ छुप गईले हो लैला तोहरे
बिना हमर दिलवा अधूरा अधूरा।

तोहरे कारण माई बाप छोड़ली तोहरे कारण सौ दुख: सहली बन
के मजनु दर दर फिरूँ।

तोरी मोरी बने रही जोड़ी सुनले ओ बाके गोरी प्यार हमरा
सदियाँ पूराना।

जैसे गाना के अन्तिम अन्तरा समापत करत बा तैसे ही लौरा
घर में प्रवेश होवत बा। श्रवण दौर के पूछत बा 'लौरा आज
इतनी देर कैसे हो गईल हो? सब ठीक बा न?'

लौरा हँस के जवाब देवता 'बिहारी बाबु सब ठीक बा। तू काहे
खामोखाम परेशान होवत हवह। तोहर लिये एक खुश खबरी बा'।

' खुश खबरी! अच्छा सुनावह त!'

' विवाह की पूरी तैयारी हो गईल बा'।

'सच'

'हाँ अगले महीने बीस तारीख को ठीक तीन बजे दो पहर सैन्ट पॉल कातेड्रल में हम लोगन की शादी तय हो गईल बा। अब से तू अपन तैयारी करह। हाँ अब तू बिहारी बाबु से बिहारी साहेब बनबह आज से हमरा सिर्फ़ लौरा कर के पुकारियह'।

श्रवण खुशी से पागल हो के झट से बोल उठत बा 'आप कितनी अच्छी हवह काफ़ी थक हो गईल हवह थोड़ा कोफी या जुइस का प्रबन्द करी?'

'तू हमर ख्याल बहुत रखेलह। हमरा बहुत ज़ोर से भूक लगल बा। हाँ कोफी बाद में पीयब वो भी रीता के साथ'।

'हाँ बिल्कुल...चलह खाना तैयार बा'।

खाने के बाद जब रीता को पता चलल कि विवाह बहुत नज़दीक बा त झट से मन खिज के कोई बहाना बना के मुँह लटका के वहाँ से निकल पड़त बा।

Chapter 9 - Vasudev - वासुदेव

दस साल से ज्यादा बीत गईल रहल। रवि की पढ़ाई में सावित्री अपन पूरी मेहनत की कमाई लगा देईल रहल। रवि एक मेहनती लड़का रहल और पढ़ाई में बहुत ध्यान देवत रहल। इतना कि वो विद्वत्ता प्राप्त करलन इंग्लैंड में डाक्टर की पढ़ाई करे के। एक तरफ सावित्री का मन ना लगता कि उनकर मुन्ना इंग्लैंड जईयन जहाँ से उनकर पति फिर से कभी लौट के न ईलन। फिर भी वो न चाहतलन रवि अपन पिता से अपन रिशता नाता तोड़ीयन और अपने आप को समझाने की कोशिश में रहल 'चलह उनकर पति का पता लग जाई। कौन सी हालत में होईयन। इसी बहाने रवि को उनकर पिता जी से मुलाकात भी हो जाई।

वासुदेव सावित्री को साक्षात देवी मानत रहल इस लिए कि वो उन लोगन की देख भाल में अपन पूरी जवानी गँवा देले रहल और उन की मेहनत से शायद रवि श्रवण से मिल पईयन। वो हमेशा प्रार्थना करत कि अगले जनम में सावित्री उनकर बेटी बनियन और हर सास ससूर को सावित्री जैसन बहू मिली।

वासुदेव खेत में अकेला गन्ने के बीज बो रहतलन जब दूर से उनकरा एक भीड़ की अवाज़ सुनाई देल 'राम नाम सत्य हे।

राम नाम सत्य हे। राम नाम सत्य है '। हालां कि वो चश्मा बिना दूर से देखे न सकत रहलन जलदी से अपन चश्मा पोंछ के पहन के देखत बा त उनके दोस्त हरीया का बेटा, लछूमन, आगे आगे सफ़ेद वस्त्र पहने हुए अपने पिता के सन्दूक कनधे पर उठा के जात बा। वासुदेव दूर ही से हाथ जोर कर हरीया की आत्मा की शन्ति के लिये प्रार्थना करत बा और लछूमन, को आशीर्वाद देवत बा 'भगवान तोहर भला करियन'। इतने में उनकर आँक में आँसू भर आईल। ज़मीन पे बैठके आसमान की और कुछ समय तक ताकत रहल। उड़ती चिड़ियों को देखके मन ही मन में भुनभुनावता वाह 'प्रभु तोहर लीला बड़ी न्यारी बा। काहे हम लोगन को इन उड़ते चिड़ियों के जैसे पंख न देलह हम उड़ के अपन श्रवण के यहाँ जयती वो हमर सहारा बनत, अपन हाथ से हमरो चिता जलावत और हमर आत्मा को शन्ति मिलत'।

वासुदेव कुछ थका हुआ सा दिखाई देवत रहल और जैसे अपन गाड़ी लाद के खेत से निकलत ही रहल त देखत बा डाकिया पैदल उन की तरफ आवत बा। वासुदेव उनकरा देख के थोड़ा सा आश्चर्य होईल 'बात का बा? बेचारा पैदल चलत बा? उनकर बाईसिकल कहाँ बा?' वासुदेव जब अपन खोपड़िया फिर चलईलन त उनकर मन में विचार पैदा होईल शायद उनकर बाईसिकल कोई चोर उठा के ले गईल बा। वासुदेव को रहा न गईल और पूछत बा 'डाक बाबु आज पैदल कैसे तोहर रॉली बाईसिकलवा कहाँ बा हो?' डाकिया का चेहरा उतरा उतरा सा रहल फिर भी

मुसकुरा के जवाब देवत बा 'नमस्कार दादा जी, अब हम तोहरा का बोलब हो न जाने कौन हमरी बाईसिकलवा उठा के लेगईल हो'।

वासुदेव का शक सही निकलल। उनकर हाँथ पकड़ के बोलत बा 'डाक बाबु पुलिस में जाके रिपोर्ट लिखा दियह। हम अपन तरफ से पता लगाने की पूरी कोशिश करब'।

'बहुत धन्यवाद दादा जी। राम राम अब हम चलत हई'।

काफ़ी सालों से वासुदेव डाकीया से एक ही प्रश्न पुछत आईल बा 'हमरो नाम कोई चिट्ठी आईल बा भैया?'

डाकीया को थोड़ा अजीब सा लगल 'का बात बा आज दादा जी उनकर से अपन नाम की चिट्ठी के बारे में कुछ ना पुछलन।? 'मामला का बा? उनकर से रहा नहीं गईल 'दादा जी विदेश से बेटवा से बात चीत होल कि नय हो?'

वासुदेव निराश होकर उतर देलन 'नय बाबु। 'चलो आज भी न कोई चिट्ठी न सन्देश फिर कभी..'।

डाकीया उनकरा उदाश देख कर बोलत बा 'दादा जी अगर आप चहबह त हम तोहर खातीर एक चिट्ठी लिख देब'

'तोहर बड़ी मेहेरबानी होई बाबु पर अभी हमरो पास पैसा नय बा डाक के लिये... जेब में एक फूटी कौरी नय बा भैया'।

‘दादा जी काहे हमरा इतना शरमिंदा करत हवह’

‘अच्छा बोलते हवह त लिखह पर बेटवा का पता हमरो साथ
नय बा’

‘हम पता करलेवब’

डाकिया अपन बोरा में से एक कलम और पन्ना खीचलक और
ज़मीन पर थस के बैठ के लिखना शुरू करेलनः

‘प्रिय बेटा नमस्ते

प्रभु की कृपा से अब तक सब ठीक चलत बा सिर्फ़ तोहर कमी
बा। तोहर से एक ही शिकायत बा बेटा ध्यान से विचार करियह।

छोड़ के जब गईल विदेशवा हो काहे अब चिट्ठिया न लिखले
हो।

खेत में जमल बा गन्ना पक्षी खोजत बा दाना

चुग न जाई हर एक दाना पक्षी पिंजड़ा तोड़ आना।

फीका फीका सारा जहाँ सूना तोहरी सजनी के अँगना

आंख का कजरा न बहे जाये आके लगा दे माथे पे बिन्दिया।

तोहरी मैया रोवेला रात रात न सोवेला

मान प्यारी मैया की मीठी बतिया लौट आजा आपन देशवा।

तोहरे पिता जी

वासुदेव

जब चिट्ठी इंग्लैंड पहुँचल रीता के हाथ में लगल और वो धीरे से खोल के पढ़ के फिर से लिफाफा सरेश से जोर के दरवाजे के चौकत पर फेंक देलन। बाद में जब चिट्ठी लौरा के हाथ में पड़ल त श्रवण को दे के पूछत बा ' चिट्ठी कौन भेजले बा?' त श्रवण जवाब देवत बा उनकर किसी दोस्त भेजले बा। श्रवण को पता रहल कौन चिट्ठी भेजले बा और कहाँ से आईल बा। कमरे में जाते ही लिफाफा देख के बड़ी चालाकी से फार के फेंक देवत बा इसलिये कि लौरा को पता न चली वो अभी तक शादी शुदा हवन और उनकर एगो बेटा भी बा।

विवाह की पूरी तैयारी लग भग हो चुकल रहल और लौरा उत्तेजीत रहल कब दुलहन बनियन। दुर्भाग्य से लौरा फिर से बीमार गिर पड़लन उनकर शरीर में अचानक से दर्द का हमला होल कि वो निन्द की गोली खाने पे मजबूर हो गईलन। इतना कि बाद में उनकर लिये गोली एक आवश्यकता बन गईल। लौरा दिन प्रति दिन दुर्बल दिखाई देवतलन। रीता को बहिन की दर्द सहा न जात रहल।

उनकर परेशानी और बढ़ गईल रहल जब लौरा के मन खाने पर से बिल्कुल उठ गईल रहल। लौरा की हालत देख कर श्रवण एक

दम दुखी रहल। रीता बहिन की बुरी हालत देख कर और परेशान हो गईल रहल और श्रवण से बात बात में बोलत बा 'हम लोगन को कोई नया उपाय सोचे की आवस्यशकता बा जिस के सहारे लौरा के स्वस्थ में असर पड़ी'। श्रवण कुछ देर के लिये चुप चाप रहल और जब उनकरा याद आईल त रीता को समझैलन गरम दूध तबियत के लिये लाभदायक ह और जितना पीबह उतना वो शरीर को मजबूत करेला खास कर के जो लोग गठिया बीमारी के शिकार हवन...रीता मेमसाब क्यों न हम लौरा मेम को थोड़ा गरम दुध दे के कोशिश करिजा'। रीता श्रवण की बातें सुन कर बहुत प्रसन्न हो के बोललन 'हाँ क्यों नहीं। हम तोहर बात से सेहमत हई सिर्फ एक गड़बड़ बा हो लौरा दूध बिल्कुल न पसन्द करेलन अब हम उनकरा कैसे समझावब। अगर कोई दूसरा उपाय होई त बतावह'।

श्रवण फिर सोच के जवाब देवत बा 'रीता मेंम हमर माता जी हमरा हमेशा दूध में हल्दी उबाल के पीयावत रहल ताकि हमर शारीर मजबूत बनल रही। हमरा भी दूध से घीन आत रहल फिर बाद में अच्छा लगे लगल। क्यों न हम लौरा मेम को भी थोड़ा दूध उबाल के उनकरा पीयाई की कोशिश करी जा'।

रीता श्रवण की राई से सहमत रहलन: 'बहुत अच्छा'

शाम होने से पहले ही श्रवण दूध में हल्दी मिलाके उबाल के रख देले रहल'।

रात के ठीक आठ बजल रहल जब रीता लौरा के कमरे में दूध ले गईलन त वो दूध का प्याला देख के दूर ही से मना कर देलन। पर जब रीता उनकरा समझईलन कि दूध उबाल के अनले बा त थोड़ी नखरा करने के बाद जीव जांत के पीलन। उस के बाद हरोज़ बिन संकोज़ नींद की गोली के साथ पीये लगलन। दोनों बहिन में फिर से बड़ा प्रेम बढ़गल। इतना कि मानो रीता लौरा के दिल ही जीत ले ले रहल। लौरा उन पर फिर से भरोसा करे लगल।

Chapter 10 - हत्या - *Murder*

एक रात लौरा के सर में दर्द इतना फूतल कि उनकर बिल्कुल बरदाश के बाहर रहल। वो व्याकुल रहल। जब दर्द बढ़ता ही गईल और बाद में रहा न गईल तब रीता से एक दर्द की गोली लाने को कहलन। रीता मौके का फ़ायदा उठा के ज़हर की गोली पानी में मिला के श्रवण के कमरे की तरफ बढ़लन और जाके ज़ोर ज़ोर से उनकर दरवाजा खट खटईलन। जब श्रवण दरवाजा खोल के देखतबा त रीता के हाथ में एक प्याला बा, उनकर बाल से पानी टपक रहल बा और शरिर एक तोलिये से लपेतल बा। रीता बड़ी चालाकी से उनकरा फुसला के उल्लू बनाके दिल जीत लेवत बा 'मैंरे प्यारे जीजा जी हमरी बहिनिया आज कुछ खईले न पीलेबा, उनकर सर में बहुत दर्द होल बा, कब से दर्द की गोली मांगले बा पर हम नहात रहनी, तोहर बड़ी कृपा होई अगर जा के उनकरा ये पानी दे देबह त। ई पानीया में ग्लुकोज बा उनकर स्वास्थ के लिये ज़रूरी बा। हाँ बोलियह हम अपन बाल सुखा के थोड़ी देर में गरम दूध के साथ दर्द की गोली लेके पहुँचब'।

'बहुत ठीक रीता मेमसाब जैसे आप बोलत हवह'।

'बहुत अच्छे'।

लौरा जैसे पानी पीलन वो थोड़ी देर बाद सो गईलन। रीता बड़ी सावधानी से अपन चाल सन्चालन करलन। थोड़ी देर बाद वो फिर से श्रवण के कमरे का दरवाजा ठोकलन और श्रवण से पूछत बा 'अहो बिहारी बाबु लौरा की तबियत कैसे बा?' श्रवण जवाब देत बा 'हम त सिर्फ पानी देके वहाँ से निकल गईली... हमरो कुछ काम रहल। आराम करत होईयन'।

'अभी तक हमर बाल सूखल न बा हो, काहे न तू जा के उनकरा फिर से देख लेवत हवह। हाँ अगर उनकरा कुछ चाही त हमरा आके बोलियह हम उनकर सेवा करब'।

'बहुत अच्छे'

जब श्रवण लौरा के कमरे के पास जा के दरवाजा खोलत बा त न जाने काहे उनकरा चौकत से और आगे बढ़ने का मन ही न रहल। जब कि श्रवण उस कमरे में कितनी बार आया जाया करले बा। कमरे में सन्नाटा छाईल रहल और सब बिजली बुझल रहल। सब खिड़कियन खुलल रहल। कमरा एक चिड़िया घर से कम न दिखाई देत रहल। एक दो कबूतर कमरे को एगो खुले मैदान बनैले रहल। देखबह त ईधर से उधर अपन अपन पंख पसार पसार के एक कोने से दूसरे कोने खूब फूर फूर करके उड़त फिरत रहल जैसे उपर से कोई संदेश लेके आईलबा।

श्रवण हँस के मन ही मन बोलत बा 'वाह भाई वाह आज त खूब नींद का मजा लेत हवह। परी जैसन तोहर स्वागत होवत बा। देखह कबूतर तोहरा कैसे देख देख के मचल मचल के गुतर्गु गुतर्गु करत बा। सच मानो तो हमरा तोहरी नींद से बहुत जलन होवत बा। हमरा काहे तोहर जैसन नींद न अवेला?'

लौरा लौरा कर के चिल्लात बा 'अब त हम से थोड़ी बात करह हो। घोड़ा बेच के सो गईल हवह का?' श्रवण अपने आप को समझवात बा 'शायद बेचारी काम से बहुत थकल बा इसीलिए उनकर सर में दर्द हो गईल बा। हमर से नाराज़ बा का?। लौरा को मनाने के लिये फिर से हल्ला करता 'मेरी जान अब त गुस्सा थूक दह हो। अगर हम से कोई अनजाने में गलती हो गईल बा त हमरा माफ़ कर दह?'

श्रवण अपन प्रेमी को खोना नहीं चाहतलन। आखिर अब जईयन त कहाँ जईयन? उनकर बिस्तर के निकट जा के बत्ती जला के देखत बा त लौरा एगो मासूम परी की तरह अपन आँक मुन्द कर हाथ जोर के चुप चाप सो रहल बा। श्रवण उनकर बायीं आक से बाल हटा के जोर से हल्ला करत बा 'बहुत नखरे करत हवह हो, अब अपन नशीली आँक खोलह'। जब फिर न उठत बा त उनकरा गुद गुदी कर के हँसा के जगाई की कोशिश करत बा। जब उनकर सब तरीके नाकाम रहलत बा श्रवण एक दम घबड़ा जात बा। उनकरा हिला हिला के जगाने की कोशिश करत बा।

श्रवण को पता न रहल लौरा भगवान को प्यारी हो गईल बा। घबड़ा के जोर जोर से चिल्लाना शुरू करे ला 'कोई हमर लौरा के आ के जगावह! कोई हमर लौरा के आके जगावह! हे भगवान! हे भगवान! ई का अनर्थ हो गईल हो... कोई आके इनकर आँक खोलह हो हम उनकर से बात करब'।

रीता अपन चाल में कामियाब रहल। श्रवण की तड़पति चीख सुन कर दौड़त आवत बा। लौरा के गले पे अपन हाथ रखके बोलता बा 'हे माँ ! हमर बहिन को का हो गईल बा' और झट से उनकर नस छू के, श्रवण की तरफ देख के, अपन मगरमच्छ की आँसू गिरा के, छाती ठोक ठोक के, जोर जोर से हल्ला हल्ला कर के बोलत बा 'अब हमर दीदी इस दुनिया में न बा। हे जीसस अब हमरा का होई। अब किस के सहारे हम जीयब। हे लोर्ड अब हमरा भी इस दुनिया से उठालह...'

रीता को रोते देख कर श्रवण को रहा न गईल उनकर हाँथ पकड़ के रो के बोलता 'रीता मेम ई का होगईल हो हमर जान चला गईल हो? अब हम किस के सहारे जीयब?'। पर होनी को कौन ताल सकेला। कुछ देर बाद श्रवण अपने आप को सम्भालते हुवे और रीता को समझाई की कोशिश करत बा 'मेम ऊपर वाला की मर्जी कब किस को अपन यहाँ बुलालियन, अब जब तक

जिन्दगी बा तब तक रो रो के काटे के पड़ी। मेम अपने आप को सम्भालल रोबह त फिर से बीमार हो जईबह। हम आप की देख भाल के लिये हई। 'रीता गुस्से में आकर अपन असली रूप दिखावत बा और श्रवण पे चिल्ला के बोलत बा 'बिहारी बाबु तू हमर दीदी के खूनी हवह, तू ही जान बूझ के उनकर जान लेले हवह'।

श्रवण रीता की बातें सुनकर खूब गुस्सा करत बा 'रीता मेम आप काहे अनाप शनाप बोलते जात हवह। हमरा काहे दोषी ठहरावत हवह, काहे हमर घोर अपमान करत हवह ? हम लौरा की हत्या कैसे करब जब हम उनकर से प्यार करत हई। हमर पर झूठा आरोप मत लगावह'।

रीता फिर ज़ोर ज़ोर से उन पर टूट पड़ेला 'बिहारी बाबु तू ही हमरी बहिन के कातील हवह हम जानतैं तू कौन मकसद से इतने दिन हम लोगन के टुकड़े पर पलते रहलह'।

रीता की बातें सुन कर श्रवण आपे से बाहर हो जात बा और उनकर गला पकड़ के धमकी देवत बा 'रीता मेम हमरा सब कुछ पता बा आप हमर संग का खेल खेलत रहलह, पानी में ज़हर मिला के अब इल्ज़ाम हमर पर ठोकत हवह। अभी हमर माथा घूम जाई त आप का खून पी जाईब। चूरेल, दायन कहीं की। आप काहे ई सब करलह अपनी खुशी के लिये या तो किसी

के दबाव में आके। पर हमरा पूरा विश्वास बा कि तोहर दिमाग कोई और चातले बा।

रीता गुस्से में आ कर बोलत बा 'तू अपन गुस्सा किसी और को जाके दिखैय'। फिर से चिल्ला के दोहोरावत बा 'अपन हाथ हमर गला में से हटावह न त...।

'न त का कर बह?'

तोहरी बीबी विधवा हो जाई, बच्चा अनाथ और बूढ़े माँ बाप जीते जी मर जईयन'।

इतना सुन कर श्रवण चौंक जात बा। झट से गले में से हाथ हटा कर नीची आवाज़ में आश्चर्य से पूछत बा 'आप को कैसे मालूम हम शादी सुधा हई और एगो बच्चा भी बा। कौन सी जासूसी करतलह कि हमर पीछे इतना पड़ल रहलह?'

रीता अपन दाँत पीस के खूब अकड़ के बोलत बा 'हमरा सब कुछ पता बा तू हम लोगन की जायदाद हड़पने में टुलल हवह'।

'रीता मेम भगवान साक्षी बा हम लोगन चाहे कितने भी गरीब हईजा जिस थाली में हम खात बा उस थाली में कभी छेद न करीला जा। रीता मेम हम ना कभी किसी की बुराई या निन्दा करले हई अब हम काहे लौरा मेम की जान लेवब? हमर का बिगड़ले रहल। उपर वाला सब देखतबा। जो अपन भलाई के लिये अपन बहिन को जीते जी मार देई वो आदमी कहने के

लायक नहीं बल्कि शैतान ह। उपर वाला सब देखत कौन कातील और कौन निर्दोष बा... अब हमरो भेजा में बात समझ आईल बा काहे कुछ महीनों से हमरो घर से कोनो चिट्ठी न मिलल...। और जब मिलल भी त लिफाफा खुलल रहल'।

रीता मुसकुरा के बोलत बा 'वाह क्या दिमाग लगईलह'

श्रवण फिर गुस्सा हो कर बोलत बा 'ये तो तोहर गन्दी चाल रहल हम लोगन को एक दूसरे से अलग करे के। अब बात समझ में आईल आप काहे ई सब करलह या तो आप को हम लोगन का प्यार देखा न गईल या तो आप हमरा पा न सकलह? हमरा पूरा विस्वास बा कि आप किसी के बहकावे में आके अपन स्वार्थ के लिये एक मासूम की जान ले लेलह'।

रीता अपने आपको दोषी न ठेहराते हुवे अकरत बा 'ये तो तोहर वेहम ह हम अपन बहिन की जान काहे लेवब... तोहरा कड़ी से कड़ी सज़ा दिलवावब। 'इतने ही कह कर रीता पुलिस को फोन लगावत बा।

जब पुलिस जाँच पड़ताल करत बा त श्रवण को अपन साथ पुलिस चौकी ले जात बा जहाँ पर उनकरा खून के इल्जाम में गिरफ्तार करलन। बेसहारा श्रवण जेल में अकेला बन्द घड़ी घड़ी सोचता 'हे प्रभु हमर पर तरस खा कौन हमरा आके इस झूठे इल्जाम से बचाई? कौन हमरा ज़मानत पर अब आके छुड़ाई? यहाँ न कोई अपना बा जो हमर दुख समझियन और इस दल

दल से आ के निकाली। हे प्रभु हमरा माफ करह। अब हमरा एहसास आईल बा अपनों से बिछड़ के हम कितनी बड़ी गलती कर ली।

हे प्रभु जिन को दिया सहारा हो गईलन पराया,

जिन को अपना बनाया वो दोखे बाज कातील ठहराया,

जो हमरा भूले से कभी न बनाया पराया हम उन लोगन को ठुकराया,

जान दे कर जो सिखाया पढ़ाया जीते जी हम ने उसे मार डाला ।

हे प्रभु हम तो है परदेश में देश में रोवत होई हमारी जान कुछ तह करह एहसान।

तोहरे बिन न होवत शाम न निकलत चाँद आके चमका दे हमर लोगन का जहान।

कौन हाल में होई हमरो खेती मकान कितना उचा हो गईल होई हमर संतान।

माता पिता होई परेशान सुन कर हमर पर कातिल कर्नाम,

एशो आरम से फुर्सत कहाँ प्रभु का नाम;

सारा जीवन न्योछावर करनी नशे और दो बहनों के नाम।

सपने में बनाया मोती का मकान आँक खुलल त देखा मुरदा
शमसान।

हम से हुवी नादान विवाह करके बनब कपतान

प्यार के चक्कर में भूली अपनी पेहचान;

दे कर बलिदान भोगल पड़तबा अनजान

सुली पे लटकल बा जान;

हे दयावान दे दो ऐसन वरदान भोगना न पड़े झूठे इल्जाम

फिर होई हमर पहचान बदनाम न हो श्रवण का नाम'।

रीता से लड़ाई कर के श्रवण अपन पैरों में कुल्हारी मारले रहल।
रीता अपन पूरी कोशिश में रहलन ताकि श्रवण को कड़ी से कड़ी
सजा मिली।

रीता अपन मकसद में पूरी तरह से कामयाब रहल। कुछ दिन
बाद जब मुकदमा शुरू होल त झुठी गवाही के सहारे श्रवण को
अपराधी ठहराया गईल और कत्ल के इल्जाम में उनकरा उमर
कैद की सजा सुनाई गईल।

श्रवण पूरा के पूरा टूट गईल रहल। इस बात की चर्चा पूरी दुनिया में फैल गईल रहल और जब उनकर परिवार तक पहुँचल त उन की माँ जो कुछ समय से बीमार रहल सुनते ही अपन दम तोड़ देलन। वासुदेव को भी ये बरदाश न होल और बेटे की परेशानी उनकरा खाई गईल इतना कि वो फिर से बीमार पड़ गईल। मरने से पहले सावित्री और रवि को अपन पास बुला के अपन हाथ उठा के भगवान से विनती करलन 'हे प्रभु हमरो श्रवण को माफ़ करदियह। शायद वो किसी के बहकावे में आके अपन मान मर्यादा खो देलन और अब उनकरा सजा भोगे के पड़त बा। रवि के देख के बोलत बा 'हमर नसीब में कहाँ लिखल बा कि श्रवण अपन कन्धे पे हमरा उठा के हमर अन्तिम सन्स्कार करियन'। फिर आखरी साँस खींचते रवि के हाँथ पकड़ के बोलत बा 'मुन्ना तोहर पिता जी को चाहे अप्रादी ठहराया गईल बा, पर हमर दिलवा अभी तक ना मानत बा कि वो किसी की जान ले सकियन, चाहे कुछ भी होई तोहरा मौका मिली त उनकर से मिलीयह, हम सब का प्रणाम करिया और जहाँ तक सक ब तू उनकर सेवा करियह। एक अच्छे बिहारी की औलाद की तरह अपन कर्तव्य निभैयह'।

‘ज़रूरदादा जी’।

Chapter 11 - *England* - इंग्लैंड

रवि अब काफ़ी समझदार हो गईल रहल और यूनिवर्सिटी ऑफ़ मेनचेस्टर के मेडिकल स्कूल में डाक्टर की पढ़ाई करत रहल। उनकर साथ गाँवा के और तीन मित्र वही यूनिवर्सिटी में अलग अलग डिग्री की पढ़ाई करत रहल: रसूल खान, जकुएस बेनोईट और एंडी लुक चेन्ग। बहुत बार अपन पिताजी से मिलने की कोशीश करलन पर न मिल पईलन इस लिये कि श्रवण का दिमागी हालत कुछ नाजुक हो गईल रहल इतना कि किसी को ठीक से पहचान नहीं सकत रहल। उनकरा कुछ दिन मानस अस्पताल में इलाज के लिये रखा गईल रहल जहाँ दिन भर एक छोटे से कमरे में बन्द रहतलन। जब ऐसन सदमा किसी को लगी त उनकर दिमाग पर चोट के अलावा का लगी?

सावित्री बहुत मजदूरी करते करते रोगी हो गईल रहल। रवि माँ की हालत सुन के बहुत दुखी रहल। माँ को देखने को और उन की सेवा करने के लिये उनकर मनवा बहुत तरसत रहल। कब जल्द से से जल्द डाक्टर बन के घर लौटयन। पर उनकर किस्मत में कहाँ? एक शाम जब सावित्री अपन आँगन साफ़ करतलन त उनकरा दिल का दौरा पड़ल और प्राण झट से निकल गईल। रवि को जब खबर मिलल त बहुत दूखी होईलन। पर दादा जी का उपदेश न भूलईले रहल। बस वो किसी की

बहकावे में न आवतलन। ज्यादातर अपन पढ़ाई और लिखाई में ध्यान देवत रहल।

बहुत कोशिश के बाद जब रवि को अपने पिता से मिलने का मौका मिलल त पिता जी बहुत बीमार रहल मानो बस कुछ ही दिनों के मेहमान। जब रवि जा के अपन परिचय देवत बा त श्रवण की आखों में आँसू भर जात बा और रवी को देख के खुशी से पागल हो गईलन। पर जब सुनलन कि रवि अब डाक्टर बनियन उनकर मन एक दम हल्का हो जात बा कि बेटा अपन दादा, दादी जी और माँ की पूरी जिम्मेदारी लियन। पर जब उनकरा पता चलत बा कि अब उनकर सब परिवर - माता, पिता और पत्नी- परलोक सिंधार चुकल हवन जा त वो एक दम से टूट जात बा। अपने आप को दोषी ठहरावत बा। सोचता शायद उन ही कि वजह से आज उनकर बेटा के आगे पीछे अब कोई ना बा। उनकरा ऐसन सदमा पहुँचल कि अपन हाँथ ज़ोर कर रवि से क्षमा माँगने पे मजबूर हो जात बा। उतरा हुवा चेहरा, काँप काँपते होंठ हिला हिला के बोलत बा 'बेटा हम अपन परिवार की मौत के जिम्मेदार हई अब तू जो सजा सुनाई ब हम भोगे के तैयार हई'। सर झुका के दोहरावत बा 'बेटा हम शर्मिन्दा हई ई सब जो होईल बा। हम कोई गुनाह न करले हई। ये सब हमर किये का फल ह। अब हम और कुछ दिन का

मेंहमान हई फिर उपर जाके हम सब से अपन पाप की प्रायश्चित करब। तोहर से एक बिनती बा हम त अपन माता पिता को न तीर्थ यात्रा पर ले जाई सकनी न त उनकर अर्थी उठैली...' फिर एक गेहेरी साँस लेके आगे बोलता 'हम तोहर से प्रार्थना करत हमर अर्थी अपन हाँथ से करियह हमरा मुक्ति मिल जाई। मानो श्रवण कुमार अपन पिता को तीर्थ यात्रा करईलन, हमर आत्मा को शान्ती मिल जाई हम समझब तू हमरा माफ़ कर देलह'। रवि पिता की दशा देख कर सुसका के बोलत बा 'पिता जी आप काहे ऐसे बोल के हमरा शर्मिन्दा करत हव हो? ये तो हम लोगन के संस्कार ह। हर बेटे का फ़र्ज़ बनेला अपन पिता की सेवा उन की आखरी साँस तक करे के। और हम त एक बिहारी बाबु का बेटा हई ई त हमर कर्तव्य बनेला'।

श्रवण को रवि की बात सुन कर उनकर मन को इतना शन्ति पहुँचल कहा न जाई और झपक के रवि से गले मिल के आशीर्वाद देके बोलता 'जा बेटा खूब पढ़ाई में ध्यान दियह और अच्छा डाक्टर बनियह सब कि सेवा करियह वो चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, चीनी या ईसाई'।

दो महीने बाद जब श्रवण की मृत्यु होईल रवि पिता की लाश अपने दोस्तों के साथ कन्धे पे उठा कर शमशान भूमी तक 'राम नाम सत्य है, राम नाम सत्य है' भजते गईलन और पूरी रीति

और रीवाज के साथ अपन हाथ से चिता जला के अन्तिम क्रिया करम करलन। पिता की आत्मा की शन्ति के लिये राख एक डिब्बे में सम्भाल के अपने साथ ले गैलन। जब बाद में अपन देश लौटलन त राख वो ही जगह जाके छितलन जहाँ उनकर सब पुर्खों के अन्तिम संस्कार किया गईल रहल। रवि खुश रहलन कि दादा जी के दिये हुए वचन निभाई सकलन।

रवि को जब श्रवण की कहानी याद आईल त अपने आप को बड़े भाग्यशाली समझलन कि 'चलह श्रवण को त अपने वृद्ध माँ बाप की अन्तिम क्रिया करम करने का भग्य प्राप्त न होईल पर भगवान की कृपा होल हमरा वो मौका मिलल माँ न सही पर पिता की इच्छा पूरी करने में कामयाब होईली। आज हमर मन से बोझ हल्का हो गईल ऐसन लगत बा जैसे सब बिहारी एक साथ फिर से जुड़ गईलन बा'।

Bihari Babu

Lock Sohodeb (Sashi)

Is poosthak ki kahani kisi aam adami par adharit ba jo apan parivar ki khushi ke liye har mor se larela. Shadi ke baad jab unlogon ke ghar me ego suputr paida hovela thab unkar prerana aur bar jala ki vo aage chal ke sab parivar ki seva kariyan vo bhi ek adarsh purush, Shravan Kumar ke saman. Kya ye sambhav hoyi? Kya ek Biharee Baabu dhoosara Biharee Baabu jaisan nikaliyan? Ye thoh kahani ke anth parhane se hi pata chali.

Lock Sohodeb jo sashi naam se bhi duniya me prasidh havan unaka janam Mauritius me hoyil rahal. Uchi siksha ke liye England gailan jahan parhayi samapt karane ke baad apan career ek economics (arthasatra) siksak se arambh karalan us ke baad vo British sarkari nokari me aaj thak nyyojit havan. Vo sanvadata bhi acchi tarah se sampadhit karalan. Vo England me chahe kitane varason se basal havan par aaj thak apan sanskruthi aur mati se jural ba. Sashi ke Bhojpuri gaane, geethakavya aur kavitha gavahit ba ki aaj unke prayash se na sirf England me balaki Europe me Bhojpuri ki pahachan age baral ba. Trinidad, Guyana aur Fuji ke log aaj isi bhasha ke madhyam se hum se aur judal havan ja. Aisan lagat jaise ki ek atut bandhan.

Sashi visva me angrezi lekhakon me se kum na havan unkar likhe huve pusthak ke sirshak: 'The Impact of the Mauritian Bhojpuri Traditions in Britain and Europe' (2009) aur 'A Diamond for Jasmine' (Rossendale Publisher - 2011)

Introduction - Prastavta

Har roj naukari ki pareshani, parivar ki chinta se hum logan ke baap dada kuch jyada pareshan rahal. Bas apan poore parivar ki khushi aur bhavishya ke liye apan jivan tyagane mein koi sankoch na karalan. Bihar se jab apan ghar duvar chor ke, apan boriya bistar gant ke kolakatta pahuchalan t kaam ki talash mein kisi choti moti naukari se khush ho jaitan itna ki vo videsh jane ko bhi taiyar rahalan. Bas mauka milate hi kuch dinon baad vo logan jahaz mein savari karane laglan ja. Unlogan ko pathā hi na rahal ki age chal ke kaisan jivan bitaiyan. Jab tak vo bandaragah mein rahalan tab tak mangal mein rahalan I soch ke 'Chalo bhayi ab hum logan ke jivan mein roshani ayi, khoob paisa kaamavabja aur apan apan parivar ki seva maje se karabja. Jaise jahaz pani mein chuthal taise sab ke sab hoyilan udas ki kaha na jayi. Vo itani chinatit rahal jaise ki : 'Ab phir se apan mitti se na joriyanja?' Apan apan hāth jor ke yehi binati karatlan: 'He prabhu hum logan ko jaladi vapas ghar laiyah.' Par jab thori aur soch vichar karlan t unlogan ke dil mein ek khushi jagal 'Chalo parivar na sahi mitti se jodal hum logan ki matri bhasha, Bhojpuri, hum logan ke sath ba.' Ye soch ke unlogan ke man mein itani shakti paida hol ke kathin se kathin samay ka samala kare ke taiyar rahal.

Sab logan apan safar aisan katalan pathā hi na chalal jahaz kab kolkatta se ake Mauritius ke Port Louis bandaragah mein rukai. Kuli ghat, jekar ab Apravasi Ghat naam diyal ba, mein jab unlogan ko rakha gayil tab unlogan ki bhasha ko motiya bolal jaat rahal ya Culcuttia kahe ki Culcatta (kolkotta) se ayil

rahalan ja. Andar ik dar si paida hoyil 'Ab jab Sahebava hum logan ke sath apan desi jaban mein prashn kariyan t hum logan unkara kaise javab devab ja. Ab to koyi chaara na dikhayi devat bah ab hum logan ko Sahebva ki jabani sikhe hi ke chahi. Bhaiya i th gajab ho gayil...aisan lagat ba jaise hum logan ki jaban ke divala nikali, aur bahut din tak maiya sath na diyan.

Jaise jaise dhire dhire apan basati banailan taise taise apan bhasha ka vishtar karlan. Itna ki ka bolabah chini se leke Sahebava bhi Bhojpuri bole lagalan.

Aaj Mauritius mein Bhojpuri ki charcha kuch jyada hi phailal ba. Dekha jayi t in sab ke piche anek sansathavon aur purushon ki sahayata ba, jaise ki, Mauritius ki sarkar, Gopio International, Mahātma Gandhi Institute, Mauritius ke Radio Television, Mauritius ke Bhojpuri aur videsh ke gayakon aur lekhakon ke bhi bara yogyadan ba. Par saval ye uthth ba ki Bhojpuri jab pahale hi se Mauritius ki bhashavon mein shamil ba jo ki Hindu aur Muslim donon jaati is bhasha ko khoob bolate aiyalan ba th ab Bhojpuri ko kahe ego dulhan ki jaisan phir se sajavat jaat ba? Baat ka ba?

Va jah t doodh ki tarah bilkool saaf ba. Bhojpuri bhasha jo pooraniyan ki jaan aur hum logan ki shan rahal ba vo vaqt ke sath bina vah thore samay ke liye dhire- dhire pighal gayil rahalan. Sanchet roop se dekha jai th ismein kisi ki galati hi na ba kyon ki jab se pooraniyan Mauritius mein ake apan jhanda garalan ja tab se sirf Bhojpuri bhasha mein hi bol chal karalan, vo itna Hindu aur Musalmanon mein prachalit ralan ki na kabhi

likhayi ya parhayi ke jaroori samajha gayil. Ya th unlogan ki laaparvahi, ya baad kismati rahal, doosri bhasha sikhane ke chakkar mein apani matri bhasha ko thora piche chor delan ja. Itna ki doosari bhasha ko mehamaan ke roop mein bhagvan ka daraja de ke apan khoo ki boli gila karalan ja, ya th halat se ma jaboore koyi suvida hi naa milal Bhojpuri age barai ke. Par jahan tak sakalan vahan tak apan bhasha samabhalane ki poori kaushis karalan ja. Jab kisi vishay par vistar karlan ja chahe Ramayan ho ya Geeta, Mahabharata ya Upanishad, Hanuman Chalisa ya Koran sab ke sab apane poore lagav ke sath kari si kari shabd chahe hindi, sanskrit ya urdu mein ho vo tor phor ke apan samajh ke anushar Bhojpuri mein apan sunanevalan ko samajha ke dil behelayilan.

Ye shayad unlogan ko apan rashtriya bhasha se lagav rahal aur aaj unlogan ki mehnati se bahut logan ko hindi, urdu aur sanskrit ka gyan prapt hone ka mauka milal jin ke jariye saubhagya se hum aaj tak apan poorkhon ki mitti se judal hayi ja. Aaj gaurv se keh sakat hayija ki Mauritius ka naam aaj Bharat desh mein prachlit ba aur 'Ek Chota Bharat' kehelaya jaat ba.

Vaki hi hum logan ki pehachan aaj bharat desh mein khas tor pe Bihar mein kuch jyada bar gayil ba par hum logan ke thora laparvahi se Bhojpuri vaise ke vaise hi rah gayil ba. Hindi aur doosari bhasha par jyada dhyan dene ke karan Bhojpuri bhasha par itna dabav par gayil ba jaise lagat ba ki i bhasha Mauritius mein kabhi bolal ya sunal hi na gayil ba, khash tor par England aur Europe ke kuch deson mein, jab ki sab logan

ko s etihashik baat se parichit ba ki hum logan ke baap dada varason se apan bhasha se judal rahalan aur logan isi ke bal se apan roti kamayilan ja aur sath mein desh ki pragati ke liye din dugni raat chauguni karalan.

Shayad isi ek khas vajah rahal ba Mauritius mein Bhojpuri poostakon ki bahut kami ba khas tor pe Upaniyas, Kahani aur Kavita. Bahut se lekhak apne apne tarike se Bhojpuri ko age barai ki kaushish mein lagal havan ja par prasna ye uthhal ba ki jab ki sab logan ka dhyan doosari bhasha ke prati baral ba th ka koi Bhojpuri lekh saharian ja? Likhayi jai th kis tarike se? Jab ki Hindi aur Urdu parhne aur bolane valon ki sankhiyan bhojpurian premi se jyada ba?

Ab jab ki Mauritius ki sarkar theka lele havan Bhojpuri ma ko ab ek aupcharik bhasha ke roop mein har sarkari school mein likhaya aur parhaya jayi par jab tak in sab ki tyari barhi tej rafatar se chalat ba, aur vo bhi Bhojpuri Speaking Union ki taraf se, hum logan vahi bare maje se bolat aur sunalal poorvaaj ki bhasha ka labh uthavat hayi ja.

Tab tak hum apan taraf se Bhojpuri premi ke liye is poostak bhet karat hayi jo ki hamaro pooranian ke bolal aur sunal bhasha mein likhal gayil ba jo ki hum log chote se bolate ayil hayi ja. Sath sath apan tahe dil se i poostakava ek shradhanjali ke roop mein apan pooraniyan ko bhi samarpan karat jin ke bina hamar lekh adhoora rah jai.

Etihāsik taur pe Mauritius mein pooraniyan ki Bhojpuri ki gaharahi mein jhankh ke dekha jayi t i baat spaast ba ki hum logan ki Bhojpuri kisi doosri sud bhasha se kum na ba. Kaise? Shabdon ka upyog barhi asani se har ek vyankhan poore soch samajh ke bola jaat ba. Jaise ki bhuth aur vartaman barhi sauhdani se prayog kiya jala. I baat Mauritius ke Bhojpuri Kavita sangrah jo 2012 mein chapa gayil ba Mahatma Gandhi Institute gavahi ba.

Is poostak ka yehi laksh ba ki is choti si kahani ke adhar se hum apan prastav prastut karat hayi taki parhane valon ko apani bhasha ki pehechan barhi. Agar hum logan Bhojpuri mein kuch likhana ya parhna chahab ja to bin sankoch ke sath kar sakab ja. Is mein anand hi anand ba.

Jahan tak hamar vichar ba chahe koi bhi bhasha hoyi agar hum unkar pragati dekhe chahab jaatkuch na kuch kare ke chahi. Vaise hum chahe kitane salon se England mein basal hayi phir bhi hamar dil Bhojpuri se aisan judal ba ki jaise hamara khud aisan lagat ba ki hum ego Biharee Baabu se kum na hayi. Chote se bara tak humlog ghar pe Bhojpuri bolate ayli ja. Hamaro pita ji Shri Balmitram Sohodeb, ji jo ki 'Manilall Chateur' se Mauritius mein mashoor rahal aur humri ma, Kesari, hum sab bhayi bahin ek sath ghar ya bahar mein yehi bhasha bolani ja. Mano hum logan isi bhasha ke bal se bara hoyil. Yahan tak ki videsh mein bhi hum is bhasha ka upyog karat hayi ja itna hi nahin balki humri patni, Premila, is bhasha mein hum se baat karne mein kabhi na hichakal ba. Aur unakar prabhav hum logan ke santan Roma aur Bansi Yash jin ki paidais London

mein hoyil ba hum logan ki baat chit sun sun ke thori Bhojpuri jan gayilan havan ja. Aur jab jab ve log apan chuttiyan manane Mauritius jaat ba th bahut asani se apani tuti phuti Bhojpuri bhasha ki sahayata se apan dada dadi, nana, nani, mausa, mausi, phoophu, phoophi, chacchere bhayi aur bahin ke sath bare aram se baat chit kar levat ba.

Jab sochilla th hamar dil bara dukhe la ki aaj tak hamara ek bhi hum logan ki Bhojpuri bhasha mein na koi Upaniyash ya Kahani parhne ka mauka prapt hoyil ba. Agar likhal gayila ba th shayad England tak pahuchal hi na ba. Is poostak ke madhyam se hum i kausish mein lagal hayi ke phir se hum logan ke dil mein aisan josh paida hoyi jaisan lagi hamari jaban phir se paida ho gayil ba. Isi liye is poostak ko hum Romanised aur Hindi lipi [Devanagri] mein prastut karale hayi taki poostak premi apan maraji anoosar kisi bhi lipi mein asani se parh ke labh utha sakiyan.

Is poostak ki kahani kisi aam adami par adharit ba jo apan parivar ki khushi ke liye har mor se larelan. Shadi ke baad jab unlogan ke ghar mein ego suputr paida hovela tab unkar prerana aur bar jala ki vo bara hoke unlogan ki seva kariyan vo bhi ek adarsh purush, Shravan Kumar ke jaisan. Kya ye sambhav hoyi? Kya ik Biharee Baabu doosara Biharee Baabu jaisan nikaliyan? Ye toh kahani ka ant mein parhne hi se pathā chali.

CHAPTER 1

Adhyai - Vasudev ki parvarish/ Balbir

Vasudev jab dus sal ke rahal tab unkar ma baap ego hadasa mein guzar gayilan rahal. Unkar dekh bhal unkar dada, Harish, aur dadi, Keseri bare pyar se unkar dekh bhal aur palan poshan karlan. Vasudev apan dada aur dadi ji ko apan bhagvan manat rahal. Har roj savere savere uth ke bhagvan se yehi pratana karat rahat ki donon hazaron sal jiyen aur bara hoke unlogon ke dekh bhal kariyan. Vasudev, apan dada se Bihar ke bare mein bahut acchi acchi batiyan sunane ka mauka prapt karlan. Unkara sunkar bahut ascharya lagat ki kaise dada ji apan desh chor kar sat samundar par Mauritius ayilan ego nayi zindagi suru kare liye apan parivar ki bhalai ke liye. Vasudev apan dada se bahut chisein sikhalan. Har sham apan gobar se lipal jhōmpariya ke anganamein imli ke pēra ke niche baith kar harmonium dholak bajake khoob Ramayan chalisa aur birha bhi sikhlan. Bad kismat se dada aur dadi ji ki bimari ke karan Vasudev ko bachpan hi se mauka hi naa milal kuch parhayi ya likhayi kare ke. Jab Vasudev terah saal ke hoyil tab unkar dadi achanak se bimar ho gayilan aur unkar dehant ho gayil. Unkar dada ji bahut dukhit par gayilan jaise ki asaman tut gayil rahal. Thore din na kuch khayilan pilan. Har sham apan angana mein baith ke prabhu se yehi prathana karat ki unkar atama ke shanti mile. Ghar mein dadi ki kaam i bahut lagat rahat. Dada ji ko bahut fikra hovat ki agar unkara bhi kuch ho jai th Vasudev ki dekh bhal kaun kariyan. Dada ji ke dimag mein kuch dinon tak ye baat atakal rahal inkar hal kaise nikaliyan.

Cheh mahine bit gayil rahal jab ek din dada ji apan hosh sambhalan ki ab unkar dharam patni lauth ke kabhi na aiyan. Dada ji kafi burha ho gayil rahal aur unkar tabiyat uthana thik na rahal. Ek savere jab vo apan chaukat se bahar nikalan apan baila ko thora pani pilai ke tab usi samay achanak se unkar sar pe ego chakkar ayil aur jhat se zamin par gir gailan.

Vasudev! Vasudev! Vasudev kar ke jab chillayilan: 'Beta jaladi se avah' tab Vasudev ko baat samajh mein ayil shayad dada ji ko kuch hoyil ba. Fata phat apan dhoti sariya ke sar pe pagri band ke jab bahar zamin par pair rakalan tab unkar aisan thes pahuchal ki ka bol bah. Jab dekhalan dada ji zamin par besahara paral havan th unkar ankh se ansoo nadi ki tarah bahe lagal: 'Dada ji ap ki tabiyat accha na ba ka ho?'

'Sab theek hoyi jai beta prabu ji ki kripa se, tu kahe ghabarat havah zara hamara uthake ke bistar tak sahayatah karah ho'

'Han zaroor dada ji'

Vasudev dada ji ko khatiya par leta ke unkar hāth pakar ke bolalan: 'Dada ji pareshan hone ki konon baat na ba abhi hum vaid ji ko le ke ayila ap ko jaladi se accha kar deyi.

Dada ji mushkura ke bolat ba: 'Ab is umar mein ilaj se kaun phayada ba. Tu apan vaqt barbad na karah hamara apan hal pe chor dah. Beta tu apan kaam karah dekhah agar aaj ganna karkhana tak na pohuchi th Sahebava bahut naraz ho jaiyan... aur han... thora bailavan ko pani pila diyah... sunah...aur han

ikh ke pathte bhi khila diyah...bechara bahut bhookha pyasa hoyian.

‘Han dada ji hum abhi ghash pani dekar avat’

‘Tu apan kaam par jah’

‘I sab t theek ba parantu Sahebava jab suniyan ki aap bimar havah th zaroor samajhiyan ki isi karan aaj hum logan se koi savari na hol. Sach manabah t vo bahut gussa na kariyan.

‘Vasudev tu i bharam mein na rahiyah. Sahebava sirf apan dekhelan unkara hum logan se koi matalab na ba. Agar aaj kaam na hoyil t vo hum logan ko kabhi maaf na kariyan. Ek bar hamare hi jaisan Karim bechara bimar ho gayil rahalan parantu Sahebava ke pair pakar kar maaf mangane par bhi vo unkara chama na karalan balaki barale mein unkara aur dand delan. Sahebava na jane kaisan pathtar dil insan havan.’

‘Kaisan dand?’

‘Karim ko apan khet se dhakka mar ke nikal dele rahal aur baad le mein kisi dushre kisan ko dedelan.’

‘Karim chacha apan jivan kaise katlan vo upar vala hi jaanat? Gali gali thora din idhar udhar bhāthakalan aur phir apan dum tor delan.’

‘Dada ji, Karim chacha ke parivar ke jivan ka kaise goozara hoyil?’

‘Prabhu ka lakh lakh shrukriya rahal ki unkar aage piche koi na rahal. Bari dukh se apan ek vakt ki roti nikalat rahalan. Hum logan ke sath ek do din Teheralan: ‘He data vo jaha bhi havan unkar par daya kariyah’

‘Dada ji i th kab ki baat ha ab sab theek ba ...ab sab kuch baral gayil ba ho.’

‘Kuch na badlal ba sab vaise ke vaise hi ba sab Sahebava ke hāth mein ba. Hum unkar hāth mein ek kathputli hayi ja. Hum na चाहत tu gali gali thokar khaibah beta. Tu hamari baat manah jaladi se jake apan kaam mein lag ja.’

Vasudev jhat se apan muh latakaye sar hilate apan dada ji se bolalan: ‘Dada ji jo aap ki agya. Jane se pahale ap ke liye kuch layi ho?’

‘Ha thora pani piladah beta’

‘Zaroor’

Teji se pani bharal pital ke lota apan hāth mein utha ke dada ji ke aur barailan aur do ghut pilake bolat: ‘Dada ji aap apan svast par dhyān rakhiyah hum aaj jaladi se kaam kar ke ghar lauthab. Aap ko koi chinta karane ki zaroorat nahi hum ghar lautate hi sab kuch sambhal levab. Aur dada ji aaj sham ko hum palak roti banab aur achar ke sath khoob maje se khaab ja.’

Jaise Vasudev apan angana se bahar nikalan dada ji man hi man muskura ke bolat: ‘Hamar Vasudev kitna bhola ba.. hamar

kitna khayal rakhela. He prabhu hum t apan jivan ji leli ab unkar raksha kariyah. Abhi to betava javan ba unkar sara jivan age paral ba. Kab Sahebva se chuthakara mili? Kab bacchava ke jivan mein bahar ay sab aap ki maraji malik.....?

Jaise Vasudev savari le ke raste mein nikalan unke man mein ego ghabrahat si hoyil lagal: 'Dada ji kaun halat mein hoyan aur unkar tabiyat kaise hoi.' Vo itna soch mein paral rahalan ki aaj chup chap sar jhuka ke hāth mein bansoori hilate hilate apan gari chalavat rahalan jab acchanak Balbir unkara tokelan: 'Vah bhayi vah aaj na Ram na salam tohara ka hol ba ho? Tohar pyari pyari geetvah aaj sunai nahi devat ba. Tohar bansi ki dhoonava kahe khoye khoye si ba. Ka hum logan se koi bhool ho galaba ...ki tu naraz havah ? Accha aaj dada ji kidhar havan? Aaj unkara ego chutti dele havah ka?'

'Are na re chacha aisan konon baat na ba aaj hamara thora pareshani ba?'

'Pareshani ! Konon garbar hol ba ka ho?'

'Hum is liye pareshan hayi ki dada ji savere zamin par giral paral rahalan. Hamara ek ghabaraht si hol ba ki unkara kahe aise acchanak si daura paral.'

'Accha th I ba tava ba. T beta vaid ji ka ilaj batailan?'

'Hum vaid ji ke paas jaat hi rahani dada ji saaf mana kar delan ki unkara kuch na hol ba aur kahane lagalan ki Sahebava naraz ho jaiyan agar aaj ganna karkhana na pohoochi th.'

'I t saaf baat ba bhaiya. Tu mat ghabaravah araam se apan kaam sambhalah hum aur thori der baad apan ghar lauthate samay tohore ghar ka rasta levab aur dada ji se milate jab. Hamar par bharosa karah hum sab kuch sambhal levab. Tu aram se kaam par ja.'

'I th aap ki bahut kripa hoi chacha.'

Balbir ki baat sunate Vasudev ka man thora halaka sa ho gayil aur apane aap se bole la: 'Dada ji hamesha yehi kehate ayil ba agar pyar se doosare ke sath rahba t, neki ka phal mitha rahi...ab hum ko baat samajh mein ayil kahe sabhi se pyar se mil ke rahe ke chahe la aur kabhi kisi ki ninda na kare ke chahi... na jane kis roop mein bhagvan mil jay. Vah dada ji aap mahān havah. He prabhu sab theek kar diyah.'

Vasudev khushi se pagal hoke zor zor se mithi mithi kabir ji ke dohe bole lagalan aur bansoori bajake phir se sare kishan ke dil bahlane ki kaushish karat ba.

Balbir dada ji ke sath

Jab bail gari ki avaz dada ji ko sunai del tab vo ek dam chonk gayilan aur jhat se avaz devat: 'Beta Vasudev aaj bahut jaladi kaam ho gayil.'

'Na dada ji hum Vasudev thori hayi hum t Balbir hayi abhi Vasudev khet gayil ba kuch der baad lauthiyan.'

‘Balbir, ka baat ba beta...tohar svast sab theek ba na, aaj kaam se chuthti lele havah ka?’

‘Aaj hamar bhagya na rahal, thora hi kaam milal aur jab Vasudev batayilan ki aap ki tabiyat uthana theek na baat hum se raha na gayil aur aap ko dekhene ka ek bahana ho gayil’

‘Balbir andar avah zara paas to baithah, kafi door rahelah kahe kast uthayilah hum t theek hayi bhaiya?’

‘Dada ji ab hamara kahe sármindā karat havah mana hum door rahila lekin isi raste se haroj nikalilah aap t apan havah ab dekhe bina kaise jaib.’

‘Accha chalah theek bolat havah.’

Balbir uthavala sa rahalan kab dada ji ko apan man ki baat bataiyan. ‘Jhat se unkar khatiya ke paas zamin par baith ke bolat: ‘Accha dada ji batavah na ho aap ko kaun kast ba, kahe itna dookhi dikhayi devat havah?’

Dada ji ego geheri sans leke uthar devat ba: ‘Balbir zara ek do ghuth pani piladah bhaiya hamara ab na jane kab tohar hāth se pani piye ka mauka mili.’

Balbir chauk ke zamin se uth ke jaladi se dada ji ko ego gilash ke bartan se thora pani pilaiyan. Dada ji pani pite hi apan mooch poch ke bolat ba: ‘Vah beta Balbir tohar hāth mein t jadu ba hamara aisan lagat ba ki ab jaan mein jaan ayilaba. Avah hamar paas baithah zamin par na.’

Dada ji ki baat sunkar Balbir ko accha lagal. Unkara aisan lagal ki chalo apan man ki baat bol diyan, akhir kab tak pet mein daba ke rakhiyan: ‘Aaj mauka milate hi dil khol ke bata devab.’ Sar jhuka ke bahut adar se bolat: ‘Na dada ji i zamin hi theek ba.’

‘Dekh Balbir hum umar mein tohar se bahut bara hayi par hamar aur tohar bich mein koi fasla na ba bhaiya tu ego hamar dost ke saman havah. Avah avah upar baithah ho.’

Balbir dada ji ki baat sunkar bahut khush hoyilan aur jhat se khatiya par baith gayilan aur dada ji ke hāth pakar ke bolat ba: ‘Dada ji aap ke liye thora bhojan paros ke lai agar khana na taiyar baa t kuch banai dela ho?’

‘Na re hamara khayi ke kuch man hi na ba... kuch na chahi, aram se baithah tohar pyar kafi ba.’

‘Par dada ji asvast hone ka bhi karan samay samay par na khane se bhi hovat ba.’

‘Balbir hum theek hayi re’

‘Maaf kariyah dada ji hamara na jane kahe aisan lagat ba ki aap ke man mein koi baat uchal rahal ba jo bol na pavat havah ab hamara apan samajhat havah t jara khool ke apan man ki batiya bolah na ho.’

‘Balbir bahut dinon se hum yehi soch rahat hayi ab hum aur kitane din tak jiyab. Vasudeva ko chota se pal posali ab dekhah

unkar dadi ma bhi guzar gayilan. Ab hum guzar jab t unkar dekh bhal kaun kari?’

‘Dada ji yehi baat aap ko andar andar se khat ba. Aho dada ji hum log kahe ke hayija. Kahe ghabarat havah? Vasudev hum log ke sath aa ke rah sakiyan. Akhir hum kaun paraya hayija.’

‘I sab ta theek ba lekin Vasudev kab tak dusron ke bojh baniyan.’

‘I ka bolat hava dada ji. Vasudev akhir apan hi beta saman havan.’

‘Is mein koi sakh nahi ba phir bhi hum chahat hayi ki hamar jaane ke baad vo i jhōmpaṛīya mein apan jivan aram se guzara kariyan. Hum logan ke angan se bahut yadein judal ba agar ek bar kahani shuru karab t shayad din lag jayi samapt karane mein....’

‘Hum samajh sakat hayi aap ka bole chahat havah. Hamar dada ji yehi kaha karat rahalan ki apan mandir kahan utha ke le jayi ba. Vo ye bhi bolat rahatalan ki jab jahaz se utaralan Kuli Ghat ke baad unkar pehala aur akhri thikana ek hi jagah par rahal. Unkar liye unkar ghar ki mitti Kashi ke saman aur paroshi ke zamin mano Mathura. Dada ji ke dehant ke baad pita ji bhi is jagah na choralan aur jab se vo bhi bhagvan ke pyare hoyilan tab se hum logan abhi tak vohi jagah par basal hayija. Aa p theek hi bolat havah dada ji.’

‘Chalah Balbir baat tohara samajh mein ayil. Akhir kaise hum chahab ki vo apan nivas Choriyan.’

‘Sahi bolat hava dada ji’

‘I baat ba th hamara sirf ego akhri upay laukat ba unkar lagan kar deike.’

‘Ab hamar umar kahan ba unkar liye jake ego acchi si dulahin khoje ke.’

‘I th barabar bolat havah ho.’

‘Balbir ego acchi larki dekhiyah t hamar babooa ke liye.’

‘zaroor dada ji.’

Balbir thora der ke liye chup ho gayil. Dada ji ko ascharya hoyil. Dada ji ko na jane kahe aisan lagal ki Balbir ke man mein kuch latakal ba par nikal na pavat ba. Jhat se bolat: ‘Han t Balbir ka tohar aas paas ya parivar mein koi janal pahacānal kuvari laraki ba jo hamar Vasudev ki dulhaniya bane ki layak hoi?’

Balbir thora ghabara ke bolat: ‘Han dada ji ego bahut acchi chokari ba hum logan ke parivar mein par shayad aap logan ke barabari ke na hoiyan.’

‘Tohar kehne ka matalab samajh mein na ayil?’

‘Balbir apan sar jhuka ke, zamin ki aur dekh ke thar thara ke bolat ba: ‘Yehi ki chokariya tohari jaat ke na havan.’

Dada ji sar hila ke aur muskura ke ishara kar ke bolat ba: 'Balbir beta hamar paas avah' aur unkar hāth pakar ke samajhavat ba 'Sach poochaba t hamara aaj tak tohari dadi ka jaat paat na pathā chalal ba. Balbir i bhram mein na rahiyah ki hum logan ko ek hi jaat se samband rakhe ke zaroori ba ya to apan laraka ya laraki ki shadi sirf apan hi biradri ke sath kare ke chahi. Balbir is duniya mein na koi bara ba na chota. Hum log ke karmon ka phal isi mitti par mili. Beta kabhi tu i kahavat sunale havah: 'Mati kahe kumhar se tu kya ronade mohe ek din aisa ayega jab rondugi tohe.' Arthāth mitti kumhar se bolat ba ki tu sochatavah ki tohare haq ba hamara more ke. Morah jab tak more sakat ba ek din aisan ayi ki hum tohara morab'. Beta hum sab logan ko accha karam kare ke chahi, hum sab mitti ke putale hayi ja, jaati pati se kaun matalab aur sab ke sab mitti mein hi gar jayib ja. Beta aur ego kahavat yad aagal zara dhyan se suniyah: 'Poti parhi parhi jag mua, pandit bhayia na koi, dhai akchar prem ka parhe so pandit hoyi.' Arthāth: 'koi chahe duniya bhar ki pustak parhaliyan vo gyani na baniyan par jo sirf pyar ke do char aksar parhaiyan t pandit kehelaiyan.' Beta dusron ki choti choti batein jo jaat paat ke vishay par ba unlogan ke bahake mein na aiyah. Hum logan ko ek dusare ke prati prem saubhavik se jiye ke chahi. Itna yaad kariyah hum sab ke sirf ek malik ba.'

Balbir apane aap ko thora śarmindā mahasūs karlan ki zinadagi mein kabhi soch na sakat ki dada ji unkara itani lambi chauri bhashan jaat paat ke bare mein sunaiyan. Phir bhi aaj unkar man ka bojh thora halka sa ho gayil ki unkara ego mauka milal apan bahin ke vivah prastav rakhe ke. Bare pyar se dada ji ke donon hāth pakar ke bolalan: 'Maaf kariyah dada ji agar hum aap ko anjane mein koi Thes pahunchaili t.'

Dada ji turant javab devat ba: 'Are beta sab ko apan apan vichar jaat path ke bare mein ba. Hum khush hayi ki tu apan vichar prastut karalah. Chalah tohar chati bhi thora halaka ho gayil.'

'Vah dada ji aap t bahut mahān havah ki hum jaisan ko pyar se apanavat havah.'

Balbir ab mauka na ganvai chahalan. Thori der ke liye soChat kaise Vasudev ka hāth apan bahin ke liye mangian. Bari saudhani se dada ji ko dekh ke bolat: 'Accha t dada ji kyon na aap Vasudev ke liye ego accha jivan sangi Dhundat havah?'

'Tohar vichar theek ba... ab sab malik ke hāth mein ba.. accha tohar bahin kaise ba unkar biyah hol gayil ki nahi?'

'Dada ji abhi tak t vo kuvari ba.'

Dada ji thora sa chok gayilan ki kaise unke man mein i soch na paida hoyil ki Balbir ke ghar hi mein ego javan laraki ba jo vivah ke layak ba. Dada ji musukura ke bolata: 'Balbir tohari pyari bahin ka naam ka ba ho hum t bhool hi gayili, maaf kariyah bahut din se dekhele nahi hayi?'

'Durga'

'Pyara naam ba. Han, t aaj kal ka karat ba?'

'Prabhu ki kripa se hamaro bahuriya ke kaam kaaj par hāth batavat ba.'

'Unkar shadi kyon na kar devat havah?'

'Hum i kaushish mein lagal hayi par abhi tak ashafal aur vo bechari ghar par kuvari ba. Unkar liye ego var naa milal ba ho. Isi chinta hamara khayil jaat ba.'

'Are beta ghuma phira ke kahe baat karat havah. Jab tohari bahin kuvari ba aur tohara itna chinta hovat baa t hamara aisan lagat ba ki tu unhi ke bare mein hamar se baat kare se kahe hichakat havah?'

'Ji dada ji aap sahi andaz lagayilah.'

'Vah beta hamara pathā hi na chalal kab betiya bara ho gayillan. Agar tohar bagal se han baa t manah hamara konon etaraz na ba. Hum saaf saaf keh devat ki dahej mein hum logan ko kuch na chahi. Itna tohara aur bata devat hayi ki hamar paas kuch dene ko bhi shakti na ba. Jo thora paisa rahal vo Sahebava ko chukana paral kyon ki udhar mein gari lele rahali. Abhi t hum logan ko aur thora karja chukai ke ba. Pata na chalat ba kaise chookavab ja jab is sal toofan aur garmi ke karan fasal mein bara nooksan hoyil ba.'

Dada ji hāth uthakar upar dekh ke bolat: 'Na jane is sal lagan kaise bhari jayi, he prabhu aap hi sambhaliyah'

'Dada ji aap kahe khamokham pareshan hovat havah. Hum logan ko kuch nahi chahi. Hamari bahin ko sirf ego accha pati mil jayi aur unkar ghar bas jai isi mein hum sab ki khushi ba.'

Par ek bar aap Vasudev se pooch liyah lagan se khush havan ya na.'

'Are beta tu is bare mein chinta mat karah hum apan aur se sambhal levab. Tu sirf lagan ke muhurat nikalah aur vivah ke din pakka karah.'

Balbir khusi se bulbulla hoke dada ji ke pav choo ke ashirvad levat: 'Accha dada ji agya dah hum raste mein pandit ji se milte jayib aur jaise muhurat nikali hum tohara ake soochit kar devab.'

Theek bolat havah beta, han aur ek baat bhool gayil rahani tohara bole ke jab hum logan ke paas paisa na baat accha hoi agar hum teeluck ke chakkar mein na phasab ja... accha... sambhal ke jaiya beta.'

'Theek ba, jo ap ki agya.'

Ik taraf Balbir khush rahal ki unaki bahin ka vivah hoi par dusari taraf bari soch mein paral rahal: 'Kya Vasudev vivah kare se raji hoiyan.....he prabhu tohar hāth mein sab kuch ba Vasudev ko sambhaliyah.'

Sham kafi Dhal gal rahal aur Vasudev abhi tak ghar na lauthal rahal. Dada ji bahut chintit rahal. Paresan se vyakul dada ji dhire dhire khatiya se uthar kar hāth mein lantern le ke bahar niklat hi rahalan jab ki achanak ek gari ke pahiyē ki avaz sunai deyil. Bari dhimi svar se halla karat: 'Vasudev aaj bahut der lagah delah babooa.'

Thaka huva Vasudev bolata: ' Han dada ji aaj ek dam der ho gayil.'

'Sab theek ba na beta?'

'Dada ji aap bahar ka karat havah? Aap andar ja hum bail ko thora pani piya ke abhi avat hayi aur aram se baat karab jah.'

Dada ji bahut pareshan rahalan ki ghar par khana na banal rahal. 'Vasudev bhookha hoyil.' Jaladi se rasōṭī mein jake aag sulgayilan. Aag ko tej kare khatir apan muh se ego phookani se phookhe lagalan. Jaise ek dibba se thora chaval nikale ki kaushish karalan bas usi samay achanak Vasudev rasōṭī mein pravesch hoyilan. Dada ji ko dekh ke ankh mein lor aa gayal aur bare bhav ke sath bolat: 'Dada ji aap rasōṭī mein ka karat havah ho.....han aap ko phookani se chulaha phookane ki ka zaroorie ba? Aap ko t bahut aram kare ke chahi. Aap aram karah hum sab sambhallevab.'

'Are na beta tu din bhar kuch khayile na hoybah. Jake tu snan kara tab tak hum tohar liye thora khichadi banayila.'

'Na dada ji chorah i sab hum dekh levab hamara sab samajh mein avat ba ki aap ko hamara bahut chinta ba. Ab t hum koi baccha to nahi. Hum aap aur khud ke dekh bhal acchi tarah se kar sakab. Jahan tak bhojan ka saval ba hum aap ke liye roti aur sabaji sath mein leke ayil hayi.'

'Kahan se tohara roti aur sabji milal?'

‘Hariya chacha kuch jyada hi anale rahalan aur jab aap ko khet mein na dekhalan th hamara bolalan: ‘Dada ji ko hamar bahuriya ki roti bahut paasand lagela ghar jake dada ji ko de diyah.’ Han, aur bolalan ki apan khayal rakhiyah kal jab aap se miliyan t khoob gap sap kariyan.’

‘Prabhu Hariya aur unkar parivar ko sookhi de. Hum logan ka khayal jab dekhba tab rakhelan. Ab dekhah kaise roti bhi bhejele ba.’

‘Dada ji Hariya chacha ke ghar ki roti sachmuch bahut svadist ba.’

‘Beta I t hoyebe hi kari kyon ki bahut pyar se unaki dulhaniya banavelan.’

‘Dada ji aap ki ye baat se hum sahi sahmat hayi.’

‘Accha itna batava aaj tohara kahe deri ho gayil.’

‘Dada ji aaj hum bar bar marane se bach gayali.’

Dada ji ghabara gayilan aur jhat se Vasudev ka dayan hāth pakar ke puchat ba: ‘Ka hoyil babooa sunavah th? Tohara koi chot lagal ba ka? Dekhah hamar se kuch na chupavah, hum theek hayi, jaladi se bolah.. bolah.. ?’

‘Dada ji ab aap se ka chupavab. Aaj Rahim chacha kaam par na ayil sakalan aur Balbir chacha jaladi hi nikal gayilan. Sahebava bahut gussa mein rahalan vo hum ke bolalan ki aaj hi sab jalal ganna utha ke karkhana le jaike. Ab hum ghar jaladi lauthane

ki kaushish mein rahani aur gari mein kuch jyada hi ganna lad dele rahani. Ek do bar jab hum khet se karkhana gayili th koi kast na hoyil. Par jab antim bar karkhana ki aur jaat rahali bail bechara kuch jyada hi thak gayil rahal aur pair kaamjor hone ke karan raste char na sakat rahalan. Thori der ke liye jab rookal t hamara thora gussa ayil. Jab unkar pith par chari chalaini kuch der ke liye daural phir aisan giral mano jaise sara baad al gir paral. Itane mein sab ganna gari se ulat ke sarak par jama ho gayil. Gari ke ego pahiya nikal ke thori door tak chal gayil. Hum bahut ghabara gayali. Prabhu ka lakh lakh sookriya ki Ramoo chacha hamar piche apan gari chalavat rahalan. Hum donon mil ke lag bhag do ya teen ghante tak gari ke pahiyee theek karani ja aur phir se ganna bharali ja. Jab tak ki hum donon gari ko sambhalat rahali tab tak donon jana ke baila khub aram karalan. Jab hum phir se savari shuru karani jaatkoi dikkat na hoyil. Aur pata hi na chalal kab samay nikal gayil. Dada ji chama kariyah hum aap ko aisan hal mein akela chor ke kaam par itani der tak rukal rahani.

‘Are beta tu kahe hamara sarmindā karat hava aur apane aap ko kahe doshi theharavat havah, sab malik ki marji ha. Ye sab unkar khela ha.’

Vasudev ki ankhon mein phir se ansoo bhar gayil: ‘Dada ji ye to aap ka barappan ha. Accha batavah aap ki tabiyat kaise ba aur kuch khayilah pilah ki nahi?’

‘Sab kuch kushal mangal ba babooa. Aaj jab se Balbir se baat chit hoyil ba tab se mano hamar pet bhar gayil jaise ki hamar sab rog door ho gayil ba?’

‘Dada ji batavah Balbir chacha ke sath koi vaid ayil rahal ka ho?’

‘Na re babooa’

‘To a ap ke liye koi jari buthi sath mein leke ayil rahalan ka?’

‘Na re’

‘To kuch bhojan apan sath anale rahalan ka ho?’

‘Na babooa ye sab baat chorah. Itna hi bolab ki aaj hamar chati se ek bhoj halka sa kar delan ba. Tohar se kuch zaroori baat kare ke ba.’

‘Dada ji maaf kariyah aap ki baat samajh mein na avat ba.’

‘Sunah babooa ghuma phira ke baat se koi matalab na ba avah thora hamare paas baithah sab kuch saaf saaf hamar kahane ka matalab ka ba ... hum aur kuch din ke mēhamān hayi....’

Vasudev ka chehera thora utharal rahal aur bahut betab rahal dada ji ki baat sune ke aur is se jyada dada ji aur kuch boliyan Vasudev keh uthalan: ‘Han accha thora baad mein hamara jo baat ba sarsant se sunaiyah pehle t hamar sath baith ke thora bhojan banalah.’

‘Na re babooa tu khalah hamara bilkul khane se man uth gayil
ba thora sarbaat hi piladah’

‘Jo aap ki marji’

‘Do chamach śakar daliyah aur ek nimbu’

‘Dada ji pathāh ba’

Vasudev sarabat ke sath h ek roti, thori sabaji aur aam ka achar
bhi leke ayilan.

Vasudev dada ji ki kumjori dekh ke aur unkar batein sunkar ro
ke bol parat: ‘Dada ji aap kahe aise bolat havah ho ap hi to
hamar mata pita aur sab kuch havah. Ab aap ke bina hum kaise
rahab,.’

‘Babooa yehi karan hum tohar bare mein soch rahat hayi.
Dekhah babooa hum chahat ki tohar byah ho jayi.’

Vasudev dada ji ki baat na samajhalan balki thora chonk gayil
rahal. Jhat se uth ke bolalan: ‘Dada ji aap kehena ka chahat
havah?’

‘Yehi ki tohar byah ho jai bhayi.’

‘Vyah! Vah dada ji abhi hi se hamar se chuthakara pane ki soch
mein lag gayil havah. Hum aap ki baat se bilkul sahamat nahin
hayi. Abhi abhi t aap ki seva sooroo karale hayi thora mauka t
dah. Dada ji agar hamar byah ho jai t aap ki seva kaise karab?’

‘Are babooa seva ki baat chorah thora apan seva ke bare mein sochah. Kaun tohar khatir pakai, roti banai, kapara dhoi aur ghar sambhaliyan? Akhir kaam t tohara haroj kare hi ke pari agar hum khet na jai sakab t ghar par hamara kaun sambhaliyan. Ek din t tohar shadi kare ke hi pari.’

Vasudev dada ji ki baat par thora jor dalat tab unkar khopariya mein samajh ayil ki unakar baat mein dum ba. Vo na chahat ba ki dada ji akele bistar par din bhar paral rahiyan aur ghar mein unkar dekh bhal kare ke koi na ba.

Phir bolat: ‘Dada ji jo aap ko sahi lagat ba hamara koi etaraz na ba ho.’

‘Han t babooa, aaj Balbir apan bahin, Durga, ke bare mein thora pareshan rehalan aur baat baat mein pathā chalal ki vo apan bahin ke liye ego accha larka dunadat havan, hum is mauke se phayada utha kar Durga ko apane ghar ki bahu banane ko taiyar ho gayani. Hum unkar hāth tohar liye mangleni ek sharth par ki vivah jaladi se ho jayi aur hum mein se koi bhi ek dusare ke parivar par dabav na daliyan dahej ke bare mein. Tohara t pathā ba ki hum bilkul dahej ke khilaf hayi aur kisi se is vishay par baat na karila. Hum t Balbir ko saaf saaf bol dele hayi ki hum logan ke paas kuch dey ke bachal na ba phir bhi vo apan bahin ka hāth dene mein razi havan.’

‘Dada ji ye sab t theek ba kya hum Durga ki dekh bhal kar sakab ja? Hum is liye prashn karat hayi ki hum logan ka jivan thora

rukha sukha se kat jala ab ego bholi bhali laraki ko apan yahan la ke dookhiyari na kar sakab ja.'

'Babooa baat sahi ba. Prabhu par thora visvas rakhah sab theek ho jayi ho. Hamara poora yakin ba ki Durga betiya tohar angan svarg jaisan bana diyan aur tohare logan ka jivan bahut khush rahi. Ja babooa aram karah kal hum Balbir se baat karab.'

Vasudev apan dada ji ki baat sunkar samajh gayilan ab unkar faisala atal ba aur unkar vivah ho ke hi rahi. Man mein bahut ghabrahat si hoyil rahal apan jivan mein kabhi kisi laraki se baat na karale rahal ab acchanak Durga se kaise baat hoyi aur vo bhi jo unkar dulahin baniyan. Apane aap ko koshat rahal ki agar Balbir dada ji se naa miltan th i chakkar mein na paratan. 'He prabhu hamar raksha kariyah jo hoyi so accha hi hoyi' bol ke so gayilan. Geheri nind mein ek bhayanak sapana dekhalan ki dada ji ki mrtyu ho gayil ba aur unkar antim sansakar kare ke liye koi na ba. Dar ke mare jab nind tutal ta dada ji ko sote dekh kar apan matha ponchat man hi man mein bolat: 'Aisan boora sapana kabhi hamar doosman ko bhi na ay. Dada ji hamar bhalai ke bare mein kitna sochat ba. Kal agar hum akela par jab t hamara ka hoyi. I batiya sapana mein samajhayil. Dada ji jo kahalan vo khoob soch samajh ke hi bolelan.

Chadar tham ke Vasudev phir se ego geheri sans le ke so gayilan.

Savere

Savere ke theek panch bajal rahal jab Vasudev ki nind tural. Unkara bara ascharya lagal ki dada ji abhi tak so rahal ba. Man mein itna hi khayal ayil shayad kal tabiyat accha na hone ke karan abhi tak asar paralba aur unkara bahut aram ki zaroorat ba. Kamre se dhire- dhire bahar nikalat aur lota leke maidan jaat. Dantavan karake, apan muh dhoke, baila ko pani piya ke, ikh ke pathte khila ke, phir se apan kamre ki taraf lauthat t apan dhoti, kurta aur pagri leke jhil ki taraf snan karne ko nikalat. Lauthane se pahale surya devata ki pooja kar ke jab jhōmparī vapas lauthat t dekhat dada ji ego lakari ke khamba pakar ke apan kamre mein kharā ba. Vasudev dada ji ko chup chap dek kar ghabara jaat ba. Ankh phar phar ke unkara dekhat. Unkara aisan istiti mein pahale kabhi na dekhele rahalan aur daur ke poochata: ‘Dada ji aap yahan kahe aise kharā hava ho? Ap ki tabiyat theek nahi ba ka ho?’

‘Babooa hum theek hayi tu hamar chinta mat karah. Thora chakkar ayil, sab theek ho jayi.’ Sar pakar ke bolat: ‘I kam bak hamesa ata jata rahela. Thora sa chai mili.’

‘Dada ji zaroor.. ka i bhi pooch e ke chahi’

Vasudev ko samajh mein ayil: ‘Shayad dada ji apan bimari hamar se choopai khojat ba. Unkara aram ki bahut zaroorat ba. Aaj chahe kuch bhi hoyi unkara khet jaane se hamara roke ke chahi.’

Vasudev jab chai le ke dada ji ke kamre mein gayilan t vo vahan n par na rahal. Vasudev apan khopariya khujalake ke sochat: 'Itani jaladi kahan chal gayilan? Jab khirki se bahar jhank ke dekhat havan t dada ji angana mein imli ke pēṛ ke tale baithal ba. Vahi se chillavat: 'Dada ji aap bahar kaahe baithhal havah ho, andar ake baithah, dhoop aaj bahut kara ba aap aur bimar ho jaiba.'

'N a re baboo aaj khoola asaman ke dekh kar hamara manava bahut accha lagat ba jaise ki hum bhi in urate panjhiyo ki tarah pank pasaar pasaar ke khoob ur ur ke jivan ka maja leb. Accha babooa samay ka hoyil ba?'

'Dada ji murga jab se bank le ba tab se lag bhag ek ghanta hoyil ba.'

'Zara hamar ghari mein dekhah t poora samay ka hoyil ba.'

'Dada ji tohar ghari kab ke rook gayil ba ho'

'Are han unkar kan khichabah th phir se chale lagi.'

'Abhi jake ap ki ghari ko theek karila.'

Dada ji apan ghari ko bahut sambhal ke rakhat rahal. Unkar pita ji unkar Bihar mein tofa dele rahalan. Jab jab dada ji apan ghari hāth mein pakartalan tab unkar aisan lagat jaise ki unkar hāth mein phir se Bihar ki mitti sona jaise chamkat ba aur poorani yadein phir se taja ho jaat rahal. Vasudev ko pata rahal ki ek bar dada ji ke hāth mein ghari lag jai t poora din

apan dukh bhoor jaat rahalan aur apan bite huve din ke bare mein lagatar baat chit karat hi rahatalan. Vasudev apan dada ji ki poorani kahani par bahut dilachasabi rakhatlan. Unkar tamanna rahal ki ek din vo bhi apan poorkhon ki mitti ka darshan kariyan aur dada ji ko apan sath Bihar ghoomaiyan. Jaise Vasudev dada ji ko ghari hāth me deke jaat ba taise Balbir apan bail gari anganava mein kharā karalan. Pranaam kar ke dada ji ko khush khabari sunayilan ki kunadali sab theek nikalal ba aur vivah ravivar ke tai ho saki.

Dada ji ka chehera jhat se khil uthal aur hash ke bolat ‘Balbir zara paas ah thora hum se gale milah bhaiya ab hum samdhi hayi ja.’

Balbir thora bechain rahal Vasudev se mile ke. Unkar man thora ghabarayil sa rahal ki kya dada ji Vasudev ko is rishate ke bare mein unkara bataile havan ki na? Unkar nazar idhar udhar chaukat par mandara rahal aur jab thori der baad Vasudev na dikhayi delan tab dada ji se poochata : ‘Vasudev nazar na avat ba kauno kaam se bahar nikalal havan ka?’

‘Are na Balbir.. vo andar ba shayad kuch kaam se bandal ba. Aram se baithah hum unkara abhi bulavat hayi.’

Dada ji jor se avaaaz deke pukarat: ‘Vasudev zara idhar avah dekhah kaun ayil ba.’

‘Ji dada ji ...abhi aya dada ji. Hamara pata ba ho Balbir chacha ayil ba unkar khatir thora chai banavat hayi.’

‘Bahut accha. Aur ek chai hamaro liye banaiyah’

‘Zaroor be fikr.’

Balbir dada ji ke sath baithhal vivah ke bare mein baat chit karat rahal jab Vasudev namaste bolate do gilash garam garam chai apan hāth mein le ke bahar nikallan. Balbir unkar dekha ke bahut khush hoyilan aur ek ghuth chai pike tarif karat ba: ‘Beta tu chai bahut accha banavelah’

‘Bahut dhanyavad par chacha hamara kahe śarmindā karat havah’

Itane mein dada ji Vasudev ki barai karane mein der na karalan aur phat se bolat: ‘Khana bhi bahut accha banavelan. Hamar babooa ba bahut mehanati ham itna keh sakab alsi bilkool na havan. Ha! .. jab se unkar dadi guzaral havan tab se le leke aaj tak hamar seva mein kuch kami na chorale havan. Vasudev ke hāth pakar ke doolar se bolat ba: ‘I hamar heera ha.’

Balbir man hi man bahut khush rahal ki unaki bahin ki vivah ego sadharan aur adarsh adami ke sath hoi. Par vo thora chintit rahal ki Vasudev rista se khush ba ki nahi. Unkar man mein vohi ek hi baat bar bar daurat ‘dada ji Vasudev ko sab kuch khol khol ke ba tayile havan ki na...unkar irada pooch ele havan ki na?’ Dada ji Balbir ka chehara dekha ke s ama jh gayil rahal unkar khopariya mein ka chalat ba. Jaladi se Vasudev ko ishara kar ke apan paas boolavat: ‘Babooa hamaro paas avah zara baithah tohar se ek do zaroori baat kareke ba.’

Vasudev ko pehle se hi pata rahal ki kaun vishay ke bare mein unkar bulaya gayilba. Dada ji ke paas jake baith gaylan.

Dada ji pyar se bolat: ‘Dekhah babooa tohar bahut samay na levab tohar vivah Balbir ki bahin ke sath pakka hogayil ba aur agale ravivar ko do pehar mein rakhil gayil ba... manalah aaj se sirf teen ya char din baad . Tu apan vivah ki taiyari mein lag jah. Balbir se baat ho gayil ba. Hum log apas mein kharacha sambhal levab ja aur bahut barati saat mein na le jayib ja.’

Dada ji ki baat sun ke Balbir ka man thora halaka sa hogayil aur jaladi se apan tokari se ego chota sa lota nikal ke usamein sava rupiya dal ke Vasudev ke hāth mein samavat ba. Vasudev adar se svikar karat aur unkar pav choo kar ke ashirvad levat.

Balbir ko phir se bara āścarya si lagal ki Vasudev Durga ke bare mein unkar se kuch na pooch alan: ‘Jab unkar pata chali ki Durga umar mein do saal se barhi havan t ka unkar khush rakhiyan?’ Balbir ko raha na gayil aur apan bahin ki khushi ke liye Vasudev se prashana karalan: ‘Beta ka tu is rista se khush havah nah?’

Vasudev ko is umar mein vivah ke bare mein ka pata sar jhuka ke bolat: ‘Jo dada ji ki agya... jo vo samajhat theek t theek hi hoi.’

Balbir dada ji ko namaskar kar ke apan ghar lauthalan aur vivah ki taiyari mein lag jaat ba. Vasudev bail gari lekar nikalat hi rahalan jab dada ji unkar rok ke bolat: ‘Mohan chacha aur

Yashoda chacchi se raste mein milate jaiyah aur kahiya hum unase mile chahat hai.’

‘zaroor dada ji’

Mohan chacha aur Yashoda chacchi dada ji ke poorane param mitr rahalan ja. Mohan chacha dada ji ke sath ek hi jahaz mein safar karale rahalan. Yashoda chacchi dada ji ko apan bhayi ke saman manat rahalan. Dada ji unke boore vakt mein bahut sahayata karale rahalan.

Dada ji har ghar aye mehman ko apan bhagvan manat rahalan. Mohan chacha aur Yashoda chacchi jab unke ghar pravesch hoyilan t mano vo sachmuch bhagvan ka roop dharan kar ke pragat hoyilan ja. Jab dada ji unlogon ko khush khabari sunayilan ki unkar babooa ka vivah tai hogayil ba th vo log khushi se pagal ho gayilan ja aur vivah ki sare zimmedari utha lelan ja. Dada ji thora sarmindā rahal ki bimari aur bhurape ke karan vo apan jigar ke tukara ki shadi mein poore tarah se apan hāth na batai sakal. Ishvar se yehi binati karat: ‘He prabhu shakti dah babooa ka vivah theek se ho jai.’

Mohan chacha aur Yashoda chacchi ko pata rahal ki unlogon ke sahayata bina dada ji akela sab kuch na sambhal sakiyan. Unlogon ko ye bhi samajh mein agal rahal ki dada ji asvast ke karan thora udas rahal. Bas ghar jane se pahale Mohan chacha aur Yashoda chacchi dada ji ke donon hāth pakar ke unkar sahas delan ja: ‘Bhaiya aaj se shadi manah hum logon ke ghar mein ba, munna t hum logon ke beta havan, hum sab sambhal levab ja, aap sirf apan svast par dhyān rakhah. Vasudev ki shadi

bare doom dham se karab ja sara gaon dekhete rehe jai. Hum log barati ke sang khoob saj dhaj ke nachate ga te jayib ja.'

Jab tak ki sham hovat sara gaon mein dhoom mach gayil rahal ki Vasudev Durga ke sath shadi kariyan aur vo bhi agale ravivar ko. Gaon logan ko bahut ajib lagal itani jaladi Vasudev ka vivah kaise tai ho gayil 'Dal mein zaroor kuch kala ba? Balbir apan anparhal, kali aur badsurat bahin ka picha choorai ke liye dada ji ko kitna dahej dele ba? Sab logan ki apan apan marji. Honi ko kaun tal sakela, ab t samay hi batai ye vivah se kekar bhalai hoil. Gora ya kala hone se ka grhasthi par koi bara asar hoyi saki ?

CHAPTER 2

Haldi

Jab sanivar hoyil tab savere poore gaon ke sab logan dada ji ke ghar ke anganamein ego chota sa bamboo ke panadal kharā karalan ja. Panadal uthana khash na rahal. Sukha aam ke pathte se khoob sajaya gayil rahal aur idhar udhar ek do khambe par petrol ke lantern tangal rahal. Jab raat ka samay hoyil t Yashoda chacchi gaon ki mahila ko apan sath leke panadal mein baithhal dikhayi delan. Un mahilaon mein se ek do nachaniya bhi samil rahal. Ego geet gavai ka karyakram rakhele rahalan. Haldi ki rasam khoob nibhayilan ja. Yashoda chacchi khoob haladi ke geet gayilan khas tor pe jab dada ji ki bari ayil haldi chadai ke: 'Haldi mein telava haldi ke jhak ho, dullaha ke haldi charave aaj ho, ekar barabhagi beta haldi lagave aaj ho, baithhal ba kuvar beta charavan ho, bhar agan mein ba je baraiya, piyari haldi sobhe aaj ho, haldi charave aaj ho, maro mein hove gamatiya hove gamatiya| sone ke katoriya mein pisal haldiya, aho dulaha ke chadave haldi tel ho. Pahale haldiya bipr charave ho, bipr charave ho dada charave ho, dada charave ho, pacche sa jan log...'

Haldi ki rasam poori hote khoob nach gan sooroo hoyil. Nachaniyan khoob masti karlan ja aur jab sab ke sab thak gayilan thori der baad ek gamat ka karyakram chaloo hoyil do gavaiya ke bich. Harmonium table par khoob gala phar phar ke jugalbandi mein apan apan kalakari prashtut karalan ja. Dada ji khushi se mast ho ke aur apan man behelaike liye ek do lok

priya geet cheralan. Kisi ko pata hi na chalal raat kitani jaladi kut gayil. Dada ji phir se changa hogayil rahal. Akhir babooa ki shadi ki khushi mein dard apane ap muh mor ke bhag gayil rahal. Lekin kab tak? aap

Vivah

Sham ke do bajal rahal aur sabhi barati anagana mein taiyar ho ke besabari se Vasudev ka intazar karat rahal. Barati ko khush rakhane ke liye Gangoo aur Mungoo harmonium tabla ke sath khoob geet ga ga ke sabhi logan ke dil khush karalan ja. Vah bhayi vah! Sab logan ko kitna anand ayil ka bol ba? Musa chacha apan ghora khoob sajayile rahal. Jab Vasudev apan ghar ke anagan mein nikalan t ego chota maharajake jaise dikhayi detalan. Mano bhagvan Ram bal roop mein pragat hoyil ba. Dada ji ke bare mein ka bolabah! Unkar ankh se lor bahāt rahal aur un karara dekh ke aisa lagat ki vo thori khushi thora gam ke shikar havan. Unkar chehera se saaf saaf nazar avat ki vo Vasudev ko bal-var ke roop mein dekh kar uthana khush na rahalan. Unakar man mein ego pachtava rahal: 'He prabhu hamara maaf kariyah paristiti aisan hol babooa ke vivah kare ke paralba.' Dada ji Vasudev ko apan gale se mila ke ashirvad de ke bolat: 'Babooa prabhu tohara khushi rakhian.' Hamar paas tohara bheint mein deve ke kuch na ba.' Aur apan roomal se ankh poch ke Mohan chacha aur pandit ko dekh kar bolat: 'Chalah bhayi mahurat ka samay bital jaat ba.' Itane mein Yashoda chacchi Vasudev ko ego har devat bajo safed chameli ke phool se bunal rahal. Phir thora pani pilake unkar arti khoob geet gaga ke utharalan. Baad mein thora aur

pani pilah ke unkar muh mein ego chota sa pan khilake ke ashirvad de ke bollan: 'Ja beta betiya tohara besabari se inatazar karat hol.' Vasudev hāth jor kar naamaste kar ke choop chap ghora - gari pe baith gayilan. Barati log khub dholak aur sehenai bajai lagalan ja aur Mungoo harmonium gala mein tang ke unkar age age chale lagalan ja. Mahol itna shandar rahal ki gaon ke sabhi log ek ek kar ke apan apan duvar se nikal nikal ke Vasudev ko ashirvad dene lagalan aur dada ji ke pair choo choo kar khub ashirvad lelan ja.

Rasta kafi lamba rahal aur dada ji ke sath poora barati thak gayil rahal. Vasudev apan dada ji ko khushi dekh kar choop chaap baithal man hi man vinati karat: 'He prabhu dada ji ko aise hi khush rakhiyah aisan mahātma sirf nasib valo ko hi mile la.'

Balbir ek sadharan vyakati rahalan aur unkar patni aur bahin, Durga, ke alava is duniya mein aur koi na rahal. Balbir dada ji jaisan bilkul na rahal. Unkar bahut kum jan pahechan rahal. Magar Balbir ka dil bahut bara rahal. Sabhi se prem aur adar bhav se baat karat. Dada ji ke kahane par hi vivah ke liye bahut bara sajhavat na karele rahalan. Apan ghar ke anganava mein ego chota sa panadal sirf dus ya pandrah vyakti ke liye sajaile rahal aur thora prasad aur sarbat banake rakhele rahal. Bechara Balbir kafi garib rahal. Unkar ego chota sa ghar rahal vo bhi gobar se lipal. Aaj vo khushi se mast ho ke bahut bechaini se barati ka inatazar karat rahal. Door se jab sehenai aur gana bajana ki dhoon sunaidel tab vo jaladi se apan bahuriya ko jake bolat ba: 'Aho sab kuch taiyar ba na barati

angan mein padharne hi vala ba.’ Jaladi se apan pagri kas ke lota mein do tin aam ke pathte dal ke hāth mein liye besabari se Vasudev ki raah dekhe lagalan. Jab barati unkar angan tak pahooovahat ba t itani barhi sankhiya dekh kar Balbir achanak se hadas gayil jaise pair mein kuch jor hi na ba. Unkara apane aap par bahut śarmindā ayil ki itane logan ko ab kaise sambhaliyan, kahan baithaiyan aur kaun seva kariyan jab ghar par kuch na ba. Balbir ka chehara dekh ke dada ji samajh gayil Balbir pareshan ba. Do mela ke baad jab tak dulaha aur dulahin ki arati parachavan ke geet: ' Kachan thari kapoor suganadi, avo prem se arti utharo ji var vyan aye, Dasaruthh puthr janak dvare, avo asis dey ji, bar vyan aye, mata bahin sab milake, prem se arti utharo ji bar vyan aye..... ' ga ga ke utharat jaat rahal tab tak dada ji mauka se labh utha ke Balbir ko akele mein bulake unkara samajhavat: ‘Balbir hamaro sab kuch pata ba tohar man mein abhi ka chalat ba. Dekhah hum barati ko apan taraf se sambhal levab tu bechinatit rahah. Tohar śarmindā ke karan hum apane aap ko doshi theharavat hayi. Ye sab Mohan bhaiya aur Yashoda bahina ke mehamaan havan ja. Barati ko thora pani piladah bhaiya hum logan ke liye itna hi kafi ba. Hum apan betiya ko lene ayal hayi aur hum logan ko isse jyada aur kuch na chahi. Sab theek ba na Balbir?’

Balbir dada ji ka barrapan dekh kar vo itna gambhir ho gaylan unkar ankh se ansoo eka ek bahe lagal. Dada ji ke pav choo kar bolat: ‘He data aap mahān havah aap hamar pagri bacha delah. Hum aap logan ke abhari hayi. Hamare paas apan bahin

ka hāth dene ke siva aur kuch na ba, aaj hum aap logan ko apan jigar ka tukra havale karat hayi aap unkar dekh bhal kariyah.'

Dada ji ko Balbir ki namarata dekha na gayil. Unkar hāth pakar ke bolat: 'Are beta Balbir isse aur bara tofa hamar Vasudev ko kaha mili. Chirag leke dhoondbah tab bhi naa mili. Hamara kahe śarmindā karat havah ho. Hum logan ko na dhan ya daulat chahi bas thora sa pyar mil jayi yehi kafi ba. Tum sab logan ka ashirvad hamar Vasudev babooa ke liye kafi ba. Sunah Balbir hum sab logan do din ke mehamaan havan ja aaj hum logan yahan kal kaun thikana ye toh sab upar vala ke hāth mein ba. Sab unkar ka khel ha bhaiya. Balbir bare pyar se miliyah bhaiya na jane kaun bhesh mein tohara mil jai bhagvan.'

Dada ji ki baat sunkar Balbir phir se khushi se ro delan. Dada ji unkar dekh ke bolat: 'Balbir chalah pandit shadi ki rasam suru karat ba.'

Vasudev ko koi acharaj na lagal unkar sasural ki taraf se bahut log upasthit na rahal. Sar jhookaye choop chap idar udar tukoor tukoor dekhat rahal. Dhire dhire jab Durga apan pair shadi ke manadap (bedi) mein rakhalan tab bhi unkar man mein uthtej paida na hol ki unkar vivah hovot ba. Aisan lagat rahal Vasudev ko in sab cheesein mein koi dilchasbi na ba aur unkar koi farak hi na parat ba unkar dulhaniya dekhene mein ki u kaisan ba? Mukhra sundar ba ya na?

Vivah ke baad jab donon ghar lauthalan Yashoda chacchi Durga ko apan patho saman ghar pravesh ki vidhi nibhayilan aur unkara pyar se svagat karalan.

kuch samay ho chukal rahal jab achanak dada ji bahut bimar hogayil. Donon pair bhurape ke karan ek dum kamjor ho gayil jaise ki ab vo sirf ek do din ka mehamaan. Vasudev dada ji ko dekh kar ek dam pareshan rahal. Par Durga dada ji ko apan bhagvan se jyada manat rahal. Jab dekhabah t unaki poori seva mein lagal rahal. Phajir ko dada ji ko snan kare mein sahayata karat, do pehar mein bhojan khilavat rahal aur sham ke samay samay par aryuvedic dava se khoob unkar dekh bhal karat. Dada ji ki seva mein koi kami na hone devat mano vaid se jyada.

Poora ek saal aise hi gujar gayil rahal. Vasudev aur Durga kabhi ek sath pati pathni ka jivan na bitaiyale rahal. Donon alag alag ek hi kamre mein sot rahal par un donon ke bich ek atut rista rahal. Durga Vasudev ki seva khoob karatlan. Har savere uth kar unkara snan kare ke liye garam garam pani devat, roti banavat aur sara ghar ka kaam kaaj ke sath sath ek do bakari bhi palan poshāth. Unkara na to sona chandi ki chooriyan, kangan ya har se koi matalab rahal. Do vakt ki roti se vo bahut khush rahal. Dada ji ke dekh bhal karate karate poora do sal kut gayil aur Durga ko pata hi na chalal ki kaise itane din beet gayil. Ram naumi ki raat rahal sabhi log unlogon ke anganava mein ikatha ho ke Ramayan ka path sunat rahatlal. Dada ji khatiya mein paral khoob anand let rahat jab achanak: 'He Ram! He Ram!' Karate bhagvan ko pyare ho gayil.

Jab Mohan chacha avaz lagayilan: 'Dada ji ab is duniya mein na ba' tab sab koi choop chap prabhu se dada ji ki atama ki shanti ki prathana karlan ja. Dada ji ki mr̥tyu Vasudev se jyada Durga ko sadama pahoochal. Durga dukhi rahalan 'ab din bhar kis ke sath baat chit kariyan.'

Dada ji ki arthi bare svabhavik bhav se uthhal. Unkar kriya karam mein koi kami na rahal aur sab vidi poostak anusar kiya gayil. Ghar lauthe Vasudev apane aap ko bahut akelapan mehsoos karne lagal. kuch din tak Durga ke sath baat bhi na karlan.

CHAPTER 3

Panch saal Baad

Unlogan ki vivah pach saal se upar ho gayil rahal aur Vasudev kuch jyada sayana hogayil rahal. Ab dhire- dhire ek doosare se thora jaan pehachan ho ne lagayil. Ek raat barish itna barasal jaise asaman phut ke pure ghar mein uthar aa gayil ba. Na Vasudev na Durga niche apane apane bistar par so sakalan. Ghar mein pani itna chalal ki ka bolabah? Donon ghabarayil rahal. Bas pani se bachane ke liye unlogan ke paas aur koi chara na rahal siva dada ji ke poorane khatiyे mein sone ke alava. Raat lambi aur bhayanak rahal ki donon itane dar gayil rahal ki anjane mein ek doosare ke karib itna aa gayilan pata hi na chalal raat kab aur kaise guzar gayil. Savere jab donon jaaglan th ek doosare se ankh mila na pa sakalan. Thab donon ke khopariya mein baat apane aap samajh mein ayil isi bandhan se vans barhela.

Jaise jaise samay bital gayil taise taise donon ek doosare ke prati aur karib hoyi gayilan. Durga itani bholi rahalan ki unkara pata hi na chalal ki vo paav se bhari ba. Haroj Vasudev se kabhi thora kaccha aam ya imli tore ke zidd karatalan. Ek sham jab Yashoda chacchi Durga ko imli khate dekhalan th ek hi jhatake mein samajh gayilan ki Vasudev ab baap baniyan. Unkara thora ascharya sa lagal ki Vasudev na sahi ta Durga kahe is ke bare mein unkara pahale se kuch na batailan. Ghuma phira ke jab unkar se poochlan tab jaake pata chalal ki bechari anparh

ko garbhavati ke bare mein ka janakari hoi jab unkar bhavji banjar rahal.

Yashoda chacchi khushi se pagal hokar Vasudev ko avaaaz lagayilan aur baithha ke samajhayilan ki aisi halat mein Durga ki khoob seva kare vo ab ma baniyan. Vasudev khushi se itna uthavala hol ka bolabah? Phir jab baith ke soche lagal t thora udas ho gayil ki bacchava ke dekh bhal kaise kariyan. Jaise Yashoda chacchi chaukat se bahar apan pav rakhalan taise hi Vasudev Durga ko apan pareshani batayilan. Durga bhi kuch samay ke liye pareshan rahalan par himmat le ke Vasudev ko samajhayilan: 'Aho aap kahe khamokham paresan hovat havah apan pet kat ke thora thora kar ke guzara kar levab ja.' Durga ki baat sunate hi Vasudev ka chehera par se sab pareshani mit gayil aur uth ke shandar dang se bolalan: 'Durga tu sach bolat havah chalah jo prabhu ki marji. Kal dai mata se jaa ke mil liyah aur pathā lagaiyah ki kab hum logan ke ghar mein phool khili.'

'Ji svami.'

Doosare din jab sham ko Vasudev ghar lauthalan thora aram karne ke baad Durga unkara janailan: 'Aho aaj savere dai mata idhar hi se guzar rahatalan jab hum unkara tokani th hamara batailan ki aur char mahine ke baad hum logan ke ghar mein baccha paida hoyi tab tak hamara apan poori khayal rakhe ke chahi.'

Durga ki baat sunate hi Vasudev bahut khush hol aur bolalan: 'Durga kal se ghar angina mein jharoo na lagaiyah hum sab andar aur bahar ka kaam sambhal levab. Thora chota mota aur kaam hoyi t hamar liye chor diyah. Ghasha bilkul na katiya aur kisi bhi bhari bhoj se door rahiyah.'

Char mahine baad

Char mahine ho chookal rahal. Durga apan anganava mein Hanuman ji ki murti saaf kar ke Mahabir Swami ka jhanda sajavat rahalan jab unkar bahut zor se dard ayil. Zor zor se jab chillaiyalan tab unkar ego parosi jo apan gaya ko pani piya ke nikalat hi rahal sunate daural ayilan. Durga ki halat dekh kar jaladi se unkar katiya mein leta ke dai mata ko bulane daural. Prabhu ki kripa se jaise dai mata pahuchalan ego chota pyara sa baccha janmal. Jab Vasudev ko khabar milal ki vo baap ban gayil t kaam chor ke jaladi se ghar lauthalan. Apan vans ko dekh ke Vasudev ki ankh se ansoo tapak gayil. Bacche ko apane hāth mein utha ke gale se laga ke bolat: 'Vah re bhayi tu kitna pyara havah' aur jaise baccha unpar soo soo karat t hans ke bolata: 'Bhayi thora nat khat bhi havah ate hi hamar kapra gila kar dehlah ho ab aage jaa ke kaun ras lila rachaibah.' Tu poora ke poora apan maiya par gayil havah ho.' Durga unki baat sunate hi muskura ke bolata: 'Aho munna tohar par gayil ba, gora aur tohari jaise nili ankhava ba. Ye t hamaro jaisan kahan kala aur badsurat ba. Ye to mano hamaro bal gopal jaise lagat ba.'

‘Hamara kahe śarmindā karatavah gora kala se ka matalab hum ke t apan duniya mein jiye ke ba. Tu havah t hum logan ka jivan ki naiya asan se bhavsagar par karliyan.’

Vasudev apan patni ke sath baat chit karat hi rahat jab bahar se ego avaaz sunai del: ‘Aho babooa zara kavariyah kholah dekhah hamar sath kaun kaun ayil ba.’ Vasudev ko avaaz jani pehachani si la gal: ‘Ye toh Yashoda chacchi ki avaaz ha.’ Jaladi se darvaja khol ke dekhat baa t unkar andaza sahi nikalal. Yashoda chacchi apan mahila ke sath kharā rahalan. Unkar bagal mein tin nachaniya khoobe saj dhaj ke apan hāth mein dholak aur lota le ke taiyar rahalan ja.’ Jaise andar ghusalan ja taise khoob lalana gaa ke nachalanja. Aisan lagat jaise ki Yashoda chacchi ke hi ghar mein baccha paida hoyil ba. Vasudev Durga ke paas baith ke sochat: ‘Aaj unkar mata, pita, dada aur dadi ji jivit rahat t kitna khush hoyitan. Chalo prabhu ki kripa se aaj phir se hum logan ke angan mein khushi khilal ba.’

Yashoda chacchi ghar lauthane se pehle Vasudev se poochata: ‘Are babooa munna ko kaun naam se hum boolavab ja?’

‘Chacchi hum logan ko naam ke bare mein ka pata ap hi kauno naam rakh dah.’

‘Babooa hum pandit ji se pooch taajh kar ke ayil hayi unkar poostak anusar munna ka naam 'Sh' akchar se nikalal ba.’

‘Ye to barhi acchi baat ho gayil. ‘Sh’ se Shravan ka naam. Dada ji ko Shravan Kumar ki kahani se bahut lagav rahal. Hamara

unkar updesch hamesa sunavat rahal: 'Beta ho to Shravan Kumar jaisan jo apan mata pita ko burhape mein apan kandhe par baithha ke tirath yatra karvaiyan.'

'Han babooa i naam bahut pyara ba. Bahu se bhi to pooch lah akhir ma havan unkar bhi ta haque banela.'

Itane mein Durga bolat ba: 'Aho sasoo ma theek bolat havan Shravan bahut sundar naam ba.'

'T chalah aaj se munna ko Shravan ka naam se pookara jayi: 'Shravan Bhoopathlal'

Vasudev prasann ho ke bolat ba: 'Shravan hum logan ki ankh ka tara baniyan, jo hum logan ki seva kariyan aur hum se kabhi na bichadiyan.' Ka ye sambhav hoyi?

Durga bhi Vasudev ki baton se sahamat rahal Shravan ego honahar adami baniyan aur apan mata pita ki seva mein koi kaami na choriyan.

Ath saal - Eight Years

Shravan ab lag bhag ath saal ke hogayil rahal aur khoob man lagake parhai karane lagal rahalan. Durga unkar parhai se bahut prasann rahal ki apan kaksha mein hamesha pehla number mein nikalat rahal. Chote hi umar mein kafi purashakar jeetle rahal. Gaon ke sabhi logan yehi bolat Shravan poora ke poora apan dada ji par gayil ba. Shravan ke guru ji bahut garv se unkar bare mein baat karat aur sabhi se

yehi kahātlan: 'Ye balak age chal ke apan ma baap ka naam roshan aur seva kariyan.' Guru ji ki tarif sunkar Vasudev aur Durga khushi se pagal ho jatlan ja. Shravan ko bahut pyar milat khas taur se unkar mata ji se. Pita ke sath bolah mat khoob masti karat. Vasudev chahe kitna bhi thaka rahat vo apane kandhe par Shravan ko baithha ke khoob ghoomavat phirat rahal. Jab dekhabah t ek sath khel khelat: 'Oka boka tin toloka lova lathi chanan kati hayi gorava pachakade ..'

Ka Shravan bara ho ke Shravan Kumar hi jaisan baniyan? Ye to samay hi batai. Kal ka hoi kaun janat ba ho!

Akal

Desh mein jab akal paral th fasal par bara asar hoyil. Sabhi kishan ghabara gayilan ja ki anaaj bina un sab ka kaise gujara hoyi. Vasudev aur Durga haroj savere savere uth kar apan hāth jor ke bhagvan se vinati karat ki Shravan ki parhai mein kisi tarah ki badha na hoi. Lag bhag ek mahina tak gaon ke sare kishan ek sath ikhate hoke khoob Indra devata ki pooja karalan taki barsat phir se hoyi aur charon taraf hariyali hi hariyali chahi.

Achanak se jab badal garjal gaon ke sabhi logan ke chehare par ego choti si musakan dikhayi del. Jab barish ki pehli boond giral ta gaon mein khushi ki dhoom machal, sab ke sab pagal si ho gayilan. Par jab ek dam se pani ayil lagal tab sab apan apan angan mein khoob masti karalan ja. Lekin kuch din ke baad jab barish ke sath bar utharal kishan bechare ho gayilan ek dam

paresan. Sab apan apan chati pit pit ke bolane lagalan: 'He prabhu ye kaisan anyay ha. Hum par daya karah. Bin fasal ke hum logan ka jivan kaise kati, hum logan apan karja kaise chookavab ja.'

Le le ke bhagvan ka naam baith ke kishan ratat ba subah sham:

'He daya nidhan aur na kara pareshan

Hum balak nadan daya karo dayavan

Janam janam hum ratate aye tero naam ab dedo mukti ka daan

Ghar se na ho beghar santan bhookh se mare na koi kishan

Suli pe latakal ba jaan bachavah hum logan ka pra n

Dookhiya na ho badnaam boochado ye toofan'

Jab Vasudev ko pata lagal ki unkar bail pani mein beh ke mar gayil tab vo poori tarah se tuth gayil rahal. Akela barish mein bhige huve baitha chati pit pit ke ro ro ke bolat: 'Ab apan parivar ke dekh bhal kaise karab? Hamar Shravan ko kaise bara adami banavab?' Unkara koi upay na lagat ki apan kharacha kaise nikaliyan. Bahut ghabrahat si hovat ki jon udhar Sahebava se lele rahal vo ab kaise chookayib. Unkar dimag mein yehi chalat ki: 'Kaun hum logan ko phir se udhar diyan.'

Sochate sochate Vasudev pani mein itna bhig gayil ki unkara aisan bhookar pakarlal ki lag bhag tin mahine tak khatiya mein paral rahal.

Vasudev ki halat dekh ke Durga बहुत पारसान राहल। लेकिन वो उनकी सेवा में कौी कामी ना चोरालन। श्रावण के भविस्या के लिये थोरा कप्रा की सिलाई और दूसरों के खेत में काम करने लगालन।

Balbir apan bahin ki halat dekh kar बहुत दुखी राहल और जब उनसे और साहा ना गयिल तब एक दिन बैठ कर विचार करालन त एक उपाय सोचालन की उनलोग की सहायता करे के लिये अपन यान से कुछ देय के पारि। पर वो तो खूद गरीब राहल जो बरही मुस्किल से दो वक्त की रोटी कामावत। मालिक की कृपा से जब उनकर गया तिन बच्चे पैदा करालन ता उन में से दो Durga को भेंट करालन। Durga बरहे भयि का तोफा इनकर ना कर सकालन। Unkara itani khushi hoyil ki ka bolaba. Unkar man mein ek hi vichar ayil ki jab bachavan bara ho jayan तब doodh bech के श्रावण की पारहाई में लगायान। थोरी दूकही भी राहलान की Balbir bhaiya apan pet kaat के कैसे उनलोग की सहायता में पारालबा। अखिर भयि तोह पिता के समान होवला शायद उनकर इरादा श्रावण के भविस्या पर ज्यादा राहल।

Lag bhag ek saal bit chookal rahal और उनलोग बच्चवान खूब मोटा और तंदरुस्त हो गयिल राहल। Durga ego bech के एक चोटा सा बैला खरीदालन और जो doodh bech कर पैसा मिलत श्रावण की पूरी पारहाई में खर्चा कर देवतान। अब तक Vasudev की तबियत उतना ठीक ही ना राहल रोटी कामाने के लिये पर हालत से माजबूर हो के पिर से बैला गरी चालाना चालू करालन।

Durga thora zamin kiraya mein leke kheti bari karane lagal. Durga kaam se itna banadhral rahal ki kaha na jai. Shravan ki parhai mein itna kharcha hovai rahal ki ek paisa na bachat rahal. Ek bar jab gaon ke sab logan picnic par jaat rahal aur jab Vasudev aur unkar parivar ko amantran delan sath chalane ko t Vasudev nirash ho ke koi jhuth muth bahana banake na gayilan sirf is liye ki unlogan ki bas ki baat na rahal. Unke ghar mein ego phuthi kauri na bachal rahal. Jaise sab logan chal paralan Balbir apan imli ke pēra ke tale baith kar khoob gala phar phar ke khoole asaman ko apan dukh sunavat:

‘Konon din dal kha ke konon din bhaji kha ke konon din kacchoo puri ho bhaiya la la sun sun hum dino gana kaatela

Sukr ke paisa le ke bhaiya dokan jayila hum dokan jayila

Dokan se bhaiya saman kharidela ho saman kharidela

Parivar sang khayila maje mein rahela maje se soyila

Hamare bhai jan samundar jala laika phaika le ke cinema bhi jala han cinema bhi jala

Hamar takdir mein cinema aur samundar kahan hamar jivan ghar mein bite la ghar mein bite la,

Koi paisa pani sa bahave la hamar sharir se bhaiya paasina bahe la paasina bahe la

Koi paisa lakari tarah jarave la hamar sharir bhaiya gham mein jare la gham mein jare la’

CHAPTER 4
Bis saal baad

Vasudev kafi rogi dikhayi devatalan. Shravan ab bis saal ke hogayil rahal. Dekhane mein khoob lamaba aur chaurah khasa nau javan lagat. Apan parhai samapt karane ke baad jab tak koi acchi si naukari un kara naa milat tab tak vo apan ma baap ke sath khete mein hāth baravat. Vasudev Shravan ko dhoop mein jane se hamesha mana karat rahalan: 'Beta tu kala ho jaibah. Abhi tu javan havah, ja chav mein aram karah, hum sab kuch sambhal levab.' Durga apan pati dev ki batein sun sunkar bahut gussa avat. Vo hamesha bolatlat ki Shravan ko kaam kare ke chahi taki Vasudev ka bhoj thora halka ho jai. Durga Vasudev ka khayal bahut rakhatlan. Vo na chahatlan ki pati phir se bimar par jaiyan.

Videsh mein larai ke karan maheingai charon aur phel chookal rahal. Ata, chaval, tel, chini aur saboon ke dam na poochah. Kishan ko naye kapare aur acche khane pine ki cheesein ek sapana sa bangayil. Sarkari naukari t ek dam door ki baat rahal. Phir bhi Vasudev aur unke parivar kushal managal rahal.

Shravan apane aap ko bahut badnasib samajhat ki abhi tak bekar ba. Sochat kauno acchi si naukari lag jai t ma baap ki dekh bhal sari zindagi kariyan. Durga apan beta ki umar barate dekh kar Vasudev ko bolat ba: 'Aho Shravan ke pita ji ab munna bara ho gayil ba unakar vivah kar dei ke chahe la.' Vasudev Durga ki baat se bilkul sehamat na rahal. Vo chahat rahal ki Shravan kisi bhi sarkari naukari mein lag jai tab unkar

vivah ki baat chalaiyan. Kab tak Shravan acchi naukari ki talash kariyan? Ye bhi to sochane ki baat rahal!

Ek din Mohan chacha aise hi apan khet se nikalat rahal jab raste mein Vasudev ke sath Shravan se bhi mulakat hoyil. Mohan chacha Shravan ko dekh kar ashcharya hoyilan ki 'Kal ka chota ladala ab kitna bara ho gayilan.' Shravan ka sadharan adarsh bhav dekh ke vo ati prasann hoyilan. Aisan lagal jaise ki unkar man moh lelan. Unkara aur ek baat behad acchi lagal ki Shravan itna parhai kar ke bhi apan ma baap ke karobar mein poore tan man ke sath hāth baravat rahal. Jaate jaate unkar man mein vicharl ayil ki Shravan ke alava aur koi accha laraka unkar poti ke liye naa mili.

Poore tin din ke baad kisi bahana banake Mohan chacha Vasudev ke ghar pahuchalan. Vasudev unkar bahut aadar karat rahal. Jab apan poti ke liye Shravan ka hāth magalan Vasudev bilkul mohit ho gayil. Durga betab rahalan ki unkar ghar mein ego pathoh ay aur unkar angan mein pota aur poti kheliyan. Jab tak Mohan chacha sochat hi rahalan ki Vasudev is rista ko svikar kariyan ya na, achanak se Durga hāth jor ke bolat: 'Mohan chacha manah hum logan ki taraf se sab theek ba.' Mohan chacha kuch ghabara sa gayil i soch ke: 'Vasudev ki jaban se ye baat kahe na nikalal. Vo Shravan se pooch taj kar ke uthar detan ka? Sahi sochat hoi Shravan se pooch tajh t zaroori ba akhir ye to unkar bhavishya ke bare ki baat chalal ba!'

Mohan chacha sahi andaz lagaylan ki Vasudev ke man mein ego udasi chahal rahal. Vasudev i soch mein dubal rahal 'ki ye to ghor anayay hoy ki hum log Shravan se bina sala masora kiye unkar vivah ki baat age chalai lagani ja aur vo bhi pata nahin chokariya pasand kariyan ki nahi.' Vasudev ko bilkul samajh mein na avat kaise Shravan ko boliyan: 'Agar naa maniyan t hum Mohan chacha ko apan sakal kaise dikhavab ja.

Sham ko jab Shravan Ramayan path se ghar lauthalan tab pita ji se poochat ba: 'Pita ji sunane mein ayil ba Mohan chacha aaj hum logan ke yahan ayil rahal. Hamara unse milane ki bahut ikasha rahal, baith kar unke sath bahut dinon se acchi tarah se baat na hoyal ba. Han t pita ji unkar poti, Savitri, kaise havan?'

'Ka tu Savitri ko jane le?' asacharya se Vasudev poochlan.

'Ji pita ji hum donon ek hi kaks me in parhai karani ja. Aur han, hamar acche dost bhi havan.'

'Accha!'

'Barhi bholi aur pyari bhi havan, unkar shadi ke nyota leke ayil rahal ka?'

Durga javab devat ba: 'Munna Mohan chacha unkar rista le ke ayil rahal.'

'Ka?'

'Ji sahi sunalah, tohar liye, munna tohare sang apan poti ki shadi karne ke bare mein yahan ayil rahalan.'

‘Aap logan unkara ka javab delan?’

‘Mohan chacha hum logan ke boozoor havan hum unkar bahut izzat karat hay ja, vo hum logan par bahut ehsan karale havan aur janam janam tak unkar karaja chuka na sakab ja. Unkara hum nirash na kar sakani ja. Maaf kariyah munna tohar rai liye bina hum baat age bara deni ja.’

‘Aap logan ki baat hamari khopariya mein bilkul na ghusal. Ghooma phira ke baat na banavah thora saaf saaf bolah.’

Thori dhimi avaz mein Durga Shravan ke hāth pakar ke samajhavat ba: ‘Munna hum log tohar vivah pakki kar dele hayija.’

Shravan ke dil mein khushi ke ladoo phuthe lagal rahal ki Savitri se barh kar aur koi larki unkar jivan sangini na ban saki. Kabhi soch hi na sakat ki aisan chokari sang unkar lagan hoy. Apane aap ko khush nasib samajhat ki unkar jaisan larki chirag le ke dhundbah ta bhi na mili. Ma baap ki aur dekh kar thora sharma ke bolat: ‘Jo aap log uchit samajh ba.’

Shravan apan ma baap ko khush dekhe chahat rahal. Vo unlogan ke diye huve vachan par koi baad dha na pahuchana chahatalan. Unkar vichar anushar jo unkar mata pita unke liye sochat aur karat sab unkar bhalayi hi ke liye rahal.

Vasudev aur Durga Shravan ki baat sunkar bahut prasann hoylan ki unlogan ka ladala is riste se khush havan. Durga mauka se labh utha ke bolata: ‘Dekhah munna hum logan ko

dahej mein kuch na chahi ghar mein ek acchi si bahu aajayi hum logan ko itna kafi ba.'

Vasudev Durga ki baat se bilkul sehamat rahalan: 'Tu bari acchi baat bolalah. Dahej mein ka rakhal ba? Accha se dekhabah t ek insan apan matalab aur faide ke liye dusare insan par dabav dalat ba khas taur pe laraki ke mata pita par jine pe bara asar hovela. Dekha jayi t unlogan ko larkon valon se jyada dukh hovela. Ye to ghor anyay ha. Agar hum logan ka munna razi baa t ab deri kaun baat ki. Kal hi hum Mohan chacha ke ghar jake lagan ka sagoon band ke avab ja.'

Durga khushi hokar Vasudev ke aur dekh ke bolat: 'Aho Shravan ke pita ji kal munna ko bhi sath le chalab ja.'

'Durga sahi bolalah.... munna kal do peher mein chalab ja tu saj dhaj ke taiyar ho ke rahiyah.'

'Ji, pita ji'

Kuch sapathe baad Shravan ka vivah Savitri ke sath kar diya gayil. Jab ki donon ek dusare ko pahale hi se janat rahal ja in log ka prem jaladi se majabuth ho gayil. Savitri apan ghar ka kaam ke alavah kheta mein bhi haath barane lagalan. Apan sas sasur ki seva mein koi kami na chorat. Vo unlogan se behad pyar karat rahal itna ki jab dekhabah t parosan se unlogan ki tarif karte rahatlan.

A year after [एक साल ...] [Ek sal baad]

Vivah ke ek sal beet chuka rahal jab unlogon ke ghar mein ego chota sa pyara sa baccha janaam lel. Ghar mein khushiyali cha gayil rahal jaise ki bhagvan Ram ji paida hoyil ba. Shravan khushi se pagal rahal ki unkar beta bara ho kar ego daktar baniyan aur apan sabhi parivar ki dekh bhal kariyan. Bare pyar se bacche ka naam Ravi rakha gayil. Vasudev aur Durga itane khush rahal ki kaha na jai. Vasudev ki ikcha rahal ki Ravi bara hoke Shravan ke sath khoob kheliyan aur apan godi mein baitha ke unkar shikasa diyan. Shravan apan mata pita ke sath Ravi ko khoosh dekh kar unkar chati phool jaat rahal.

Ravi sirf do saal ke rahal jab vo apan dada aur dadi ji ke sath hi sovat aur uthat. Dada ji bhi yehi chahat Ravi aage chal kar daktar baniyan. Apan pathohiya se kaha karat: 'Bahu Ravi ki dekh bhal mein kuch kami na hone diyah unkar khub likhayi parhayi mein dhyan dey ke boliyah taki hamar pota vidvan baniyan.... Unkar hum logon ki sanskriti ke bare mein batai ke na bhooliyah. Hum chahat hamar pota hamar suputr, Shravan, jaisan hoi aur sab log boliyah jaisan baap vaisan beta.'

Savitri bare pyar se uthar devat: 'Ji pita ji, hum bhi yehi chahat hamaro ladala apane pita ke saman apane baron ka adar kariyan, sabhi se mil jool ke rahiyan aur Ramayan Geeta ke path sikhiyan.'

'Barabar bolata ho betiya aaj ke zamane mein hamaro Shravan jaisan bahut kam ba.'

Ek raat jab sab log so gayil rahal achanak bara sa toofan ayil. Hava aur barish itane tej chalal ki kaha naa jai poora ke poora ghar tor delan. Nukshan itna hoyil ke sab kishan phir se sarak par aa gayilan. Sab apan apan khopariyape hāth par rakh kar rovat ki pahele hi se itna mushkil se anaaj kamavat rahalan ja ab kaise guzara hoyi.

Vasudev sochate sochate itna paresan hoylan ki unkar dil mein aisan sadama pahoochal ki ek bar zamin par giralan ta kuch din tak apahij ho gayilan. Durga unai halat dekh kar bahut udash bhailan.

Vasudev apan jivan se tang hokar chilla chilla ke sirf ek hi baat ratat: 'He bhagvan aap hamara is duniya se uthalah...hamara kahe kisi ke bojh banaile havah....' Shravan pita ji ki chillane ki avaz se kabhi naraz na hovat rahal. Bhagvan se prathana karat ki unkar pita shri jaladi se theek ho jaiyan. Savitri bhi apan angana mein haroj Mahabir Svami ki pooja karate vaqt yehi binati karat ki unkar sasur jald se jald accha ho jayan aur phir Ravi sang uchal uchal ke kheliyan.

Shravan ke paas jo thora sa paisa bachal rahal poora ke poora pita ji ke dekh bhal mein kharcha kar dele rahal. Ab Unkara aur konon upay dikhayi na devat ki kahan se paisa uthaiyan apane parivar ke dekh bhal ke liye. Unkar paas ek hi rasta bachal rahal Sahebava se konon chota mota naukari mange ke.

Durga na चाहत ki Shravan Sahebava ke yahan naukari kariyan. Kahe? Shayad unkara poora bharosa rahal aaj na to

kal betava ko koi sarkari naukari mil hi jayi aur unlogon ke sare dukh door mit jayi. Lekin Savitri apan pati ke vichar se sahmat rahal thore din ke liye koi chota sa naukari lag jai ghar ke sab log do vakt ki roti aaram se kha sakiyanja. Sasur ki halat dekh kar bahut chintit rahal. Vo sochat jaise thora sa paisa hāth mein lagi unkara koi accha sa daktar ke paas ilaj kariyan. Savitri hindi aur angrezi mein kafi parhal likhal rahal. Apane ghar ke angan mein ek choti si pathshala chaloo kar le rahalan jahan gaov ke sabhi bacche sham ko path lene at rahal. Thora jo paisa milat Ravi ki parhai mein aur sasur ke dekh bhal mein poore karcha karat. Durga Savitri ke prati bahut abhari rahal ki vo bechari apan sara din unlogon ki seva mein bandhal rahal. Mano Savitri shakshāth Devi maiya ke roop mein unlogon ke ghar mein basal ba. Savitri gaya posan palan khoob man laga ke karatalan. Shayad yehi vajah se unlogon ke ghar mein doodh ki kabhi kami na rahal. Savitri doodh ke paisa se thora ghar ka kharcha bhi chala levat rahal. Unkar bahut irada rahal apan sasur ji ke liye ego chota sa Radio kharidiyan taki khatiya mein pade pade thora duniya bhar ki batein aur samachar se apan man behela sakiyan. Television toh bahut door ki baat rahal. Shravan hamesha kaha karat ki jab unkara ego acchi si naukari lag jai t ego chota sa television kharidiyan.

Savitri ke vivah ke baad Mohan chacha ke age piche aur koi varish na rahal. Jab unkar dehāth hoyil t Savitri ko bara sadama pahoochal. Mohan chacha ke paas kuch na bachal rahal sirf ek tuta phuta bakasa jis ke andar ego choti si poorani Radio paral rahal. Savitri ka man thora halka sa ho gayil rahal 'chalah i

Radiova ik yadgar banake raha jayi.' Vo khush rahalan ki ab sasur ji ka man thora khush ho jai.' Par Radio kahan bin battery ke chali. Savitri lag bhag do mahine tak ek ek paisa bacha ke battery kharidalan. Jab Radio chalu hol t ghar mein itani khushi ayil jaise andheri raat mein roshani.

Vasudev ke sath Ravi khoob Radio ka maja levat. Har sham theek cheh baje Shravan Radio se duniya bhar ki taja khabar se labh uthat rahal. Ek sham Shravan khoob dhyan laga ke samachar soonat rahal jab ek soochana milal ki agar koi angresi mein parhal likhal ba aur England mein naukari kare chahat baa t jald se jald apan naam aur pathā Mister Paul Morgan ke yahan bheje ke jin kar daftar shahar ke British Embassy mein mili. Savitri ko kaam se furasat hi kahn ki vo bechari thora aaram se samachar suniyan. Na jane kahan se chand nikalal rahal ki Savitri sasur ji ko chai dete samay unkara bhi soochana sunai del.

Shravan apan kamre mein jaise pravesch hoyilan t Savitri unashe poochat ba: 'Aho Radio par sunalah videsh mein angresi parhal likhal kaam karva ki zaroorat paralba.'

'Han han hamaro bhi sunai del. Ab hamaro bas ki baat kahan jab parhaiyi likhayi kitane saal bit gayil. Hamara tohar logan ki chinta ba. Pita ji bin sahare khatiya se kahan uthat sakat. Mata ji ab bimari ke karan thori bahari aur andhi bhi ho gayil ba. Itna hamar farz banat ba ab mata pita ji ki seva mein poori zinadagi yehi bitayke. Ab tu akeli kaise sab kuch sambhal bah. Videsh

jaike bhi to thora paisa zaroori ba. Hum logan ke paas ek phuthi kauri kahan.'

'Aap sahi bolat havah phir bhi ek bar mata pita ji se pooch ke apan form kahe na bhar ke chor devat havah. Kaun jane aap ki takdir khul jai.'

'Na na ho hamara kahe sármindā karat havah. Pita ji ko in sab batein sunkar bahut dukh hoyi aur hum na chahat hai unakara aur thes pahoochi, khas taur pe mata ji ko.'

'Phir bhi sochalah baat karane mein koi harj na ba.'

'Barabar bolat havah. Chalo hum unlogan se baat kar ke dekhi la.'

Vasudev khatiya mein letal rahal, bagal mein Durga Ramayan ki ek do chaupai bare kathin se aina laga ke parhat rahal, Ravi dada ji ki chati par apan hāth mein bal poostak thamein gehri nind mein rahal. Shravan aur Savitri donon zamin par Durga ke paas aa kar baith gayilan. Durga yehi sochat ki shayad apan baboo ji ke paas Ramayan sunane donon ayil ba. Unlogan ko dekh kar Durga jaise apan aina utharalan Vasudev Savitri se bolat ba: 'Bahu accha hol tu a gayilah ..aaj hum logan ko ush adhyay sunavah jahan Raja Dasruth Shravan Kumar ki kahani sunavat aur apan dukh bhare svar mein apan paschatap karat ba.'

'Ji, pitja ji' bolat Savitri.

Jaise hi Ramayan ke us adhyay khollan taise hi Ravi uth ke baith gayilan aur ank michate, thori nind mein bolat: 'Hum bhi kahani sunab.'

Savitri Ravi ko thaka huva dekh kar bolat ba: 'Hamar raja beta tu aaram se so ja kal tohar pariksa ba raat bahut dhal chulal ba. Hum tohara kal poori kahani sunavab.'

'Naa ma ji hamara kahani sune ke man karale ba,' Ravi barhi ziddi kar ke bolat.

Vasudev Savitri ko samajhavat ba: 'Chalah koi baat na aaj hamar munna ke liye thora sa Shravan Kumar ki kahani sunadah bahu shayad vo bhi kuch sikhliyan.'

'Accha jaise aap ki agya,' Savitri utar devat ba.

Savitri bare pyar se Ravi ko kahani sunavat ba:

'Shravan ke vridd mata-pita dekh na sakat rahal. Yane ki donon burhe aur andhe rahalan. Shravan unlogan ki barhi seva karatalan.

Ek bar mata-pita jab bolalan: 'Beta hum logan ko tirth yatra par jaane ko bara man karat, parantu kya karein, dekh na sakat, svayam yatra karne mein aur bhagvan ke chrarnon mein shanti mil jai. Shravan ma baap ki baat sunkar pyar se bollan: 'aap chinta na karah hum aap logan ke yatra karvab.' Shravan ne do barhi barhi tokariyan li. Unhein ek majbuth lathi ke

donon siron par rassi se bandh kar latka delan. Is tarah ego bara kanvar ban gayil. Phir usane mata pita ko god mein uthha kar ek ek tokariya mein bithailan. Lathi kandhe par tang kar Shravan mata pita ko tirth yatra karane chal parlan. Shravan unlogan ko anek tirth sthan par braman karailan.

Ek bar vo ek van se ho kar jaat rahatlan jab vridd mata-pita ko pyas lagal. Shravan unlogan ko chaov mein baitha ke apan gara le ke aas paas baheti nadi se pani lane nikalalal.'

Ravi ki nind पूरी तरह से गुम होगयिल राहल और जब Savitri apan sas ki aur dekh kar Ravi se kahat ba: 'Ab tu so jaa hamara ladala.' Th vo phir se zidd kar ke bolelan: 'Mata ji aap hamara पूरी कहानी सुनावह हमारा नन्द ना अवत बा.'

Durga Savitri se kahat ba: 'Bahu agar Raviko nind na avat ba t un kara पूरी कहानी सुनादह उकारा आपने आप नन्द लग जायि. Unkar dada ji theek hi kahelan shayad is kahani se un kara koi labh prapt hoyi. Hum logan ke Shravan to apan paas hi havan jo hum logan ki seva kariyan ab prabhu ki kripa hoyi t Ravi tohar logan ke Shravan ban jai.'

'Barabar bolalat havah mata ji,' Savitri itna kahekar phir se parhai kayam rakhalan:

'Han.. jab Shravan pani lene gayilan usi samay Ayodhya ke raja Dasruth van mein ankhet kar rahat rahal. Gare mein pani bharane ki avaz sunkar un kara aisan lagal ki koi jangali janavar nadi mein pani pi rahat ba. Raja Dasruth turant shabda-vedi ban chalailan. Ban lagate hi Shravan bhoomi par gir paralan.

Raja ji daurat jab vahan n pahuchat t apani bhul par unkarah
bahut paschatap hoyil, parantu ab honi ko kaun taal sakat.
Shravan ki ankh se beheti ansoo keh rahat ab hamare mata
pita ko kaun sambhali aur raja ji se vinati karat: ‘Hamare vrid
mata-pita hamar pratiksha karat ba kripa kar ke unkarah thora
pani pila dah. Itna hi keh kar unkar pran nikal gayil.’

Ravi uth kar ma se poochat ba: ‘Mata ji! Mata ji! Shravan
Kumar ji ke vrid mata-pita ki dekh bhal kaun karalan.’ Savitri
utar denevali hi rahal jab unkar muh ki baat Vasudev chin levat
ba: ‘Thora saboor kara munna-dhyan laga ke sunah sab tohora
pata chal jai.’

Savitri poori dhyan lagake age ki kahani phir se sunaiyalan:
‘Raja barhi śarmindā hoylan. Jald se unkar dukhi, vrid mata-
pita ke paas gaylan unse apan aprad bata kar chama magelan.
Kintu mata-pita ke dukh ki sima na rahal.

Vrid pita itna hi bol uthalan: ‘Jis prakar puthr viyog mein hum
log pran tyag rahat usi prakar tohar bhi apan puthr ke viyog ka
dukh bhoge ke padi.’

Shravan Kumar ka naam unaki matru-pitru bhakati ke liye
amar rahal.

‘Ka in sab ka matalabh nikalat hamara samajh mein na ayil,’
Ravi apan ankh mich mich ke apan ma se poochat ba.

Savitri ko pata rahal ki Ravi abhi chota ba aur unkar bas ki baat
na rahal sab kuch samajhe ke. Vo unkarah kahani ke upadesh

sanchit roop mein samajhane ke prayash mein rahalan jab Vasudev Ravi ke hāth pakar ke bolat ba: 'Han babooa jyada dimag na phorah tu abhi balak havah bara hobah t tohara in sab batein ka matalabh tohar khopariya mein phāt se samajh a jayi. Hum itna hi keh sakab ki is kahani ka praman hum log ke jivan par adharit ba. Manah har ek ghar ki kahani se bilkool milat julat ba. Jo ma baap apan beta ke goon gan gaiyan aur duniya unkar pooja karat aur jo isi dharati mein ego mishal banke reh jai usi jivan ko mahātma kehelat jaat ba.'

Vasudev ki baat sunkar Ravi bolat ba: 'Dada ji hum bara hoke Shravan Kumar jaisan banab. Apan ma baap ki poori tarah se seva karab,' phir se gehari nind mein so gayilan.

Shravan aur Savitri aaj jaladi mein na rahalan ja. Durga ko thora ajib lagal ki baat ka ba. Itane mein Savitri bolat ba: 'Mata aur pita ji Ravi ke pita ji aap logan se ego salah masaura ke liye yahan rukal havan.' Vasudev aur Durga ke man mein ek hi vichar ayil 'shayad ab ye donon hum se alag hoi chahat ba. Ab aur kitane din tak hum logan ki seva kariyan apan jivan aur Ravi ke bhavishya ke bare mein thora unlogan ko sochene ka t haq banat ba. Ab hum logan burha burhi apan jivan guzar levab ja. Durga pyar se bolat ba: 'Hum logan se khul khul ke baat karah...bolah jo bole ke ba.'

Shravan sar jhookake bolat ba: 'Pareshan hone ki koi baat na ba. Aaj Radio ki ek soochana mein sunayi del ki videsh mein likhal parhal kaam karva ki zaroori paral ba. Savitri hamara bolat kahe na hum bhi apan form bhej devat hay videsh mein

koi naukari lag jayi. Hum unkar baat se utana sahamat nahi phir bhi aap logan ki ray janana hum apan kartavya samajhat. Savitri ke kahane ka matalab i ba videsh mein jaa ke kuch din mein thora paisa kamalevab aur hum logan ke jivan bhi badal jay. Hum Savitri se keh chookal ki i sab hum logan ki bas ki baat na ba. Hum logan ke paas ek phuthi kauri na ba kharacha kare ke. Aap logan ka bolat havah? Ka ye theek baat ba? Hamara apan form bharati kare ke chahi ya na, jo aap log accha samajhabah?’

Vasudev anparh hi sahi par ek dam uche vichar ka adami rahal. Shraavan ko samajhavat: ‘Munna aaj hum bhi Radio par is ke bare mein sunali hum tohara bole ke hi rahali chalo accha ho gayil ki tohar bahuriya i baat uthayilan. Hum bhi chahat ki tu apan form bharati kardah. Munna bhejane mein kaun nookshan ba hum logan baad mein dekhab ja. Hum t tohara bolab aaj ka kaam abhi karah. Kal kaun dekhele ba ho. Ish mein tohar parivar ki bhalayi ba khash Ravi ke bhavishya ke bare mein tum logan ka poora haq banela.’

Vasudev ki baat sunkar Durga bahut prasann hoylan beta ko kaam milate hi ghar ke sabhi sadashya ka jivan thora badal jai.

CHAPTER 5

Doosare din

British Embassy and the departure

Jaise hi savera hol Shraavan sahar ke liye ravana hoyilan. Jab British Embassy pahuchat barhi bhid dekh ke ghabara gayilan. Kafi log Shraavan se pahela vahan pahooch chookal rahal apan form bharati karane ke liye. Unkar samane line mein kharā rahal Rafi chacha ke beta, Karim. Shraavan unkar dekh ke bahut khush hoyilan ki chalo unkar koi jaan pahachan mil gayil aur vo bhi unkar bachapan ka dost. Donon kafi samay tak baat chit karalan. Donon ke thora tajjub lagal ki form ek chota sa kagaj ka tukra rahal jis mein sirf apana naam, pathā, hobbies, acchi evements aur siksa ke bare mein kuch janakari likhe ki zaroori rahal. Shraavan thora pareshan rahal ki shayad unlogon ko phir se interview par bulaya na jai. Jab apan form Shri Paul Morgan ke hāth mein sompalan parhte hi Morgan Saheb unase poochat ba ‘Bansuri kab se ba javelah?’

‘ Chota se’

Vo aise hi poochalan kyon ki unkar aur unke bacche, Laura aur Rita, ko bansuri bajane aur soonane mein bahut dilchasbi rahal. Kai bar Morgan Saheb bansuri sikhane ki kausis karalan par apan kaam ki vajah se sikh na payilan. Vo chahat unki donon suputri phir se bansuri sikhiyan par ab tak ghar par aake koi accha sikhanevala naa milal rahal.

Morgan Saheb mauka se labh uthailan. Unkara pata rahal ab vo England lauthiyan t kyon na Shravan ko apan sath le jaiyan. Kis ko kahan bheja jai aur kis ko kaun si naukari mein lagaya jai sab Morgan Sahebava ke hāth mein rahal. Shravan se poochata: 'Accha itna batavah tu kaha se bansuri sikhalah?' Shravan garv se uthar devat: 'Hum pahale apan babu ji se sikhali aur baad mein lag bhag ek saal apan sangeet adhya pak-Music Master Martin Betanoven - se thora European sargam sikhane ka mauka prapt hol.' Morgan Saheb soon kar bahut prasann hoyilan aur unkara dekh ke bolalan: 'Tohar yogyata dekh ke hamara lagat tohara koi naukari sikhane mein samasya na hoy. Hum logan ke sath jane ki apan tayari karah.'

Shravan Morgan Saheb ki baat sunkar ghabara gayil: 'He Ram i ka ho gayil, itani jaladi paisa kahan se ayi, hum apan parivar ko kaise chor ke jayib. Humke Sahebava ko sach sach bole ke chahi ki hum logan ke paas ek phuthi kauri na ba videsh jaye ke. Kitani mushkil se yahan tak aane ko bhara milal ba ab utana door jane ke liye kahan se karaja uthab '

Shravan apan sar jhooka ke 'Thank You'-Danyavad- kar ke bolat: ' Saheb i sab t theek ba itani jaladi hum paisa bandobash na kar sakab. Abhi abhi toofan ke karan hamaro sara zamin gilah ho gayilaba, is saal safal barhi mushkil ba, hum sab ka jivan rookhi sookhi roti kha ke chalat ba agar thora समय देबाह t hum koi na koi upay nikalab England ke liye.'

Morgan Saheb Shravan ki sacchai sunkar unpar tarash kha ke bolat: 'Shravan Bhoopathlal tu chinata mat karah. Hum tohar

jaane ka praband jahan tak hamar taraf se hoyi hum karab. Agale sapata h, somavar ke theek dus baje, hum logan yahan se jahaz se chorab ja. Tohar passport hum log bana devab ja tu sirf apan janam partrika chor diyah hamaro secretary ke sath. Ek do kagaz par apan hastakchar laga diyah. Han, jaane se pahale photographer se milate jaiyah tohar passport ke liye ek do photo nikaliyan.'

'Ji Saheb. Par hum tohar karja kaise chookavab?'

'Pyare Shravan Bhoopathlall tohar pagar mein se thora thora paisa kat levab ja.'

Shravan Saheb ki baat sunkar unkara aisan lagal jaise ki poora bhoj halaka ho gayil. Ek barhi muskurahat ke sath jab aphis se nikalal t Karim poochat ba: 'Ka hol bhayi koi toh acchi khabar ba? Bahut dinon ke baad tohar chehara par ek moti si muskan nazar ayil ba?'

'Theek bolat havah Karim bhayi ab aisan lagat ba ki hum logan ke boore din mit jayi. Mata pita ji ki seva khoob karab. Ek chota sa majbuth ghar banavab jisse toofan bhi takaray t apane aap sharma ke sar jhookake muh morliyan. Savitri ke liye acche acche kapre aur gehene kharidab. Ravi ko na bolah unkar parvarish mein koi kami na chorab. Unkara parha likha ke daktar banavab.'

Itane mein Karim ka naam pookara gayil aur Shravan bolat ba: 'Ja bhaiya tohar bari ayil ba' aur unkara samajhvat ba: 'Theek theek se javab diyah....hum tohara bahar inatazar karab.'

Shravan khare khare kuch samay chup chap sochat sab kuch itani jaladi hogayil shayad upar vala ki meherbani ba 'Vah re prabhu tohar khel kaun taal sakat. Ab hamaro ghar valon ko bhi sambhal liyah.'

Shravan ke man mein khushi se jyada gam rahal apan parivar ko akela chor ke kaise jaiyan. 'Ka Savitri akeli ghar sambhal sakiyan?' Aise anekon prashn unkar man mein daurat rahal.

Karim jaise aphisal se bahar nikalat Shravan se gala mila ke bolat: 'Bhaiya Allah ki doova se hum bhi safal ho gaili. Ab hum ek sath safar karab ja. Chalah door desh mein hum log mil ke rahab ja.'

Shravan Karim ki baatiya sunkar unkar jaan mein ab thora jaan ayil videsh mein kisi ke sath apan dukh sukh bant sakiyan. Donon khushi khushi se ghar lauthat ba.

Jab se Shravan British Embassy ke liye ghar chorale rahalan tab se Vasudev unkar ghar lauthane ki raah dekhatlan aur prabhu se yehi vinati karat: 'He prabhu hamar munna ki raksa kariyah unkar naukari pakka kar diyah.'

Jaise pita ji ke kamre ki chaukat par Shravan apan kadam rakhalan unkar sabhi parivar ek sath ikate ho gayilan. Sab ke sab betab rahalan jaane ke ki unkar din kaise gujaral. Sabhi ko ek sath muskurate dekh kar unkar man ek dam udas ho gayil 'Kaise kahiyen ab vo sab ko chor ke videsh jaiyan.' Mata pita ji ke pav choo kar Ravi ko apan god mein baithakar hoth kamp kampate bolat: 'Savitri thora thanda pani pila dah ho.'

Savitri ko bara ajib lagal unkar pati ka chehera dekh ke: 'Kahe utara utara sa ba. zaroor koi vishesh baat jo hum se chupay chahat ba.'

Shravan jaise hi do ghuth pani pilan unkar pita ji hāth se ishara kar ke poochata: 'Beta tohar din kaise gujaral? Tohara jagah dhoondane mein koi kathinayi hoyil ka ho tohar chehera thora utaral ba?'

Pani ka gilash Savitri ke hāth mein deke bolat ba: 'Pita ji prabhu ki kripa se koi kathinayi na hol balaki sab theek bital.'

'Sab theek' sunkar Vasudev ko bara accha lagal aur unkar se koi aur prashna karatan Shravan bol uthalan: 'Pita ji, Rafi chacha ka betavah, Karim, vo bhi vahan naukari ki talash mein ayil rahal. Vasudev ko ab raha na gayil phir prasn karalan: 'Sunavah na beta vahan ka ka hoyil?'

Shravan ko baat samajh mein ayil pita ji betabh havan aur unkar ab sab kuch saaf saaf batana zaroori ba. Mata pita ke hāth jaise pakarlan unkar ankh se ansoo tapakal aur susakate huve kahane lagal: 'Ab hum aap log ko ka batayi ho, hamaro naukri pakka ho gayil ba aur hum logan agle somabar ko jahaj pakarabh ja England ke liye.' Ye sunkar ghar ke sabhi log ek dam se chauk gayil. Savitri man hi man sochane lagal: 'Itane kum samay mein kahan se paisa ka praband hoy.' Vasudev aur Durga ke dekh ke ka bolabah vo bechare ek dam hadas gayalan: 'Shravan paisa bina videsh kaise jayi.'

Vasudev beta ko naukari mil gayil ba is se aur bardiya kaun khabar ba! I mauka phir se kaha prapt hoyi? Vasudev Durga ke bula ke unkar kan mein phoos phoosavata: 'Shravan ki ma apan nak ki phooli, hāth ka kangan aur gale ka har kal sonar ke paas jaake pighala diya aur jo paisa mili sab Shravan ko de diyah. Agar zaroorie padi t sab chandi ke baratan bech diyah.'

'Hamara kahe śarmindā karat havah hum kal hi jaake paison ka praband karab.'

Savitri sas sasur ki baat sunate hi udas ho ke bolata: 'Aap log kahe itna pareshan hovat hava ho hum khood sammbral levab. Ab hum logan ke bailla kaun kaam ke rahi jab Ravi ke pita ji videsh chala jaiyan. Kal hi hum bech dalab aur agar aur paison ki zaroorat hoy t apan donon kanagan giravi rakh deb.'

Sabhi logan ki pareshani dekh ke Shravan bolat paison ki chinata karane ki koi zaroorat nahi ba: 'Sahebava hamar ticket aur kharacha sab bandobash kar dele ba. Hamar pagar mein se thora thora kar ke chooka devab. Karim bhi yehi kariyan.'

Savitri: 'Ye toh bahut acchi baat hol phir bhi thora paisa apan sath mein rakhana zaroori ba.'

'Barabar bolatavah bahu' Durga apan ghunghāth hatha ke bolata.

Doosare din bailla becha gayil aur gari imli ke per ke tale akela ek anath ke jaise paral rahal. Thora paisa jo milal Savitri bahut

sambhal ke rakhale rahal is liye koi chor ya lootera na uthaliyan.

Gaov mein khoob dhoom machal rahal Shravan aur Karim ab videshi babu kehelaiyan sabhi log bahut khush rahalan ki jab vo donon videsh se lauthiyan t vahan ke jivan ke bare mein sunaiyan aur gaov ke kisi nagri ko bhi videsh mein apan jagah banai ke koyi upay mil jayi. Vasudev ki chati garv se phoolal rahal ab unkar munna England mein jaa ke khoob paisa kamaiyan aur bara adami ban ke lauthiyan.

Shanivar ka din rahal Shravan ke angan mein halchal machal rahal. Gaov ke sabhi logan apan apan parivar ke sath Shravan ko ashirvad dene ke liye line lagayile rahalan ja.

Vasudev ka chehera dekh ke sabhi ko aisan lagat rahal jaise ki unkar jigar ka tukara ab unse bahut door chala jaiyan. Vasudev ki ankhon se ek aisi kahani dikhayi devat jaise ki aaj ke baad apan betava ki surat phir se na dikhiyan.

Soogrim aur Chandoo donon khoob taiyari ke sath apan baaja aur dholak le ke anagana mein baithhal rahal. Vo log Vasudev ko khush karane ke liye vahan par rahal. Jaise jaise sham bital taise taise Vasudev khatiya mein baithhal khoob jhoom jhoom ke apan kalakari se sab ke dil bahalailan. Vasudev itna anand uthayilan kaha na jayi. Un sab logan ke sath Ravi bhi khoob masti karalan. Bhagat dada jo kabhi ek zamane mein angresi fauj mein sipahi rahal Shravan se baat chit karane ke liye bahut utsuk rahal. Unkara England ke thand mausam ke bare mein

bahut janakari rahal. Vo na chahat Shravan England mein jaake bimari ka shikar ho jaiyan. Vo apane sath ego tokari lekar khara rahal jis mein kuch poorane chijein: coat, rusi topi aur hāth aur pair ke moje. Vo mauka paa ke jaise Shravan se millan unkarā ashiravad de ke upadesh suru karat ba: ‘Beta dekhah apan jari kabhi na bhooliyah. England mein tan man laga ke kaam kariyah. Kabhi kisi ki bahakave mein na ayah. Hamesha sochiyah tohar grihasathi jivan aur vans yahan ba. Apan burhe ma baap ki seva mein videsh se bhi koi kami na na choriyah. Daru aur nasha ki dava se door rahiyah. Kabhi kisi laraki ke jhal mein na phansiyah. Ab is burhape mein hum tohar se ka chipay. Hum videsh mein jaa ke poori tarah se bahek gayil rahali. Hum birhi, juva, daru aur bahut si ulate rasta apanayili. Hum ek dam se swarthe ho gayil rahali, hum bhool gayil rahali hamaro ek parivar ba jo hamar intazar karat rahalan ja. Aaj hum apan manmani ke parinam bhogat hay. Hamar sab logan paraya ho gayilan. Hum kitane bar phasi lagane ki kaushish karali. Hamar jaisan galati kabhi na kariyah. Ja beta hamar ashirvad tohar sang hamesha rahi. Hamar baat par gor kariyah.’

Shravan Bhagat dada ji ki baat sunkar bolalan: ‘Dada ji hum aap ko vachan devat kabhi kisi ke bahakave mein na avab ho.’

Raat dhal chukal rahal Savitri kamre mein akeli rovat rahal. Shravan ke sara saman ek chota sa petti mein pack kar ke rakh dele rahal. Shravan shakahari hone ke karan khane pine mein thora nakhara karat. Savitri na chahat ki unkar pati jahaz mein bhooka rahiyān aur bimar par jaiyan. Thora papar, bhaji aur

aam ka achar ek dibba mein sambhal ke band dele rahal. Savitri ke chehere dekh kar aisan lagat jaise Shravan ab unlogon ko hamesha hamesha ke liye chor ke chala jaiyan. Shravan Savitri ki ansoo ponch ke samajhavat ba: 'Savitri tu kahe rovat havah hum t sirf kuch din ke liye jaat hayi agar tu himmat har debah t hum kaise jiyab. Mata pita aur Ravi ki dekh bhal kaun kari? Sab ke sab ab tohar jimedari pe ba. Hamar jeev abhi tak nahi manat ba ki hum videsh mein jaake naukari karab. Sunah ho... agar tu bolabah t hum kal na jayib.'

Savitri Shravan ki baat sunkar ghabara gayil: 'Na Ravi ke pita ji ye sab t khushi ki ansoo ha. Aap hum logan ki chinta chorah hum sab sambhal levab.' Itane mein jaladi se almari khol ke ego lota mein se paise nikal ke Shravan ke hāth mein rakh ke bolat ba: 'Sambhal ke rakhiyah aaj Bhagat dada bolat rahalan jahaz mein kafi chor bhi safar kare la.'

Shravan Savitri ki aur dekh kar muskura ke bolat ba: 'Bhagat dada hamaro bhi bahut bhashan deke gayilan ba. Unkar baat mein kuch na kuch toh sacchai zaroor hoi. Hum paisa sambhal ke rakhab tu befikr raha.'

Raat poori tarah se dhal chookal rahal aur pathā hi na chalal kab murga bank delan. Sabhi ke sabhi ghar ke sadashya apane apane tayari mein lagal rahal. Vasudev ki bimari halat aur lambi safar hone ke karan Durga bandaragah {harbour} na jayi sakalan. Savitri sas sasur ko ghar mein akela na choreh chahātalan par ka kariyan bechari Ravi ki zidd ke karan unkara jana hi paral.

Ghar ke samane jab gari ki khat khat avaz sunai del tab Vasudev khushi se jhoom uthalan jaise vo hi pardesh jaiyan aur savari unkar liye bhejal gayil ba. Jor jor se chilla ke Rafi ko bulavat ba: 'Eid mubarak Rafi bhayi... zara andar avah bhayi ..sath mein Karim ko bhi lavah.'

Jab Rafi aur Karim andar Vasudev se milat ba t Vasudev hāth jor kar Rafi se itna hi nivedan karat ba: 'Shravan tohar beta saman havan accha se bandaragah tak savari kariyah.' 'Karim beta jaa apan mata pita ka naam videsh mein khoob ucha kariyah. Sab se mil jool ke rahiyah. Shravan ki dekh bhal kariyah...sunah beta ab videshva mein tohar alavah unkar kaunon bhayi na ba?'

Gari mein saman rakhane ke baad Shravan mata pita se ashirvad lene kamre mein andar ghoosat ba. Vasudev ashirvad dete vaqt bolat ba: 'Ja beta tohar safar safal hoyi. Khoob phoolo phalo doodh mein nahavo.' Jaise Shravan darvaja ki aur kadam rakhat Vasudev ki ankh mein ansoo bhar kar gire lagal. Unkara na jane kahe aisan lagat jaise apan babooa ko akhari bar ashirvad devat ba. Durga apan ankh se ansoo ponch ke Shravan ko samajhvat ba: 'Beta ab hum log char din ke mehamaan hayija.. jaladi se aiyah.. ek bar tohara dekh levab jaa t mano hum logan ki tirath yatra safal ho jayi aur jab hamar chita jalai ba t mano hamara mukti mil jayi.'

Safar kafi lamba rahal aur gari mein jab jab Ravi tang karat Shravan apan bansuri ki mithi dhvani se unkar man behelavat. Jab savari bandaragah pahoonchalan Ravi chillah chillah ke

bolata: 'Baap re baap itna bara jahaz ! Pita ji hum aap ke sath chalab hum mata ji ke sath ghar na jab.'

'Are na re beta hum ka hamesha ke liye videsh jaat hayi. Hum apan munnavah ke liye bahut jaladi lauthab aur sath mein khilona lab.' Shraavan bete ko kandhe mein baitha ke unkara idhar se udhar jhuma jhuma ke gud gudi kar ke bolata: 'Tohara I jahaz mein ka.. havai jahaz mein sher karavab.'

'Na pita ji aaj hum aap hi ke sath chalab,' ro ro ke Ravi zidd karata.

Savitri na chahatlan Shraavan ko koi pareshani hoy jaladi se Ravi ke hāth pakar ke samajhavata: 'Accha beta zidd nahi karat ba. Tohar pita ji jab lauth ke aiyān t tohara pani ke jahaz mein ka havai jahaz mein ghoomaiyan.' Ma ki baat sunkar Ravi ek dum choop ho gayil.

Ab Shraavan ke jaane ka samay ho chookal rahal. Sabhi ko pranam kar ke, Ravi ko apan sine se laga ke jahaz ki aur savadhani se siri pe pair rakh ke upar gayilan t barhi door se hāth hila hila ke 'Ram Ram' karalan.

Kuch der bad jahaz dhoovan phookat dhire- dhire samundar mein bahut door tak nikal gayil.

Jab Savitri ghar lauthalan t ghar bahut soona soona lagal. Sas sasur ko akela dekh kar raha na gayil aur ro paralan. Durga bar bar unkar se itna hi poochat rahal: 'bahu Shraavan accha se

gayilan na ho? Apan khana sath mein legal ki nahin? Udas rahal ka?’

‘Sab kuch accha se bital, han mata ji unkar chehera thora utaral utaral rahal jaise ki unkar jahaz mein jai ke man hi na karat rahal.’

Sas bahu ki batiyan sunkar Vasudev bolata: ‘Aap logan kahe khamo kham pareshan hovat havah. Suru suru mein thori pareshani t sab logan ko hovela. Shravan sher ka baccha havan vo kabhi himmat harane vala mein se na ba. Sunah raat dhal chookal ba ab aap log jaa ke aram karah.

CHAPTER 6

Jahaz (Sea journey)

Jahaz ka safar bahut kathin rahal. Karim asvast hone ke karan unkara ek dana na pachal. Unkara itani ulati lagal bechara aur bimar par gayilan. Ek rog se unkara anek rog pakar le rahal. Vo itna patla ho gayilan jaise vo kisi bhook hartal ka shikar rahal. Morgan Saheb jahaz hi mein unkar illaaj karane mein koi kami na choralan par bimari phailate gayil. Shravan unkar bahut dekh bhal karalan. Karim na chahat Shravan unki tarah rogi ho jaiyan. Unkara dekh ke ek hi baat doharavata: 'Bhaiya hum theek hayi tu apan svast par dhyan dah ab tu bhi bimar par jaibah t i jahazava mein tohar dekh bhaal kaun kari. Teen sapathe tak vo bistar par paral rahal. Ek raat vo itna bimar ho gayilan mano ab unaki sans rook jai. Daktar unkar halat dekh ke ek dam pareshan rahal aur jab kehelan unkar bachana bahut mushkil baa t Shravan ek dam ghabara ke sochata 'Agar Karim mar jaiyan t unkar janaja kaise uthi? Unkara kahan jaa ke dafana jayi?'

Karim ki sanse kabhi bhi rooknevali rahal. Unkar kant sukh gayil rahal aur bahut jor se pyas lagal rahal. Shravan ke hāth pakar ke ro ke bolat: 'Bhaiya hamara thora pani piladah.' Jaise Shravan unkara pani delan vo ek ghuth pite hi dhire- dhire Allah ka naam leke dam tor delan. Shravan ek dam akela par gayilan aur khoob chati pit pit ke rolan. Jab Karim ke sharir ek chadar mein lapet ke samundar mein phenka gayil Shravan dar ke mare apane kamre mein chipak gayilan. Vo itna ghabara

gayil agar vo bhi bimar ho jaiyan t sachmujh kaun unkar dekh bhal kari, vo na chahat unkar lash samundar mein phenka jayi.’ Shraavan Karim ki atma ki shanti ke liye poore do sapathe tak prathana karalan.’

Poore ek mahina ke baad jahaz Southhampton ke bandaragah par ake rukal. Lag bhag panch baj gayil rahal aur charon taraf andhera hi andhera choyal rahal. Mausam itna kharab rahal ki lambe lambe khambe pe latakal bijali ke bulb ki roshani kuhase ke karan dhundalasa dikhayi devat rahal. Kuch dikhayi hi na devata aage ka ho rahal ba. Shraavan nirash ho kar choop chap apan kothari pe jake baith gailan. Vo vichitr rahalan England dekhe ke.

Lag bhag cheh bajat rahal jab poori tarah jahaz bandaragah mein ake ek langar par latka ke chora gayil. Jahaz ke sabhi yatri jab ek ek kar ke utharane lagal tab Shraavan bahar bhir dekh ke bara ashcharya hoyil ‘Baap re baap! Itane log!’ Aur ankh phar ke acharaj se phir se doharavat: ‘Baap re baap! Yahan th poori duniya ikhate ho gayil ba.’ Jhat se apan tuti phuti angresi mein kisi gore nausainik se poochat ba: ‘Bhaiya ka yahi Englandva ha.’ Nausainik ko pathā rahal Shraavan pehli bar yatra karat ba aur unkar majak urake has ke javab devat ba: ‘Na re murakh ye toh sirf Southhampton bandaragah ha ye toh ek suruvat ha. Poori England dekh ba t hadas jaybah tohar patloon gila ho jayi. Jab kabhi London jayibah t tohar ankh phatte hi rah jayi.’ Shraavan ko baat samajh mein ayil jis vyangyatmak bhav se unkar sath nausainik baat karalan vo zaroor ek ghamandi kisham ke vyakti rahal. Shraavan ko thori si sharminda hoyil par

apane ap ko sambhalate huve man mein bolat ba: 'Ye toh hamar maiya ke desh na ha jahan charon n taraf pyar hi pyar basela ye toh paradesh ha hamara bach bach ke har ek kadam uthaiyeke pari.' Itane mein unaki savari aa gayil aur Morgan Saheb sab ko chor ke unkara apan sath ghar le gayilan.

CHAPTER 7

Morgan Saheb ke ghar After the death of Paul Morgan

Jab Morgan Saheb ke ghar pahuchalan t unkara kamre dekha ke bolalan: 'Aaj se yehi tohar ghar ha.' Shravan 'ghar' sunkar chaunk gayilan aur unkara apan ghar ki bahut yad satane lagal. Jaise Morgan Saheb kamre se bahar nikalan taise hi ek kursi jo khirki ke aas paas paral rahal uspar jaa ke baith ke khoob royilan. Unkara kisi cheese par dilchasabi na rahal. Burhe ma baap aur bibi baccha ki yad satai lagal. Man hi man sochat: 'Hum toh hayi pardesh mein gaova mein nikal hoyi chand. Jane kis halat mein hoy hamari jaan, ghari ghari dil poochat kab sab se phir hoyi pehachan, kaise batavab kitna dil ba pareshan.'

Shravan geheri soch mein doobal rahalan jab achanak se darvaja par khat khatahat ki avaaaz sunai del. Darvaja khol ke dekhat ba ta ek pyari si laraki chaukat par khari ba. Shravan namaste kar ke poochata: 'Aap kaun?'

Vo laraki aur koi na balki Morgan Saheb ki barhi beti, Laura, rahalan. Thori English aur thori Bhojpuri mein javab delan: 'Good Morning Mr. Shravan Bhoopathlall -Namaste Shri Shravan Bhoopathlall - I am Laura Morgan-hamar naam Laura Morgan. We are meeting for the first time, right - hum log pehali bar millat hayija- hum tohare Saheb, Paul Morgan, ki

beti. Tohara hamaro dad niche bulaile ba. Tu hamara Laura keh ke boola sakabah.’

‘Thank you madam -Daniyavad madam. Aap ja hum abhi niche avat hayi.’

Jaise Laura apan sar ghumayilan taise Shravan unkar se poochat ba: ‘Mem Sahib aap Bhojpuri kahan se sikhalah?’ Vo uthar devat ba: ‘Hum log Bihar mein thore din rahali ja.. kabhi tohar sang i baare mein khul ke baat karab.’

Shravan jab niche utharal ta mej par khana taiyar rahal aur bhojan ki khooshboo khoob phailal rahal. Morgan Saheb ke amane samane unkar donon bitiyen sath baithhal rahal. Vo log besabari se unkar sath bhojan banane ke liye inatazar karat rahal. Morgan Saheb khare ho kar anagreji mein apani bitiyen ke parichay devata: ‘Avo Shravan ye apana ghar samajhah. Hamaro bitiyen se milah –Laura aur Rita. Afsosh hamare ghar mein itna hi sadasya ba. Tohar ghar jaisan na ba jahan sab parivar ek sath rahela. Chalah kuch khalah tu zaroor bahut bhooka pyasa aur thaka hoyibah.’ Shravan ko thora ajib sa lagal ki Morgan Saheb ki dulhaniya vahan sath mein na rahal.

Shravan ko bahut bhook lagal rahal par shakahari hone ke karan sirf roti sath aloo aur gobhi khailan. Khane ke baad Shravan Morgan Saheb se prashna karat ba: ‘Kitane baje unkar uthe ke chahi aur kahan naukari lagal ba?’ Itane mein Morgan Saheb utar devat ba: ‘Vah bhayi vah tu t hamar muh ki baat chin lelah. Phir apan bitiyen ki aur dekh ke musukura ke bolata: ‘Larkiyon aaj se Shravan hum logan ko bansuri sikhaiyan.’ Shravan soch na sakat Morgan Saheb unkar England mein bansuri sikhayi ke liye boolayile havan. Vo

sochat zaroor koi aur baat ba? Ka jo Shravan soch rahat havan ye sahi ba? Ye to samay hi batai.

Morgan Saheb Shravan ko samajhayilan vo unkar ghar hi mein rahian. Unkar kaam sirf sab ko sangeet sikhana aur badale mein unkar ek sangeet adhyapak ka tankha diyan. Shravan apane aap ko bahut bhagya sali samajhalan ki unkar accha kaam mil gayil aur khane pine aur rehene ka bhi banadobast asani se ho gayil.

Morgan Saheb ki bitiyen Shravan se umar mein kafi chota rahalan. Rita khoob lamba aur moti aur dusari khub patali aur gori. Dekhane mein bahut sushil par unlogon ke charitr ke bare mein bahut logan ko pata na rahal. Bachapan mein ma kisi doosare adami ke sath bhag gayil. Sab logan Morgan Saheb ko doshi thairavat ki vo hamesha ghar se kuch jyada hi bahar kaam mein rukhatalan. Bhayi kaam hi aisa ho to bechara ka kariyan. Donon bitiyen kafi din boarding school mein parhlan. Morgan Saheb apane bitiyen se bahut pyar karat rahal. Bitiyen unkar apan bhagvan manat rahal. Shayad Morgan Saheb kabhi unlogon ko ma ka pyar bhi dene mein koi kami na chorale rahal. Unkar sirf ek hi gam khayil jaat rahal laikavan thora sudhar jaiyan t mano unkar tirth yatra safal ho jayi.

Vo isi karan ek sadharan vyakti ko apan ghar mein panah delan taki unkar bitiyen thori dusron ki sanskriti ke bare mein kuch gyan prapt kar sakiyan jis se unlogon ka jivan mein thora sudhar ayi. Morgan Saheb ye chahat ki bitiyen ko janakari hoi garibon ki zinadagi ka matalab ka ha; kaise do vakt ki roti bare mushkil se kamavelan; acche insan bane ke liye ka ka na sahelan aur kaise galat cheesein se door rahelan. Ye toh vakt

hi batai Morgan Saheb apan maksad mein kitna safalata prapt kariyan.

Morgan Saheb ko bilkul pata na rahal Shravan shakahari rahalan aur unkara sirf aloo aur gobhi khat dekh kar bara dukh lagal: 'Shravan hamara chama kariyah hamara pata na rahal ki tu shakahari havah aur tohara sirf aloo aur gobhi khayi ke paral.'

Shravan muskura ke javab devat ba: 'Saheb is mein tohar konon dosh na ba hamara toh in do sabajiyon se pet poora bhar gayil, vah khana majedar rahal. Ghar par to hum logan ek sabaji se kaam chala levat aur yahan do sabajiyon milal. Vah kitna anand ayil.'

Morgan Saheb Shravan ki baat sunkar samajh gayilan vo kitna sadharan aur adarsh inshan havan jo unkara śarmindā na kare chahalan aur isi liye unkara khusi dekhe khatir aisi mithi boli bolalan. Morgan Sahebva unkara dekh ke bolat ba: 'Tu khush t hum khush.. accha kal tu apan khud ke liye khana bana liyah.'

'Thank you- dhayavad' Shravan bolat.

Tand ka mausam rahal kafi barish giral rahal. Ghar ke samane idar udhar pokhari mein pani jama hoyil rahal jahan meindak khoob uchal uchal ke doobaki mar mar ke kud ku ke maja levatalan. Abhi sirf theek panch hi bajal rahal, sham dhal chukal rahal aur charon taraf andhera hi andhera chayil rahal. Aisan lagat jaise ghaneri raat. Sarak mein bijali ki bati dhimi dhimi jalat rahal. Ghar mein itna thand rahal sharvan ke poora sarir kamp rahal jaise unkara jor se jukaam lagal ba. Shravan apan bistar pe jaa ke jaladi se kambal lapet ke let gayilan kuch

der baad jab thori garami phookal t unkara aisan lagal jaise jaan mein phir se jaan ayil ba.

Jab Shravan ko apan ghar ki yaad ek dam sathane lagal tab jaladi se ek chitthi likhalan aur savere jaise mauka milal t Morgan Saheb se nivedan karalan unkar ghar bheje ke. Morgan Saheb thora śarmindā rahalan kafi din bit gayil rahal jab se Shravan apan ghar chorale rahal aur parivar ko ek bhi sanadesh na bhejele rahal. Lifafa apan hāth mein leke kehelan: 'Aaj hi dak ghar jaa ke bhej devab.' Sahebava ki baat sunkar shravan ke man ka bojh thora halaka sa ho gayil.

Lag bhag athava saptah chalat rahal aur Shravan ke sabhi ghar vale pareshan rahal ki 'Ka baat ba abhi tak Shravan videsh se ek sandesh na bhejele ba.' Aur jab se Rafi chacha apan ek lauvata ladala, Karim, ki mr̥tyu ke bare mein unlogan ko bata ke gayil ba tab se vo log kuch jyada pareshan rahal. Khas tor pe Vasudev. Unkar man mein boore boore khayal daurat rahal: 'Na koi chitthi na sandesh ...hamaro ladala konon bimari ka shikar hoyil ba ka? He prabhu hum dukhiyan ko kahe aur kasht devat havah. Hum logan se ab aur kuch saha na jaat ba. Ab aur kitna pariksa lebah. Daya karo bhagvan. Prabhu hum hāth jor kar aap se binati karat hamaro babooa ki rakasa kariyah.' Savitri bhi chintit rahal. Vo haroj savere uth kar Surya devata se vinati karela: 'He prabhu hamar svami ki rakasa kariya, takat diya vo svast rahiyān aur unkara Karim jaisān rog na pakari.'

Vasudev ke man mein din prati din halchal khabalal rahal. Raat ko nind na avat aur din ko chain kahan. Vo khatiya mein lete huve sirf angana ki aur dekhat rahat kab dakiya sandesh le ke aiyān.

Savitri khet se lauthat hi rahal jab achanak dakiya ghar ke angan mein apan paidal saikil ki ghanati bajake chillavat ba: 'Vasudev chacha! Vasudev chacha! dekhah videsh se koi chitthi ayil ba.'

Vasudev bimari ke karan sirf sun sakat. Khushi se pagal hoke halla karata: 'Durga dekhah dakiya baboo koi chitthi anale ba.'

'Han baboo kinakar naam ki chitthi ayil ba?'

'Chachi Vasudev Bhoopathlall'

'Accha, thora bataibah chitthi kahan se ayil ba?'

'Chachi befikr?'

'England se hamaro lagat ba...ye tohar betava bejhale ba.'

Jaise Durga apan hāth mein chitthi pakaralan Unkara aisan lagal jaise Shravan unkar samane khara ho ke unkar hāth thamale havan. Donon ankhein se ansoo tapkal jaise bin mausam mein barasat.

Durga ki halat dekh ke dakiya ko raha na gayil. Bare pyar se poochat ba: 'Chachi agar aap ki agya ho t hum chitthiya parh ke sunayi ho?'

Durga javab devat ba: 'Beta bahut dhanyavad hamaro pathohiya parhal likhal havan dekhah vo at hi ba.'

Savitri chitthi dekh kar bahut khush hoyil. Unkar sab thakavat ek hi jhatke mein choor ho gayil. Unkara pata rahal sasur ji ki

bimari Shraavan ko chinata karale ba. Savitri uthej rahal aur sasur ke kamre mein jake lifafa phar ke parhe lagal:

‘Pujaniya mata aur pita ji, meri pyari Savitri aur hamar jigar ka tukara Ravi. Aap sabhi ko sada pranaam. Yatra kathin par safal rahal. Aap logan ki yaad bahut aat ba. Hum aap logan se chama mangat hayi ki poora ek mahina safar karane mein hi lagal aur isi karan hum aap logan ko chitthi na bhej payili.

Ab aap logan ko ka bolab poora safar aap logan ki yaad mein hum khoyal rahali. Pita ji ka khayal kuch jyada hi avat ba. Savitri theek samay par pita ji ko dava dete rahiyah. Han mata ji ka khayal rakhiyah. Ravi se kahiya ki vo apan parhayi mein khas dhyan dey ke. Savitri tu bhi apan khayal rakhiyah. Hum ghar ka sara jimmedar tohar hāth mein sopale hayi. Hamara poora bishavas ba tu accha se sab kuch sambhal ba aur apan kartaviya nibhayibah.

Mana ki jahaz bahut bara rahal phir bhi hamara bahut ghabrahat si pakarle rahal jaise koi darpok logon ke safar karane valon mein se hum ek rahani. Hazaron milon ki doori tak sirf pani hi pani. Pata hi na chalat samundar jaa ke kahan ruki . Asman kabhi garaj ke itna pani barasavatlal jaise jahaz ke sath hum sab ko khaa jay. Bich samundar mein kabhi kabhi ek do jahaz nazar ayil aur vo bhi door se jaise koi kashti sahil mein doob rahal ba. Samundar aisan lagal jaise pani se bana huva ek nila bistar. Dur se jab lahar uthat t baap re baap jaise bare bare safed takiye. Akash mein chiriya ur ur ke khoob maja levat rahal. Kabhi kabhi hamara aisan lagat hum ek pinjara mein band hayi jo apan sab logan ke pyar ke liye tarashat ba. Manva aisan lagat kahe na hum bhi un chiriyon ki tarah khoole asaman mein phat se urat phirat aap logan ke paas chala jab.

Sahebava hamar khoobh khayal rakhelan. Unke ghar mein hamar nokari aur rahene ka bandobash karal gayal ba. Ab koi chinata karne ki baat na ba hum maje mein hayi. Han tankhava milate hi hum aap logan ke liye kuch paisa bhejab.

Savitri mata, pita aur Ravi ki dekh bhal khoob kariyah. Han, hum ghar jald vapas lauthab. Kabhi hamaro bhi ek chitthi bhej diyah hamaro man thora halka ho jay. Accha agya dah apan khayal rakhiya.'

Vasudev Shravan ki mithi mithi baat sunkar bahut prasann hoyilan aur unkar manva thora sthir ho gayil. Hant jor kar bolata: 'He data aap ko lakh lakh dhanyavad aap aise hi Shravan ki rakasha kariyah. Dhanya ho malik.'

Savitri bin khaye piye chitthi likhana shuru karalan. Ravi apani ma se bolat ba: 'Ma ! ma ! pita ji se boliyah hamara ego havayi jahaz bheje ke hum apan doston ke sath khelab.' Savitri has ke bolat ba: ' Are munna chota jahaz ka.... jab tohar babu ji lauthiyen t tohara ego bara.....jahaz mein videsh ghumaiyan.'

Sach?

'Han'

Ek saal bit chukal rahal. Shravan apan parivar ki dekh bhal ke liye har mahine paisa bheja karat rahal. Kabhi Morgan Saheb khud dak ghar se postal orders kharid kar apane sath ghar laya karatalan aur Shravan ko yad dilavatlan: 'Apan parivar ke yahan ye bhejana na bhooliyah.'

Savitri sas sasur ki seva aur Ravi ki parhai mein unkar sara din kat jaat rahal. Acche daktar aur davai ki asar se Vasudev ab uthna, baitna aur chalane lagal rahal. Durga kuch jyada durbal ho gayil rahal.

Morgan Saheb

Morgan Saheb Shravan ke svabhav se itna prasann rahal ki ka bolabah? Aisan lagat jaise Shravan unkar dil hi jeet lele rahal itna ki ab vo unkar apan ghar ka ek sadasiya ke darja delan aur vishavas karane lagal. Vo khush is baat pe rahalan ki jab se Shravan unke ghar mein apan kadam rakhalan tab se unkar donon betiyan ek doosare ke sath larana jhagarana bilkul band kar delan.' Parhai aur likhayi mein kuch jyada dhyan devatalan. Apane badmash doston se milana julana chor dele rahal. Shayad isliye ki har sham bhojan ke baad Shravan unlogon ko bansuri sikhavat rahal aur tuition ke bad vo itna thak jaat rahal ki path samapt karate hi donon apane apane kamre mein lauthate hi so jaatlan.

Shravan kabhi krodhit na hovatalan aur bare pyar se man laga ke shikhavat. Morgan Saheb ko Shravan ke sath baat chit karane mein behad anand avat rahal. Unkar tajjoobh hovat kaise ek hi saal ke andar vo apane guru Martin Betanoven se European sargam acchi tarah se abhiyash kar lele rahal aur England ayla bhi bahut mahine na bital rahal ki vo acchi angarezi bhi bolane lagal rahal. Morgan Saheb ko kabhi aisa lagat ki Shravan ek gunvan purush havan jo sanageet mein apan naam kamaiyan.

Ek sham Morgan Saheb Shravan ko apane kamre mein boolailan. Shravan ghabara gailan. Morgan Saheb jab unkar

dekh ke baithane ko kahalan Shravan ke donon pair kampane lagal. Shravan ke dimag mein khalbali machal rahal: ‘Sahebava kahe hamara boolaile ba?’

Morgan Saheb unkar dekh ke muskura ke bolat ba: ‘Chinata karne ki konon baat na ba hum tohara ek zaroori baat kare ke liye boolaile hayi.

‘Aram se baithah thora dhyan se suniyah beta, kuch din ke liye ek visesh kaam se hamara Africa jaike parat ba. Ab ka bolab kaam hi aisan baa t hum kaise tal sakat. Hum chahat hai ki hamar gair hajiri mein tu sara ghar aur hamar betiyan ki dekh bhal karabah. Bas aur ek binati ba aga bura na manba t jara Laura aur Rita pe kari nigarani rakhiyah. Hum nahin chahat ki vo apne dost Benjamin Smith aur Paul Julian ke sath bahar milne ki kaushish kariyan jin ke chal chalan bilkul kharab ba.’

‘Shravan ki chati khushi se uchal rahal ki Morgan Saheb unkar kaam se itna prasann ba ki bharse ke tor par Laura aur Rita ki dekh bhal ki zimmedari unkar par sonp dele rahal. Par ek baat unkar dimag mein samajh na ayil: ‘Kahe Benjamin aur Paul ko ghar mein ghushane se mana rahal.’ Shravan hichakiya ke poochat ba: ‘Saheb koi karan?’

Morgan Saheb ghoor ke bolata: ‘Kahani lambi ba... hum tohar se kabhi is ke baare mein baat karab. Hamar sar dard se phuthat ba.. accha kafi der ho chookal ba jake aram karah.’

Shravan ko thori ghabrahat hol agar Morgan Saheb videsh mein jyada din thehariyan aur agar unkar pagar vaqt pe naa mili t apan parivar ki dekh bhal kaise kariyan. Morgan Saheb

dil se saccha aur imandar insan rahal. Vo jane se pehale Laura ke Bank Account mein thora paisa jama kardele rahal aur unka samajha dele rahal ki jab tak vo videsh mein rukiyan Shraavan ko paisa Bank se nikal ke samay pe deyi ke.

‘Hum Laura ke sath paisa chorale hayi vo tohar tankhah diyan.’

Shraavan jaise chaukat ke kamre tak pahoochalan Morgan Saheb se poochat ba: ‘Saheb aap ko koi dard ki goli chahi?’

‘Na re hamar chinta mat karah.’

Jab Morgan Saheb Africa ke liye jahaz pakarlan tab se unaki tabiyat kuch jyada hi bigar gayil rahal. Poore ek mahina kisi Africa ke hospital mein unka ilaj ke liye rakha gayil jahan vo apan akhiri dam tor delan.

Morgan Saheb ki acchanak mrtyu se unaki betiyan bahut dukhit hoyilan. Shraavan ka hal mat puchah vo itna royilan jaise ki unka koi apan khoon ka rishta bichar gayil ba. Unka yakin hi na hovata itani jaladi Sahebava unka kaise chor ke chal gayil. Kabhi soch na sakat unka itna bara sadama pohoochi. Sar pakar ke bolat ba: ‘He Ram ab hamari halat ka hoyi. He prabhu hamar par thora taras kha. Hamar parivar ki kaun dasa hoyi? Hamara koi dusari jagah nokari mila dah bhagvan. Yehi hum tohar se vinati karat hayi.’

Morgan Saheb ki mrtyu unka betiyan aur Shraavan ke jivan par bahut bhari asar paral. Thore din ke baad ek vakil ghar par jab vasiyat naamah [Will] parhalan t pata chalal Morgan Saheb

apan poore hosh aur havas mein sare ke sare jayadaj apan suputri Laura ke naam kar dele rahal. Rita ka hak sirf us samay bani jab Laura jivit na rahiyan. Agar kabhi Laura vivah kar liyan t adha hissa ke hakdar unkar pati hoyan.

Shravan ek dam ashacharia rahal ki Morgan Saheb apan ek aulad ko kahe thukarailan jab donon bahin ek sath ek hi chat ke tale bare pyar se bara hoyilan. Shravan ki bas ki baat na rahal vakil sab se inke bare mein pooch tajh kare ke. Vo man hi man sochat zaroor koi vajah hoyi. Vakt hi batalai.

Vakil ki batein sunkar Laura ko bahut dukh hol ki unaki bahin ko jayadaj mein se kuch na diya gayil. I t saaf rahal ki unkar bedakhil kara gayil ba. Apan bahin ki halat dekh ke bolat ba: 'Meri pyari ladali bahin tu na ghabara hum tohar sath hayi, tohar rakasa karab. Vakil Saheb ki baton se tu na ho udas, ye t sirf ek sarkari asul ha. Hum logan ek dali ke phool hayija hum kabhi na bicharaba ja chahe andhi ho ya toofan.'

Rita bahin ki batein sunkar bhavuk hoke unkar hāth surah ke bolata: 'Bahin jo huva so accha huva. Is mein dad ka koi dosh na ba. Hamara tohar se koi sikava gila na ba. Ye sab upar vala ka khela jo karbah vohi bhoge ke pari.' Itna bol ke Laura se gale mila ke kamre se bahar nikalat ba.

Shravan ke alava Laura aur Rita ke dekh bhal kare ke aur koi na rahal. Pita ke achanak mrtyu se donon behan ek dam tut gayil rahal. Donon bahin mein phir se kafi jhagara suru hoyil. Kabhi itna dar lagat apas mein koi hadsa na ho jay phir pachatava pari.

Morgan Saheb apan bachavan ke liye vasiyat namah [Will] mein kafi paisa chorale rahal. Unkar mrtyu ke baad Laura aur Rita donon apan apan manmani karane lagalan. Paisa pani ki tarah bahane lagalan. Kabhi disco ta kabhi daru ke adda. Shraavan in sab cheesein se bahut nafarat karat rahalan aur jab jab unlogan ko samajhayi ki kaushish karalan donon hamesha unkar baat ansuni kar devatlan. Kabhi kabhi donon bahinein Shraavan ka upadesh ko ek majak bana ke rakh devathlan. Shraavan ko bahut gussa avat par jiv jant ke chup chap sheh levatlan. Barhi chalaki se Shraavan ko apan sath ghizat rahalja taki unlogan khoob der tak apan mauj masti kariyan aur ghar lautate samay agar andheri raat mein koi chor ya daku unlogan par hamla ya apaharan kare ki kaushish kariyan t Shraavan unlogan se lipatliyan.

Shraavan ego imandar insan rahalan jo kabhi kisi ke bahakave mein na avatalan. Vo apan sanskriti se bahut prem karatlal. Hamesa apan dhoti kurata ki poshak mein dikhayi devat rahal. Jab jab Laura aur Rita ke sath bahar nikalat rahal vo befikra apan vohi Hindustani vastr pahan kar nikalatlal. Laura aur Rita ab apane aap ko bahut uche gharane ke log manane lagalanja. Itna ke jaise donon bahin mein ghamanadi ki charbi charal ba. Shraavan se door door rahatlanja aur unkar parichay kabhi apane doston ke sath na karavatlan. Jab jab kisi party mein unkara sath lejaat rahalanja har var kisi na kisi bahane se unkara bahar ya gari mein baithane ko majaboor karat ralanja. Kitane var akele kisi ek chote se kamre mein band rahatalan. Shayad yehi ek vajah rahal ki kabhi unlogan ke dost Shraavan ke bare mein kuch poochtach na karatlan.

Ik raat Shraavan ko disco mein jane se mana rahal aur unkara bahut der tak bahar gari mein Laura aur Rita ka intazar kare ke

paral. Raat bhayanak rahal aur barf itna giral rahal ki gari poori tarah se barf ki chadar mein lipatal rahal. Shravan ko thand tharthara ke chorle rahal jaise unkara koi mirgi ki daura paral ba. Laura jab andar se bahar birhi jalane nikalal rahal Shravan ki halat dekh kar bahut ghabara jaat ba. Laura apan apan birhi phenk ke Shravan ko apan sath andar le jaat ba.

Jaise Shravan andar ghusath ba sabhi ke sabhi log ankh phar phar ke unkara dekhe lagalan jaise koi paraya [alien] asaman se tapak ke aa giral ba. Sab logan unkar Hinduthani poshak mein dekh ke unkar khoob hansi uravat ba. Sab log ek ek kar ke unkar se puchat ba: 'He dost khoob saj dhaj ke ayil havah koi Fancy Dress party mein jaat havah ka, hum sab ko bhi sath le chalah bhayi?' Shravan bare nadani se sab ko javab devat ba: 'Are na re bhaiya ye toh hum logan ke rastriya vastr ha i hamar pooravaj ki shan ha, isi mein basal ba hum Bihari ki pahachan i vastr se jural ba hamar mitti ki jaan i garv se pahan ke karila inkar pura samman. Itane mein Benjamin jo as paas mein kharā rahal chillah chillah ke bolat ba: 'Chalo doston ek peg ho jayi 'Bihari Babu' ke naam.' Shravan muskura ke bolat ba: 'Are vah kyon na? Khoob hamar naam ka dhvaja uravah I hamara tohar logan se ka matalab...tu ka janabah is poshak ka vardan.'

Rita sharab ke nashe mein choor Shravan se bolat ba: 'Hello Biharee Baabu tu bahut kanpat havah avah hum logan ke sath ego jam uthavah tohar thand ek chuthaki mein bhaag jayi. Laura Shravan ko jor jor se kanpathe dekhkar thora aur ghabara gayil aur vo bhi bahin ki baat dohorailan: 'Bihari Babu, tu hamar pyala mein se ek ghuth pilah tohar sharir mein garmi phook deyi.

Shravan apan zinadagi mein kabhi daru par hāth na lagaile rahal. Hamesha sabhi se yehi kaha karat rahalan: ‘Daru kabhi na piyah ho, kisi ko bhi na diyah ho, bhale insan ko boora banavat, sharab kharab ba ho, ghar se beghar karat bhayi, apano mein phut dalat bhayi, sukh shanti sab chin levat bhayi, dukh hi dukh devat bhayi.’

Shravan Bhagat chacha ki batiyan na bhoalayile rahal: ‘Chacha daru pite pite apan ghar, bibi aur bacche sabh kuch kho dele rahal. Baad mein jivan se tang hoke gale mein phasi dalane ki kaushish bhi karale rahal.’

Shayad ye bhi ik karan rahal Shravan sharab se behad nafarat karat rahal aur unse dosti kisi kimat pe na kare chahatlan.

Par thand unkara itna jor se pakarale rahal unkara ab aur kuch saha na jaat rahal. Laura aur Rita apan zidd pe atal rahalan ki jab tak party chali tab tak vo log vahan n par rookiyan. Shravan pareshan rahal: ‘Ab hamara kuch ho jayi t hamar gharvalan kaise jivan. Ab hamara Laura ki baat manna hi pari.’

Laura jo bagal mein hi khari rahal unkara bula ke thora sharma ke bolat ba: ‘Accha bolate havah t ek ghuth pilah dah.’ Laura jhat se apan hāth se unkar hont pe kanch ka pyala rakh ke chillailan: ‘Cheers ye jam Biharee Baabu ke naam .. amar rahi aaj ki sham se tohar naam.’ Ab ka hoyi anjam baad mein dekhba ja parinam ?

Thori der baad Shravan nashe mein choor ho ke anap sanap bakane lagal. Laura ki samajh mein ayil Shravan ke sar par nasha chad gayil ba unkara jald se jald ghar lejaike chahi.

Kuch dinon ke baad Shravan bin rukavat se aur acchi English bole lagal. Dhire dhire daru ke sath birhi bhi jalay ke shuru karalan. Disco aur party ka nasha unkar sar par char gayil rahal. Apan poorakhon ki poshak phenk ke ab suit boot pahane lagal. Shravan ego English gentleman ban gayil rahal. Jahan jahan jaat rahal vahan larkiyon unkar picha na chorat rahal. Laura aur Rita apan sathiyon se ab unkar khoob parichay karavat rahal. Shravan apane aap ko hero samajhane lagane rahal. Dhoti ka naam apan kan se soone hi na chahat, ab roti hāth se kahan khayi jayil ab chakoo aur kanta istamal karat. Apan paisa pani ki tarah kharcha karat rahal. Aeso aram ki zinadagi mein itna ho gayil choor apan poore parivar ki chinta man se hata dele rahal. Shravan ek nayi zindagi jiye lagal shakahari se ashakahari ban gayil.

Laura aur Rita Shravan ko bare pyar se 'Bihari Babu' chilla chilla kar pookara karat rahalan aur Shravan hans hans ke maja levat rahal. In logan ke sath ek aisi dosti ban gayil kaha na jayi. Ghar mein badmasi phir se suru ho gal. Rita apane doston Benjamin aur Paul ke sath ghar mein raat raat bhar khub masti karat rahal. Haroj ghar mein charas, ganja aur nashe ki dava bahar se kharid ke laya jaat rahal. Shravan nashe ki goli bhi lena shuru kar dele rahal.

Laura ko thora ghabrahat hovat agar unaki bahin pahale jaisan phir se nashe ka shikar na hojayan jinake karan unlogon ko boarding school se nikala gayal rahal. Ab kis ke sahare unkar se baat kariyan jab Shravan bhi is boori adat mein phash gayil ba. Laura apan bahin ko is musibaat se kaise nikaliyan? Unkara koi rasta na soojhata. Bahin ki chinata andar hi andar ek dayan ki tarah khayil jaat rahal.

Sukravar ka din rahal jab Laura bank gayilan thora paisa nikalane t unkar dimag mein ego dhakka lagal. Kahe? Pita ji ke sab bachaye huve paise pani ki tarah bahal jaat rahal aur agar is rafatar se paisa kharcha hote jayi t vo log than than gopal ho jaiyan. Sar hilake, ego lamba sans leke apane aap ko sambhalte huve man hi man mein bolat: 'Ab hamara kuch na kuch kare ke chahi.

Ghar lautate hi Laura Shravan pe chilla chilla ke poochat a:
'Rita kahan ba?'

'Malkin hamaro pathā na'

'Pata na, t ghar pe baithhal ka makkhi marat rahalah Bihari Babu'

'Naa malkin hum t khana banavat rahani aur Rita Mem apane doston ke sath kab se bahar nikalal havan.'

'Tohara pata ba kab ghar lauthiyan?'

'Na'

Laura ko apane aap par thora shramindagi ayil Shravan par na jane kahe apan gussa utharalan.

Baad mein jab Rita ghar par ayilan Shravan unkara batlailan:
'Laura Mem thora gusse mein aaj ba vo aap ke bare mein poochat rahalan.'

‘Abhi hum unkar se baat karila.’

Rita Laura ke kamre mein jab jaise jaat t dekhata ba unaki bahin apan chashma laga ke chup chap kuch parhat ba. Dhimi si avaz deke bolat ba: ‘Didi Biharee Baabu hamara bolalan aap hamar bare mein poochat rahalah.’

‘Han baith tohar se ego bahut zaroori baat kare ke ba.’

‘Accha kaun si baat ? Hum se koi galati ho gayil ba ka?’

‘Kaun si galati?’

‘Tu khud hi janat havah apan bachpana chorah ab sudhar ja na ta hum sab sarak par aa jab ja.’

‘Hamara aap ki baat samajh mein na avat ba zara khul ke batavah.’

‘Ab hum in sab befoozal cheesein par paisa bahana band karab ja. Baat samajh mein ayil ki na. Benjamin aur Paul ko yahan aane se mana kariyah.’

‘Aap ka bole chahat havah?’

‘Aaj se, hum i gharava mein, nasha ki dava band. Agar tu hamari baat na manabah t hum tohara ghar se bahar nikal devab.. samajhi.’

‘Aap kahe hamar par itna gussa nikalat havah. Aap bhi is mein shamil havah. Hamara kahe akeli doshi theheravat havah.’

‘Bas aaj ke liye itna hi kafi ba. Hum is vishay par is se jyada aur bahas na karab. Hamar faisala atal ba.... aur koi mai ke lal badal na sakiyan...baat tohar bheja mein ghusal ki na?’

Rita muh latarka ke sidhe apane kamre mein ghush gayil. Rita chote hi se bara nat khat rahal. Apan pita aur bahin ka pyar se bigaral rahal. Unkara bilkool accha na lagal jab Laura unse uchi avaz mein dantlan ta.

Rita ko kisi ka paravah na rahal. Vo kabhi kisi ki baat na sunat khas tor pe Laura ki. Laura hamesha apan bahin ki bhalai chahatalan par unki batein mein chahe kitani bhi sacchayi rahal Rita hamesha unkar baat tal devatalan aur kabhi na sochatalan ki ye sab unkar fayade ke liye kaha jaat rahal. Apan kamre mein jaate hi, khirki band karake, muh phoolake khub jor jor se Radio sune lagal.

Rita apan manmani kuch jyada hi kare lagal rahal. Haroj sharab ke nashe mein ek hāth mein birhi aur doosare hāth mein daru ki bottle jhoolaite ghar lauthatlan. Unaki dasa dekh ke Shravan ko grna avat rahal. Kayi bar Shravan unkar se baat karane ki kaushish karale rahalan magar sab bekar. Ek bar jab unkara phir se samajhane ka prayash karalan: ‘Choti memsab aap abhi javan havah birhi aur sharab tohara sobha na devala, hum aap se vinati karat hayi aap in sab boori adat ko chor debah t behetar ba. Hamar kahane ka matalab i ba ki isse dur rahabah ta accha ba, is mein konon fayada na ba balaki sirf nookasan ba.’ Rita Shravan ki bhashan sunkar hans ke akar ke

unkara muh tor javab dele rahalan: 'Lo dekhah! ulata chor kotval ko kaise dantat ba. Oi!Hello! ...Bihari Babu, kahe na tu shisha mein apan muh dekhat havah, aaj se tu bhi kahe na daru, birhi, charas aur nashili dava chod devat havah. Apan updesh kisi aur ko sunaiyah yahan tohar dal na gali... kal ka paradesi hamara samajhayi ki ka accha aur ka bura ba aur hamara ka kareke chahi.. i t had se jyada apan sima par karatavah.' Rita bigadal rahalan par sach bole mein kabhi na hichkichtalan. Aj vo phir se sach hi bollan ki jab jab Laura ghar se bahar kaam pe jatlan Shravan Rita aur unkar doston ke sath mil kar khoob sharab piyat aur nashili dava ke sath joova bhi khelatalan. Shravan jo hamesha se path poojan mein lipt rahalan is gandagi mein phas ke, sab kuch bhoola ke, joovariyan ke sang vo bhi joovari ban gayil rahal. Apan poori kaamayi mauj masti mein lutha devatalan.

Rita ki baat sunkar Shravan ko aisan thes pahuchal unkar poori bolati hi band ho gayil. Sharminada se lachar aur bebas hokar na jane kahan apan muh choopaiyan. Unkara aisan lagat jaise ki choooloo bhar pani mein doob ke mar jaiyan. Unkara ek hi upay sujhat rahal vahan se bas ek kutta ke jaise apan doom daba ke chup chap nikale ke. Shravan ka jivan poora barbad hogayil rahal. Ab vo is lajjacchak (dal dal) jivan se kabhi chuthakara payi sakiyan ki na ye toh vaqt hi batai.

Shravan kafi gusse mein rahal. Apne kamre mein baithal apane aap se bolata: 'Rita memsab aaj kuch jyada hi bak bak kar deleba. Itna ghor apman hum sapane mein bhi na soche sakate. Yahan par hamar mol ego kutta se kaam na ba.'

Shravan pareshan rahal. Apan dimag kuch der tak chalailan t unkar khopariya mein samajh ayil: 'Ab vo yahan dher din tak

na rook sakiyan aur apan jane ki taiyari kare ke chahi?' Ye toh sab theek ba par Shravan jaiyan t kahan jab unkar jeb mein ek phuthi kauri na ba?

Doosre din jab Laura Shravan ko rasō'ī mein chai banate dekhelan th unkar utara utara chehara dekh ke samajh gayilan ki Shravan zaroor kissi baat se khush na ba. Barhi narmi se pesha avat aur pyar se nichī avaz mein poochat ba: 'He Biharee Baabu aaj tohar chehare par itani udasi kahe ba? Accha tohara hum se koi shikava gila ba ka ho..?'

Shravan dhimi avaz mein uthtar devat: 'Memsab aap se hamara koi shikayat na ba.'

'Koi to baat ba ...hamara aisan lagat ki Rita tohara kuch bolle ba?'

Laura ko sab pata rahal kahe Shravan apan muh giraille rahal. Rita hamesha kisina kisi ko kuch na kuch bolat karat rahal. Laura man hi man muskuravat aur phir bolat: 'Rita ki bachpana abhi tak na gayil ba...hamesha kisi na kisi baat pe aape se bahar hoja la.'

Jaise rasō'ī se nikalat sar ghooma ke Shravan se binati karata: 'Biharee Baabu agar hum logan tohara anjane mein kuch bol dele hayi jaa t hum logan ko apan samajh ke maaf kar diyah.'

Laura ki mithi batiyan soon kar Shravan sochat: 'Jab yahan sab kuch accha khasa chalat ba, khana khoob milat ba, koi kast na ba.....hamara aisan lagat ba ki upar vala Laura ko pari ke roop mein bhejele ba hamara manayi ke ... dhanya ho prabhu! agar

yehi tohar marji... .. chalah hum apan boriya bistar phir se yahi par bicha devat hayi.....'

Rita apane doston, Benjamin aur Pau,l ke chakkar mein poori tarah se phas gayil rahal. Rita din prati din nashe mein choor itna ki apan hosh na sambhal sakatalan. Apan parhai mein bilkul dilachasabi na rakhatalan. Unkar laparavahi ke karan university dhamakiyan de chookal rahal agar phir se apan pariksa mein asafal rahiyen t unkar university se hamesha hamesha ke liye nikal diya jayi.

Rita ko in sab dhamakiyon se koi farakh na parat.. par Laura ko unkar bhavishya ke bare mein bahut chinta rahal. Vo apan choti bahin ki boori adat dekh kar pehle hi se behad pareshan rahal aur upar se university ki chitthi parh kar ek dam tut gayil rahal. Laura bhi Rita ko kitane bar dara chookal rahal agar parhai mein dhyan na diyan ta unkar ghar se vo bhi nikal diyan. Laura phir se Rita ko ghar se bahar nikalane ko sochale rahal par choti bahin ke pyar ke age har bar mar kha jaat rahal. Kaise bolian? Kaise samajhayan? Unkar dimag se koi upay hi na soojhatalan? Vo apan ladali bahin ko khona na chahatalan. Unkar pata rahal ki ek bar vo ghar choriyan ta vo sidhe narak ki aur barate jaiyan. Unkar man mein ek dar sa rahal vo phir se na vohi javab diyan: 'Koi baat na.... hum Benjamin ke yahan chali jab. unkar dil aur ghar bara ba hamara panah diyan.'

Laura ke paas koi chara na bacchal rahal siva Rita ko phir se pyar se samajhaike. Par jab tak koi upay nikaliyan tab tak Rita ki boori adat aur bigadte gayil.

kuch din ke baad .

Ek raat Laura kuch apne doston ke sath film dekhne bahar gayil rahal. Shravan Rita ke dekh bhal ke liye ghar hi par rukul rahal. Shravan thora thaka rahal aur apne kamre mein maje se gehari nind mein sovat rahalan jab ek ajib si mehek unakar kamre tak pahuchal jo unkar nind poori tarah se ura dele rahal. Jaise kuch jalat rahal. Unkar dimag mein ayil 'Kahin kamre mein aag lagal ba ka?' Shravan ek dam ghabara ke idhar-udhar pata lagai ke kaushish karlan. Par jab unkar kamre mein kuch dikhayi na del t vo jaladi se bahar nikhal ke galiyara mein ake khara ho gayilan. Achanack se jab dhoovan ki dhar unkar ankh aur nak tak pahuchal vo ek dam tajjoobh ho gayilan: 'Baap re ba p! I t Rita ke kamre se avat ba. Baap re! I ka hovat ba! Daravajake chote chote jhed se bhi dhoovan rail gari ki engine ki tarah kahe nikalat ba? Zaroor kuch garbar ba.'

Jab daravaja khol ke dekhata baat Shravan ek dam chakit ho jaat havan. Poore ke poore kamre dhoovan mein doobal rahal jaise tava par se roti gir ke aag mein jal ke koyla ho gayil ba. Shravan apna zindagi mein aisan dhoovan kabhi na dekhale rahal. Shravan ko thora ajib lagal. Khopariya khazava ke bolat ba: 'I kaisan dhoovan na aag na chinagari?' Jab thora age barat baat aur ghabara jaat ba. 'Baap re baap yahan I sab ka hovat ba?' Kamre ke ek kone mein Rita nashili dava ka injection laga rahatlan aur doosre kone mein Benjamin aur Paul bari-bari khoob ganja phookat bal. Rita ki halat dekh ke Shravan ko bara gussa ayil par unkar hāth banadhā rahal. Shravan Rita se phir apna muh lagay ke uchit na samajhalan. I t sahi sochalan. Ab

baat karane se kaun matalab jab vo khud is kichar mein shamil rahalan. Kitane bar vo unlogan ke sath mil kar aise hi dam marale rahalan. Ab unkar dilva mein kaahe aag lagat ba? Ab kaise mana kariyan?

Ye sab dekh ke Shravan ko itna śarmindā ayil ki unkar matha se pani choovelagal. Besabari se Laura ki rah dekhe lagalan. Jaise Laura ghar ke darvaja khollan Shravan Rita ki shikayat karalan ta Laura apane aap par bahut gussa karalan aur doshi theharailan: ‘Agar aaj hum apan bahin aur unkar ghatiya doston ke sath mil kar daru aur charas na piti th ye din dekhane ko na parat. I hamar galati ha ki hum unlogan ko chuth deni ab hamara bhoge ke padat ba.’

Phir bhi bahin ki raksa ke liye apan kartavya sochalan. Rita ke kamre khol ke chillah chillah ke bolat ba: ‘Rita i sab ka hovatt ba... i kamre mein ka chalat ba? Ab hum aur bardash na kar sakat hayi. I hamar hukum ha tu apan doston abhi ke abhi yahan se dafa karah aur kabhi apan manhus sakhal leke phir se dobara na ayan. Agar kabhi idar- udar ghar ke aas paas apan manhus surat ya mardanagi dikhayi ke kaushish kariyan th hamar se boora aur koi na hoyi. Han, agar zaroorat padi t hum unlogan ko banadook se ura devab.’

Rita ko apne jigri doston Benjamin aur Paul ke samane bahin ki batiyan itani karvi lagal ki śarmindāgi se pani pani ho gayill. Unkara poora yakin rahal unkar bezati Shravan ke kahane par hi hol ba. Rita ko Shravan par itna gusasa ayil jaise jite ji unkar pran nikal ke phenk diyan. Rita apan khopari chalailan mauka

milate hi Shraavan ko ek aisan sabak sikhaiyan ki unkar nana aur nani yaad aa jaiyan aur din mein tare nazar ay.

Attempted Suicide – Atma Hatya

Jaise Benjamin aur Paul kamre se bahar nikallan Rita apan sab khirki khol ke jor se Radio chalailan. Pehle se jo nasha ki dava apan alamari mein choopake rakhale rahalan ek hi jhatke mein lil lelan aur kuch der baad zamin par behosh ho ke gir gailan.

Unkar sharir ek dam ghongha jaisan thanda ho gayil rahal jaise ki unkar bachane ki koi ummid na rahal. Kisi ko kuch pata kahan Rita kaun halat mein rahal. Laura ke sar mein pehle hi se bahut dard rahal vo thori der ke liye apan kamre mein bati bhujha ke, shanti se aram kare chahat rahal. Radio ki uchi dhvani Laura ko bilkool saha na gayil. Laura hāth mein pani liye jab Rita ke kamre mein ghooshalan t sab khirkiyan khoolal rahal jor jor se parade urat rahal aur thand hava bahat rahal. Laura tand kamre ko dekh kar unkar bahut gussa ayil aur chilla chilla ke bolat ba: ‘Rita kahan havah...kahan havah? Ab to apan Radio ki avaz thori dhimi karah bahin...tohar bheja mein bhusa bharal ba ka? Bahari ho gayil havah ka? Baap re baap! Itna thand! Apan khirki thora band karah.. nankhare chorah... gusasa thook dah.’

Jab Rita chup hi rahal Laura ghabara ke kamre mein bijali jalailan. Rita ko zamin par behosh paral dekh kar unkar hāth se kach ka pyala chuth ke zamin pe gir ke chur chur ho gayil jaise unkar jaan nikal gal. Bahin ki boori halat dekh kar unkar aisan

lagal Rita shayad kuch jyada daru pile ba. Par jab nashe ki khali botal aas paas paral dekhalan t unkara baat samajh mein ayil Rita gusse mein khudkushi karane ki kaushish karale ba. Jor jor se halla karat ba: 'Biharee Baabu gajab ho gayil ba ho jaladi se ambulance bulavah...he bhagvan hamar bahin ko koi bachavah.. .Biharee Baabu ambulance ko jaladi se telephone karah...'

Shravan Rita ko zamin par tarapate dekh kar man hi man soche laglan: 'Rita Mem bahut taklif mein havan unkar bachana mushkil lagat ba vo ab kisi vaqt bhagvan ke pyari ho jaiyan.'

Rita ko jab hospital mein dakhil kara gayil t poore ek mahina bistar mein paral rahalan. Bare se bare daktar unkar illaaj karalan phir bhi unkar halat itna nazook rahal ki unkar bachane ki ummid bahut kaam dikhayi devatalal. Shravan upar vala se bahut prathana karalan ki vo jald se jald theek ho jaiyan.

Laura poori tarah se tut gayil rahal. Unkar halat dekh ke pata lag jaat rahal ki vo apan bahin se kitna pyar karat rahal aur unkara kisi kimat pe khona na chahatalan. Apan bahin ki seva kare ke liye thore din kaam par na gailan. Shravan Rita ki seva mein apan hāth khoob batailan. Rita jab apan hosh sambhalan tab unkara bahut paschatapa hoyil. Shravan se maa fi manglan aur dhire dhire unkara Shravan se pyar bhi hone lagal. Shravan ko pata rahal ki Rita unko tahe dil se pana chahatalan phir bhi unkar taraf koi boori nazar se kabhi na dekhele rahal. Rita ab thora sudhar gayil rahalan. Par kab tak?

Durghatna- Accident

Laura Rita ke bare mein kabhi soch soch kar ghabara jatlan. Bar bar apne aap ko doshi theharan rahal ki shayad unhi ki kathor vani ke karan Rita khudkushi karane par majabhoor ho gayil rahal. Ek din jab vo giraja ghar se apan makan lauthatlan t na jane phir kaun si aisi soch mein khoyal rahal ki unkara pata hi na chalal kab bich sarak mein chal utar gayil aur ek motar gari ke niche aa gayil. Gari ik sukha patta ke jaise ura deyal aur zamin par behosh paral dikhayi delan. Durghatna itani bhari rahal ka bolba! Unkar dayan hant tut gayil rahal, donon pair puri tarah se zakhmi dikhayi devat rahal aur phuthal sar se khoon pani ki tarah dhara dhar bah rahatlal. Laura ko jab Operation Theatre mein laya gayil t pata chalal ki unkar blood group ke match Blood Bank me na rahal. Doktor log pareshan rahal ki agar khoon ka praband na hoyi t Laura coma mein chali jayan phir unkar bachnaa mushkil ho jayi. Ek hi ummid baki rahal shayad Rita ke khoon bahin ke khoon se mili. Par jab laboratory se report ayil ki donon bahin ke khoon ek hi jaisan na ba tab pareshani aur bar gayil. Shravan apan Mem Sahib ki jaan bachane ke liye apan jaan dene ko taiyar rahal aur apan khoon dene mein bilkul na hichaklan. Shravan ki maharbani se Laura ki jaan khatre se bahar ayil. Baad mein jab Laura ko doktor aur nurse se pata chalan ki Shravan unkar seva ke liye hospital mein kitne din tak vahan ruka rahal aur unhi ke sahayta se unkar jan bachal ba t Laura prasann ho ke hāth pakar ke bolata: ‘Biharee Baabu tu kitna mahān havah hum tohar karja janam janam tak na chukayi sakab.’

‘I t hamar farz rahal apan Memsahab ki seva kare ke.’

Rita bahin ki boori zakhmi halat dekh ke apane aap ko na sambhal saklan. Gam bhoolane ke liye phir se apani poorani gandhi adat apan doston ke sath chaloo karalan.

Laura ko jab Rita ke bare mein pata chalal t unkar dil par bara sadama pahoochal. Jaise ki is duniya mein ab unkar koi sahara hi na ba. Vo phir se itani bimar par gailan jaise ab konon bhi ilaj ka asar asafal rahi. Shravan Laura ki halat dekh kar unpar taras khatalan aur unki seva mein poori mehanat lagailan. Itna ki unkar nahavata, dhovatata, kapare pehanavata, bal banavata, khilavata aur pilavata.

Bare se bare daktar se unkar ilaj karvailan aur jab paison ki kami hoyil tab apan tankhava lena hi band kar dele rahal. Shravan barhi śarmindā rahal ki unkar paas ek phuti kauri na rahal apan parivar ke dekh bhal ke liye. 'Kaun halat mein vo log hoyan.' Ye soch soch ke kabhi itna ghabarat rahal ki unkar sar mein dard ho jaat rahal. Laura kabhi Shravan se prashn na karale rahalan kahe vo khud apan maraji se tankhava lena hi chor dele rahal. Laura ko pata na rahal ki Shravan shadi sudha rahal aur unkar unkar age piche parivar ki zimmedari rahal. Shayad kabhi puch tach ki kaushish hi na karle rahal.

Shravan bahut pareshan rahalan paisa kahan se kamaiyan. Unkar paas koi chara na rahal bas ek doosari nokari ke shiva. Ek do bar ghar chorane ki kaushish bhi karale rahal par sab bekar. Shayad Laura ki bimari unkar hamesha rokle rahal. Ek din Shravan baith ke khoob khopariya chalailan: 'Ab yahan chorab t ... kahan jab? Kaun muh se jab? Apan parivar ka samana kaise karab? Gaov valan ka boliyan? Hum ek majak ban ke reh jab? Yahan t accha khasa chalat ba, muft khana,

pehne ke barhiya kapra, sone ke liye bistar, mash, machli, daru sab ba, ka i sab chor ke phir narak ki i zindagi bitab jahan ek roti mushkil se milela?’

Apane bite huve din yaad kar ke bahut ghabarat aur apane aap ko samajhavat: ‘Jo hoyi so dekha jayi, vo apani zinadagi se khush ba hum apani zinadagi se khush. Ab hamara unlogan se ka lena dena. Paisa bacha hi kahan chitthi ke liye.’

Dhire- dhire Laura ko Shravan se pyar hogayil. Shravan unkar bahut izzat karatlan. Laura dekhane mein chahe ek pari jaisan rahal Shravan unkara bhi kabhi boori nazar se na dekhle rahal balaki hamesha apan dil mein malkin ka daraja dele rahal.

Rita phir se dusron ke bahekave mein aa ke apan manmani shuroo karalal. Ghar mein doston ki kami na rahal. Jab dekbah t koi na koi ghar mein ata jata rahal jaise un logon ke ma baap ke ghar ha. Rita Shravan ko apan nokar bana ke rakhale rahal. Laura Rita ke vyavahar se bahut naraj rahal. Kitani bar unkara phir samajhay ki koshish karalan apan parhai mein dhyan deyeke par har bar unkar baat ansuni kar det rahal.

CHAPTER 8

Dus sal baad

Poore dus sal bitgayil rahal Rita vaise ke vaise hi rahalan, nashe mein hamesha choor. Kayi bar chori ke ilzam mein pulis chauki mein raat bhi kat chukal rahal. Jab Rita ko pata chalal Laura aur Shravan ek dushare se pyar karat ba aur donon shadi ki taiyari mein lagal havan t unkar khopariya kuch jyada chalane lagal: 'Agar Laura Shravan se shadi kar liyan t unkar jayadaj mein se ek phuthi kauri naa mili.' Ye sab soch ke Rita bahut pareshan ho jatlan aur unkar dil ke dharakan kuch jyada dhak dhak karatlal ye soch ke 'paisa bina unkar kaise guzara hoyi. Sharab aur nashe ki goli kaise kharidiyan.' Har roj ki ghabrahat se bachane ke liye unkar man mein ganda vichar paida hol: 'Kyon na apan dost Benjamin se kuch salah masaura kariyan shayad koi upai bataiyan.' Rita ki baat sunkar Benjamin kuch jyada pareshan ho gayil. Ab vo bhi sochane lagal agar paisa rook jayi t muft kaa khana dana adi chaupath ho jayi. Benjamin barhi chalaki se apan dimag larailan aur Rita ke dekh ke hans ke bolata: 'I kaun si bari baat ba, koi pahar tore ke ba ka. Ek chutki mein kaam va ho jay.' Rita ko unkar baat samajh mein na ayil: 'Tohar kahane ka matalabh zara khul ke samajhavah.' Benjamin mauke se labh uthakar Rita ke kan mein apan chal phoosphoosat ba.'

Rita Benjamin ki baat sunate hi itna ghabhara jaat ba ki unkar hāth ke sab romanch khara ho jaat ba, mathe se tap tap pasina chuve lagal jaise ab kisi vaqt ek maum ki tarah pighal jaiyan. Benjamin ko pata rahal Rita unkar baat se poori sahmat na rahal. Benjamin unkar kaan phir se bharalan aur bahut sochane ke baad Rita majbhoor hoke unkar salah ko uchit

samajhat ba aur bolata ki mauka milate hi vo apan chal chalaiyan. Ab in donon kaun si chal kheliyan i t hum logan ko sabr kare ke padr...samay hi batai?

Rita apan bahin ke sath mil jool ke rehene lagal. Unkar sab baat mane lagal. Shravan ko kabhi ek pal sochane hi na delan ki vo bhi unkar se pyar karat ba par kabhi bolane ki himmat paida na hoyil. Haroj nashe mein choor t furasat kahan? Rita bahin ki shadi se khush na rahal par ka kariyan apan svast ke liye jab tak ki vo apan chal mein kamiyab na hoiyan tab tak Laura ke sath jhuth muth bahin ke pyar ka khel khelate rahal. Jab dekhawah t Rita Laura ke sang vivah ke bare mein baat karat ba- vivah mein kaun kaun log ko nyovta bhejiyan, kaun si dulhan ki jori banvaiyan aur kaun si giraja ghar mein unkar shadi ki rasm jyada sobha deyi?

Shravan Laura ke pyar mein itna mast kaha na jayi. Vo haroj Laura se poochata kaun si jagah pe unlogan ki vivah hoyi. Vivah ki khushi mein man itna machlal rahal ki jaise peheli bar dulaha baniyan. Laura ko apan nazar se ek minute hathane na devat rahal jaise Laila Majnu. Ek din Laura kuch kaam se bandal rahal aur ghar aane mein deri kar dele rahal. Shravan unkar pratiksha mein ek dam bechain rahal. Rita se bar bar poochat Laura ghar kab aiyen aur vo hans hans ke ek hi javab devat: 'Bihari Babul itna bechain kahe hovat havah. Hiranaja se kuch jyada uthavala hovat ha ho. Laura ko thora apan jivan jiye dah ho? Biharee Baabu tohara pyar ka matalab kahan se ayi. Soonah jab tak pyar mein thora na tarapbah t maja kahan se ayi. Saccha pyar mein jitna tarpbah utana hi maja avela.'

‘Sach ?’

Rita unkara ghoor ke phir se doharavata: ‘Biharee Baabu abhi tarapan kahan dekhale havah.’

I ka bolat ba? Sochane ki baat ba. Kya Shravan Rita ki baton ka matalabh samajh payan?

Pyar mein pagal, Shravan Rita ki baton ko nazar andaz karat aur ek tarapte majnu ki tarah baith ke gavata:

‘Hamar phool kahan re hamar pyar kahan re hamar Laura kahan re hamar pyar kahan re.

Chori kar ke hamar dilava ab kahan Chup gayile ho laila tohare bina hamar dilava adhura.

Tohare karan mai baap chor li tohare karan sau dukh saheli banake majnu dar dar phiru.

Tori mori bane rahi jori sunale au bake gori pyar hamara sadiyan poorana.

Jaise gana ke anantim antara samapt karalan taise hi Laura ghar mein pravesch hoyilan. Shravan daur ke poochat ba: ‘Laura Mem aaj itani der kaise ho gayil ho? Sab theek ba na?’

Laura hans ke javab devata: ‘Biharee Baabu sab theek ba. Tu kahe khamokham pareshan hovat havah. thohar liye ek khush khabari ba.’

' Khush khabari! Accha sunavah t!'

' Vivah ki poori taiyari ho gayil ba.'

'Sach'

'Han agale mahina bis tarik theek teen baje do paher Saint Paul Cathedral mein hum logan ki vivah hoy. Ab se tu apan taiyari karah. Han ab tu Biharee Baabu se Bihari Saheb banbah aaj se hamara sirf Laura kar ke pookariyah.'

Shravan khushi se pagal ho ke jhath se bol uthat ba: 'Tu kitani acchi havah kafi thak gayal havah thora coffee ya juice ka praband kari?'

'Tu hamar khayal bahut rakhelah. Hamara bahut jor se bhook lagal ba. Han coffee baad mein piyab Rita ke sath.'

'Han bilkul...chalah khana taiyar ba.'

Khane ke baad jab Rita ko pata chalal ki vivah bahut nazadik baa t jhat se koi bahana banake muh latakaye vahan se nikal padlan.

CHAPTER 9

Vasudev

Dus sal se jyada bit gayil rahal. Ravi ki parhai mein Savitri apan poori mehanat ki kamayi laga dele rahal. Ravi ek mehanati laraka rahal aur parhai mein bahut dhyan devat rahal. Itna ki vo vidvatta prapt karalan England mein daktar ki parhai kare ke liye. Ek taraf Savitri ke man na lagat rahal ki unkar munna England jaiyan jahan se unkar pati phir se kabhi lauth ke na ayilan. Vo na chahatlan Ravi unlogan se apan rishta nata toriyan. Par doosari taraf vo apane aap ko samjhane ki kaushish mein rahal: 'Chalah unkar pati ka pata laga sakhiyan. Kaun si halat mein hoyan. Isi bahane Ravi ko unkar pita ji se mulakat bhi ho jay.

Vasudev Savitri ko sakshat Devi manat rahal isliye ki vo unlogan aur Ravi ki dekh bhal mein apan poori javani gavan dele rahal aur unki mehanat se shayad Ravi Shravan se mil paiyan. Vo hamesha prathana karat ki agale janam mein Savitri unkar beti baniyan aur har sas sasur ko Savitri jaisan bahu mili.

Vasudev khet mein akela ganne ke bich bo rahatalal jab door se unkar ek bhir ki avaz sunai del: 'Ram naam sathya he... Ram naam sathya he... Ram naam sathya he...' halan ki vo chashma bina door tak dekhe na sakat rahalan jaladi se apan chashma poch ke pehan ke dekhat t unke dost Hariya ke beta, Luchuman, aage aage safed vastr pehane huve apane pita ke sandook kandhe par utha ke jaat rahal ba. Vasudev door hi se hāth jor kar Hariya ki atama ki shanti ke liye prathana karat ba

aur Luchuman ko ashirvad devat ba: ‘Bhagvan tohar bhala kariyan.’ Itane mein unkar ankh mein ansoo bhar ayil. zamin pe baith ke asaman ki aur kuch samay tak takat rahalan. Urati chiriyon ko dekh ke man hi man mein bhunbhunavata: ‘Vah re prabhu tohar lila barhi nyari ba. Kahe hum logan ko in urate huve chiriyon ke jaise pankh na delah hum ur ke apan Shravan ke yahan jayati vo hamar sahara banat, apan hāth se hamaro chita jalavat aur hamar atama ko shanti pahunchavat.’

Vasudev kuch thaka huva sa dikhayi devat rahal aur jaise apan gari lad ke khet se nikalat hi rahalan t dekhata ba dakiya paidal unki taraf avat ba. Vasudev unkar dekha ke thora sa ascharya hol 'baat ka ba? Bechara paidal chalat havan? Unkar bicycle kahan ba?' Vasudev jab apan khopariya phir chalaile tab unkar man mein khayal ayil shayad unkar bicycle koi chor utha ke le gayil hoyi. Vasudev ko raha na gayil aur poochat ba: ‘Dak babu aaj paidal kaise tohar Raleigh bicycleva kahan ba ho?’ Dakiya ke chehera uthara uthara sa rahal phir bhi muskura ke javab devat ba: ‘Namasakar dada ji, ab hum tohara ka bolab ho na jane kaun hamari bicycleva utha ke legayil ba ho.’

Vasudev ka shak sahi nikalal. Unkar hāth pakar ke bolat ba: ‘Dak babu police mein jaa ke report likha diyah. Hum apan taraf se pata lagane ki poori kaushish karab.’

‘Bahut dhanyavad dada ji. Ram Ram ab hum chalat hayi.’

Kafi salon se Vasudev dakiya se ek hi prasana puchat ayil ba: ‘Hamaro naam koi chitthi ayilaba bhaiya?’

Dakiya ko thora ajib sa lagal: 'Ka baat ba aaj dada ji unkar se apan naam ki chitthi ke bare mein kuch na puChalan.?' Mamala ka ba! Unkar se raha na gayil: 'Dada ji videsh se betava se baat chit hol ki na ho.'

Vasudev nirash hokar uthar delan: 'Nay babu. 'Chalo aaj bhi na koi chitthi na sandesh phir kabhi.'

Dakiya unkara udash dekh kar bolat ba: 'Dada ji agar aap ki agya ho to tohar betava ke yahan ek chitthi likh ke bhej deyi.'

'Tohar barhi meherbani hogi babu, par abhi hamaro paas paisa na ba dak ke liye... jeb mein ek phuthi kauri na ba bhaiya.' 'Dada ji kahe hamara itna sharminada karat havah ho.'

'Accha bolate havah t likhah par Shravan betava ka pata hamaro kahan ba'

'Hum pata karleb'

Dadkiya apan bora mein se ek kalam aur panna khinchalak aur zamin par thas ke baith ke likhana shuru karalan:

'Priya beta namaste

Prabhu ki kripa se ab tak sab theek chalat ba sirf tohar kami ba. Tohar se ek hi shikayat ba beta dhyan se vichar kariyah.

Chor ke jab gayile videsh va ho kahe ab chitthiya na likhale ho.

Khet mein jamal ba ganna panjhi khojaat ba dana

Chug na jaye har ek dana panjhi pinjara tor aana.

Phika phika sara jaha soona tohari sajani ke angana

Ank ka kajra na beh jaye aake laga de mathe pe bindiya

Tohari maiya rovela raat raat na sovela

Man pyari maiya ki mithi batiya laut aaja apan deshava.

Tohare pita ji

Vasudev

Jab chitthi England pahuchal th Rita ke hant mein lagal vo dhire se khol ke parh ke phir se lifafa saresh se jor ke darvajake chaukat par phenk delan. Jab chitthi Laura ke hāth mein paral t Shravan ko jake de ke poochat ba: 'Chitthi kaun bhejele ba?' Th Shravan javab devat ba unkar kisi dost bhejale ba. Shravan ko pata rahal kaun chitthi bhejale ba. Kamre mein jate hi lifafa dekh ke barhi chalaki se phar ke phenk devat isliye ki Laura ko pata na chali vo abhi tak shadi suda havan aur unkar ego beta bhi ba.

Vivah ki poori taiyari lag bhag ho chukal rahal aur Laura uthej rahal kab dulahan baniyan. Durbhagya se Laura phir se bimar gir parlan... unkar sharir mein achanak se dard ka hamla hol ki vo nind ki goli khane pe majaboor ho gayilan. Itna ki baad mein unkar liye goli ek avashakta ban gayil. Laura din prati din durbal dikhayi devatalan. Rita ko bahin ki dard saha na jaat rahal. Unkar pareshani aur bargal rahal jab Laura ke man

khane par se bikul uth gayil rahal. Laura ki halat dekh kar Shravan ek dam dukhi rahal.

Rita bahin ki boori halath dhekh kar aur pareshan ho gail rahal aur shravan se baat baat mein bolath ba: 'Ham logan ko koyi naya upay soche ke avasyakta ba jis ke sahare Laura ke svasth me asar pari.' Shravan kuch der ke liye chup rahal aur jab unkara yaad ayil th Rita ko samjhailan garam dhooth thabiyath ke liye labhdhayak ha aur jithana pibah utna vo sharir ke kanta ko majabuth kare la khas kar ke jo log gathiya bimari ke shikar havanja...Rita memsahib kyon na hum laura mem ko thora garam dhudh deke kaushish kari ja.' Rita Shravan ki batein sunkar bahut prasann hoke bolalan: 'Han kyon nahi. Hum thohar baat se sahamath hay sirf ek garbar ba ho Laura dhooth bilkul na pasand karelan ab hum unkara kaise samajhavab. Agar koi dhushara upay hoyi th bathavah.'

Shravan phir soch ke javab dhevath ba: 'Rita mem hamar mata ji hamara hamesha dhooth me haldi ubal ke dhevath rahal ki hamar sharir majabuthh banal rahi. Hamara bhi dhooth se gryna at rahal phir baad me accha lagane lagal. Kyon na hum laura mem ko bhi thora dhooth ubal ke un kara piyay ki kaushish karijah.'

Rita Shravan ki rai se sahamat rahalan: 'bahut accha'

Sham hone se pahale hi Shravan doodh mein haldi mila ke ubal ke rakh dele rahal.'

Raat ke theek ath bajal rahal jab Rita Laura ke kamre mein doodh leke gayilan th vo doodh ka pyala dekh ke dur hi se mana kar delan. Par jab Rita unkara samajhailan ki doodh ubal ke anale ba tab thori nakhara karane ke baad jiv jant ke pilan. Uske baad haroj bin sankoch nind ki goli ke sath piye lagalan. Donon bahin mein phir se bara prem bar gal. Itna ki Rita Laura ke dil jeet lele rahal. Laura unpar phir se bharosa kare lagal.

CHAPTER 10
Hatya-Murder

Ek raat Laura ke sar mein dard itna phuthal ki unkara bilkul baradash ke bahar rahal. Vo vyakul raha. Jab dard barta gayil aur baad mein raha na gayil thab Rita se ek dard ki goli lane ko kahalan. Rita mauke ka phayada utha ke zahar ki goli pani mein mila ke Shravan ke kamre ki taraf baralan aur ja kar jor jor se unkar daravaja khat khatailan. Jab Shravan daravaja khol ke dekhat baa t Rita ke hāth mein ek pyala ba, unkar bal se pani tapak rahal aur unkar sharir ek toliye se lapetal rahal. Rita barhi chalaki se unkara phusala ke ulu banake dil jeet levat ba: 'Mere pyare jija ji hamari bahinya aaj k uch Khaile na pile ba, unkar sar mein bahut dard hol ba, kab se dard ki goli mangale ba par hum nahat rahani, tohar barhi kripa hoyi agar jake unkara ye pani de debah t. I paniya mein glucose ba unkar svasth ke liye zaroo ba. Han boliya hum apan bal sukha ke thori der mein garam dhoodh ke sath dard ki goli le ke pahunchab.'

'Bahut theek Rita memsab jaise aap bolat havah.'

'Bahut acche, thori der mein hum ayate hayi.'

Laura jaise pani pilan vo thori der baad so gailan. Rita barhi savadhani se apan chal sanchalan karlan. Thori der baad vo phir se Shravan ke kamre ka daravaja thokalan aur Shravan se poochat ba: 'Aho Biharee Baabu Laura ki tabiyat kaise ba?' Shravan javab devat ba: 'Hum t sirf pani deke vahan se nikal gayli... hamaro kuch kaam rahal.. aram karat hoyan.'

‘Abhi tak hamar bal sukhal na ba kahe na tu jake unkar phir se dekh levat havah. Agar unkar kuch chahi th hamara ake boliyah hum unkar seva karab.’

‘Bahut acche’

Jab Shravan Laura ke kamre ki daravaja kholat th na jane kahe unkar chaukat se aur aage barane ka man hi na rahal. Jab ki Shravan us kamre mein kitane bar aya jaya karale ba. Kamre mein sanata choyal rahal aur bijali bhujhal rahal. Sab khirkhiyan khulal rahal. Kamre ek chiriya ghar se kum na dhikhayi det rahal. Ek do kabutar kamre ko ego khule maidan banaile rahal. Dekh bah t idar se udar apan apan pankh pasaar pasaar ke ek kone se doosare kone tak khoob phoor phoor kar ke urat phirat rahal jaise upar se koi sandesh leke ayil ba.

Shravan hans ke man hi man bolat ba: ‘Vah bhayi vah aaj t khub nind mein havah. Pari jaisan tohar svagat hovat ba. Dekhah khabutar tohara kaise dekh dekh ke machal machal ke guthargu guthargu karat ba. Sach mano toh hamara tohari nind se bahut jalan hovat ba. Hamara kahe tohar jaisan nind na avela?’

Laura Laura kar ke chillat ba: ‘Ab t hum se thori baat karah ho. Ghora bech ke so gayil havah ka?’ Shravan apne aap ko samajhavat ba: ‘Shayad bechari kaam se bahut thakal ba isiliye unkar sar mein dard ho gayilba; shayad hamar se naraz ba!’ Laura ko manane ke liye phir se halla karata: ‘Meri jaan ab t

gussa thuk dah ho agar hum se koi anajane mein galati ho gayil ba t hamara maaf kar dah?’

Shravan apan premi ko khona nahin chahatalan. Akhir ab jaiyan t kaha jaiyan? Unkar bistar ke nikat ja kar bati jalake dekhata ba Laura ego masoom pari jaisan apan hāth jor ke aur ankh band kar ke chup chap so rahal ba. Shravan unkar bayi ankh se bal hata ke jor se halla karat ba: ‘Bahut nakhare karat havah ho ab apan nashili ankh kholah.’ Jab vo phir na uthalan t unkar gud gudi kar ke hansa ke jagai ki kaushish karat ba. Jab unkar sab tarike nakaam rahal tab Shravan ek dam ghabara jaat ba. Unkar hila hila ke jagane ki kaushish karat ba.

Shravan ko pata na rahal Laura bhagvan ko pyari ho gayil ba. Ghabara ke jor jor se chillana suru karelan: ‘Koi hamar Laura ke ake jagavah! Koi hamar Laura ke ake jagavah! He bhagvan!.. He bhagvan! I Ka anarth ho gayil ho...koi ake inakar ankh kholah ho hum unkar se baat karab.’

Rita apan chal mein kamiyaab rahal. Shravan ki tarapti chikh sunkar daurat avat. Jaise Laura ke dekhalan: ‘He ma! Hamar bahin ko ka ho gayil ba,’ bol ke jhat se unkar nas chu ke, Shravan ki taraf dekh ke, apan magarmach ki ansoo gira ke, chati thok thok ke, jor jor se halla halla kar ke bolat ba: ‘Ab hamar didi is duniya mein na ba. He Jesus ab hamara ka hoyi. Ab kis ke sahare hum jiyab. He Lord ab hamara bhi is duniya se utha lah...’

Rita ko rote dekh kar Shravan ko raha na gayil unkar hāth pakar ke ro ke bolata: 'Rita memsab I ka ho gayil ho hamar jaan chala gayil ho? Par honi ko kaun tal sakela. Kuch der baad Shravan apne aap ko sambhalte huve aur Rita ko samjhay ki kaushish karat ba: 'Memsahib upar vale ki marji kab kis ko apan yahan bula liyan. Ab jab tak zinadagi ba tab tak ro ro ke kate ke pari. Memsahib apane aap ko sambhalah robah th phir se bimar ho jaibah. Hum aap ki dekh bhal ke liye hayi.' Rita gusse mein akar apan asali roop dekhavat ba aur Shravan par chillat ba: 'Biharee Baabu tu hamar didi ke khooni havah, tu hi jaan boojh ke unkar jaan lele havah.'

Shravan Rita ki baat sunkar khoob gussa karat ba: 'Memsab aap kahe anap sanap bolate jaat havah. Hamara kahe doshi theheravat havah, kahe hamar ghor apman karatavah? Hum Laura ki hatya kaise karab jab hum unkar se pyar karat hay. Hamar par jhoota arop mat lagavah.'

Rita phir jor jor se unpar tut parat ba: 'Biharee Baabu tu hi hamari bahin ke katil havah hum jaanat tu kaun maqsad se itane din hum logan ke tukre par palate rahalah.'

Rita ki baat sunkar Shravan aape se bahar ho ke unkar gala pakar ke dhamaki devat ba: 'Memsab hamara sab kuch pata ba aap hamar sang ka khel khelat rahalah, pani mein zeher milake ab ilzam hamar par thokkat havah. Abhi hamar matha ghum jayi t aap ka khoon pi jayib. Choorel dayan. Aap kahe i sab karalah apani khushi ke liye ya to kisi ke dabav mein aake.

Par hamara poora vishvash ba ki tohar dimag koi aur chatale ba.'

Rita gusse mein akar bolat ba: 'Tu apan gussa kisi aur ko jake dikhaiyah.' Phir se chilla kar gussa mein dohoravata: 'Apan hāth hamar gala mein se hatavah.. na t'

'Na t ka kar bah?'

'Tohari bibi vidhva ho jayi, baccha anath aur bure ma baap jite ji mar jaiyan.'

Itna sunkar Shraavan chauk jaat ba. Jhat se gale mein se hāth hata kar nichhi avaz mein ascharya se poochat ba: 'Aap ko kaise maloom hum shadi sudha hayi aur ek baccha bhi ba. Kaun si jasoosi karatlah ki hamar piche itna paral rahalah?'

Rita apan dant piske akar ke bolat ba: 'Hamara sab kuch pata ba tu hum logan ki jayadaj harapane mein paral havah.'

'Memsab bhagvan shakashi ba hum logan chahe kitane bhi garib hayija jis thali mein hum khat us thali mein ched na karat hayija. Hum kisi ki burayi na karat chahe log hamar kitani hasi uravat ba. Katil aap havah hum na, jo apan bhalai ke liye apan bahin ko jite ji maar deyil vo aadami na balaki saitan ha. Upar vala sab dekhat kaun katil... ab hamaro bheja mein baat samajh aayil ba kahe kuch mahine se hamaro ghar se konon chitthi naa milal.... aur jab milal bhi ta lifafa khoolal rahal.'

Rita muskura ke bolat: 'Vah kya dimag lagailah'

Shravan phir gussa ho kar: 'Ye toh tohar gandi chal rahal hum logan ko ek doosare se alag kareke. Ab baat samajh mein ayil aap kahe i sab karalah ya to aap ko hum logan ka pyar dekha na gayil ya to aap hamara pave na sakalah? Hamara poora vishvash ba ki aap kisi ke bahakave mein aake apan bahin ki jaan le lelah.'

Rita apane aap ko doshi na theharate huve akarat ba: 'Ye toh tohar veham ha hum apan bahin ki jaan kahe levab... tohara kari se kari saja dilavavab.' Itane hi keh kar Rita police ko phone lagavat ba.

Jab police janch partal karlah ta Shravan ko apan sath Police chauki le gailan jahan par unkara khoon ke ilzam mein giraftar kara gayil. Besahara Shravan jail mein akela band ghari ghari sochat: 'He prabhu hamar par taras kha kaun hamara ake is jhuthe ilzam se bachaiyan? Kaun hamara zamanat par ab aake choorai? Yahan na koi apana ba jo hamar dukh samajhiyan aur is dal dal se ake bachaiyan. He prabhu hamara maaf karah. Ab hamara ehasas ayil ba apanon se bichar ke hum kitani barhi galati karale hayi.

'He prabhu jin ko diya sahara vo ho gayilan paraya,

Jin ko apana banaya vo dokhe baaj katil teheraya,

Jo hamara bhoole se kabhi na banaya paraya hum unlogan ko thukaraya,

Jan dekar jo sikhaya parhaya jite ji hum ne use maar dala.

He prabhu hum toh he paradesh mein desh mein rovat hoyi
humri jaan kuch to karah ehsan.

Tohare bina na hovat sham na nikalat chand aake chamaka de
hamar logan ka jahan.

Kaun hal mein hoyi hamaro kheti makan kitna ucha ho gayil
hoyi hamar sanatan.

Mata pita hoyi pareshan sunkar hamar par katil karnaam,

Eso aram se fursat kahan prabhu ka naam;

Sara jivan nyojhavar karani nashe aur do behnon ka naam.

Sapane mein banaya moti ka makan ankh khulal t dekha
murada samasan.

Hum se huvi nadan vivah karake banab kapatan;

Pyar ke chakkar mein bhooli apan pehachan;

Dekar balidan bhogat parat ba anjaam suli pe latakal ba jaan;

He dayavan dedo aisan vardan bhogat na pare jhuthhe ilazam

Phir hoyi hamar pehechan badnaam na hoyi Shravan ka naam.

Rita se larayi kar ke Shravan apan pairon mein kulhari marle
rahalan. Rita apan poori kaushish mein rahalan Shravan ko kari
se kari saja mili.

Rita apan maqsad mein पूरी तरह से कामयाब रहल। कुछ दिन बाद जब मुकदमा शुरू होल त जूठी गवाही के सहारे श्रवण को अपराधी ठाहराया गयल और कर्तव्य के इलाज में उनका उमर कैद की सजा सुनायगयल।

श्रवण पूरा के पूरा तुल गयल रहल। इस बात की चर्चा पूरी दुनिया में फाँसगयल रहल जब उनका परिवार तक पहुँचल त उनकी माँ जो कुछ समय से बीमार रहल सुनते ही अpan दम तोड़ल। Vasudev को भी ये बर्दाश न होल और बेटा की परेशानी उनका खीँते गयल की वो फिर से बीमार पड़ गयल। मरने से पहले Savitri और Ravi को अpan पास बुलाके उनलोग के समने भगवान से वीनती कराल: 'हे प्रभु हमारा श्रवण को माफ कर दीय। शायद वो किसी के बहकवे में आके अpan मर गया होल और अब उनका सजा भोगे के परत बा। हमारा नसीब में कहीं लिखल बा की श्रवण अpan कंधे में हमारा उठाके अन्तिम संस्कार करीय।' फिर अखरी संस खीँचते Ravi के हाँथ पकड़के बोलत बा: 'Ravi मुन्ना तोहर पिता जी को चाहे अपराधी ठाहराया गयल बा, पर हमारा दिलवा अब तक ना मरत बा की वो किसी की जान ले सकीय, चाहे कुछ भी होय तोहरा मुँका मिले त उनका से मिलीय, हम सब का प्रणाम करीय और जहाँ तक सब त उनका सेवा करीय। एक आँचे बिहारी की अलद की तरह अpan कर्तव्य निभायीय.'

'जरूर ददा जी.'

CHAPTER 11

England

Ravi ab kafi samajhadar ho gayil rahal aur University of Manchester Medical School mein daktar ki parhayi karat rahalan. Unkar sath gaov ke aur tin mitr vahin University mein alag alag degree ki parhayi karat rahal: Rasul Khan, Jacques Benoit, Andy Luc Cheng. Bahut bar apan pita ji se milane ki kaushish karalan par naa mil pailan vo is liye ki Shravan ka dimagi halat kuch nazukh ho gayil rahal itna ki kisi ko thik se pehachan nahin sakat rahal. Unkara kuch din manas hospital mein ilaaj ke liye rakha gayil rahal jahan din bhar ek chote se kamre mein band rahatlan. Jab aisan sadma kisi ko lagi t unkar dimag par chot ke alava ka lagi?

Savitri bahut majdoori karte karte rogi ho gayil rahal. Ravi apani ma ko dekhene ko aur un ki seva karane ke liye unkar manava bahut tarsat rahal. Kab jald se se jald daktar ban ke ghar lauthiyan. Par unkar kismat mein kahan? Ek sham jab Savitri apan angan saaf karatlal t unkara dil ka दौरा paral aur pran jhat se nikal gayil. Ravi ko jab khabar milal t bahut dookhi hoylan. Par dada ji ka upadesh na bhoolayile rahal. Bas vo kisi ke behakave mein na avatalan. Jyadatar parhai likhai mein dhyan devatalan.

Bahut kaushish ke baad jab Ravi ko apane pita se milane ka mauka milal t unkar pita ji bahut bimar rahal bas kuch hi dinon ke mehaman. Jab Ravi jake apan parichay delan t Shravan ki ankhon mein lor bhar ayil aur Ravi ko dekh kar khushi se pagal

ho gailan. Par jab sunalan ki Ravi ab daktar baniyan unkar man ek dam halaka ho jaat ba ki beta apan dada, dadi ji aur ma ki poori jimmedari liyan. Par jab pata chalal ki ab unkar sab parivar- mata pita aur patni- parlok sidhar chookal havan jaa t vo ek dam se tut jaat ba. Sochat shayad unhi ki vajah se aaj unkar beta ke age piche ab koi nay ba. Unkara aisan sadma pahoochal ki apan hāth jor kar Ravi se chama magane mein majboor ho jaat ba. Utara huva chehera kanpkanpate huve honth hila hila ke bolat ba: 'Beta hum apan parivar ki maut ke jimmedar hayi ab tu jo sajah soonaiba hum bhoge ke taiyar hayi.' Sar jhookake doharavata: 'Beta hum śarmindā hayi i sab jo hoyil ba. Hum koi gunah na karale hayi. Ye sab hamar kiye ka phal ha. Ab hum aur kuch din ka mehaman hayi aur phir upar jaa ke hum sab logan se apan paap ki prayashchit karab. Tohar se ek binati ba hum ta apan mata pita ko na tirth yatra par le jayi sakani na ta analog ki arthi uthaili...' Phir ek geheri sans leke aage bolata: 'Hum tohar se prathana karat hai hamar arthi apan hāth se kariyah hamara mukti mil jayi. Mano Shravan Kumar apan pita ko tirth yatra kariyan, hamar atma ko shanti mil jayi, hum samajhab ki tu hamara maaf kar dele hava.'

Ravi pita ki dasha dekh kar suska ke bolat ba: 'Pita ji aap kahe aise bol ke hamara śarmindā karat hava ho? Ye toh hum logan ki sanskar ha. Har beta ka farz banela apan pita ki seva unaki akhari sans tak kare ke.'

Shravan ko Ravi ki baat soonkar unkar man ko itna shanti pahuchal kaha na jayi aur jha pak ke Ravi se gale mil ke

ashirvad deke bolata: 'Ja beta khoob parhai mein dhyan diyah aur accha daktar baniyah.'

Do mahine baad jab Shravan ki mr̥tyu hoyil Ravi pita ki lash apane doston ke sath kandhe pe utha kar shamshan bhoomi tak 'Ram naam sathya he, Ram naam sathya he' bhajate gayilan aur poori riti aur rivaj anushar apan hāth se chita jalake antim kriya karam karalan. Pita ki atma ki shanti ke liye rakh ek dibba mein sambhal ke apne sath le gailan. Jab baad mein apan desh lauthalan t rakh vohi jagah jake chitalan jahan unkar sab poorkhon ke anatim sanskar kiya gayil rahal. Ravi khush rahalan ki dada ji ke diye huve vachan nibhay sakalan.

Ravi ko jab Shravan ki kahani yad ayil t apane aap ko bare bhag shali samajhlan ki 'chalah Shravan ko t apane bridh ma baap ki anatim kriya karam karane ka bhagya prapt na hoyil par bhagvan ki kriya hol ki hamara vo mauka milal. Aaj hamar man se bhojh halaka ho gayil aisan lagat ba jaise sab Bihari ek sath phir se jur gayilan ba.'



This book embraces a unique story of a man with strong religious and ancestral cultural beliefs. The expectation is high. Will his son keep up to his promises or will he shatter his dreams?

श्रवण तो अपन पास ही हवन जो हम लोगन की सेवा करियन-
shraavan to apan paas hi havan jo ham logan ki seva karyan.

This book pays special tributes to the Bhojpuri language of Mauritius and is written in the same genre as once spoken by the settlers -indentured labourers- in Mauritius. It is available in Devanagri and Roman scripts with an aim to spread the joy and love of reading Bhojpuri across the globe.

Lock Sohodeb, also known as Sashi, was born in the exotic island of Mauritius and has lived most of his adult life in the United Kingdom. But his love for his mother tongue, Bhojpuri, has continued to strengthen. He has lived a varied career as a singer, composer, lecturer and freelance journalist before becoming a dedicated writer. Lock embarked on the literary scenes in 2009. He is also the author of 'The Impact of Mauritian Bhojpuri Traditions in Britain and Europe' - 2010 and 'A Diamond for Jasmine' - 2011 – Rossendale Publisher, UK.

ISBN 99949-0-013-8

